उर्दू शिक्षा में छात्राध्यापन के निर्देशों का संकलन और उसकी प्रभावकारिता का मूल्यांकन

भोपाल विश्वविद्यालय भोपाल

की

शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा

के

आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तुत

लघुशोध प्रबन्ध

1977

— निर्देशक —

डा० आर०पी० कथूरिया

रीडर

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

भोपाल - 462 013

— प्रस्तुतकर्ता —

मो० एस० शकील

एम० एड० छात्र

No. F. RCE/BPL/ Telephone No. ; 3135, 3253

REGIONAL COLLEGE OF EDUCATION
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, श्यामलागिरि, भोपाल-४६२-०१३ (म प्र)
(National Council of Educational Research and Training)
Shyamla Hills, BHOPAL-462-013 (M. P)

Date______________197

** प्रमाण - पत्र **

प्रमाणित किया जाता है कि श्री व्ही0 एस0 चंदेल ने क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भोपाल से " इन्टर्नशिप में छात्राध्यापन के निर्देशन का अध्ययन और उसकी प्रभावक्षमता का मूल्यांकन" नामक लघुशोध प्रबन्ध मेरे निर्देशन में विधिवत् पूरा किया है । यह उनका मौलिक कार्य है, जिसे पूर्ण निष्ठा से किया गया है ।

यह लघु शोध प्रबन्ध " भोपाल विश्वविद्यालय, भोपाल " की सन् 1977 की ' शिक्षा ' में स्नातकोत्तर उपाधि परीक्षा की आंशिक सम्पूर्ति हेतु सक्षम एवं उपयुक्त है ।

(डा0 आर0पी0 कथुरिया)
रीडर, शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल - 13.

दिनांक : 29/7/77

—— अपनी बात ——

प्रस्तुत [illegible] प्रबन्ध " [illegible] में [illegible] के निर्धारण का [illegible] और उनकी प्रभावकारिता के [illegible] से सम्बन्धित है ।" [illegible] इस अनुसंधान प्रबन्ध के [illegible] [illegible] में [illegible] के लिये मैं अपनी निर्देशिका [illegible] डा० [illegible] का आभारी हूँ । जिनके [illegible] मार्गदर्शन [illegible] मैं यह कार्य [illegible] कर पाया हूँ । [illegible] मुझे अपनी [illegible] व्यवहार द्वारा [illegible] मेरी कठिनाइयों का निराकरण करती रहीं तथा प्रगति की ओर अग्रसर करती रहीं ।

सुश्री [illegible], डा० [illegible], श्री [illegible] गुप्ता एवं [illegible] के प्रति भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर उचित [illegible] सुझाव देकर शोध कार्य को पूर्ण करने में सहयोग दिया ।

भाई श्री [illegible] एवं [illegible] नहीं मुझे [illegible] मिलता तो मैं यह कार्य पूर्ण नहीं कर पाता । [illegible] कार्य की पूर्ति में उन्होंने मेरी जो [illegible] सहायता की उसके लिये मैं उनका [illegible] रहूँगा ।

मेरे [illegible], भाई श्री [illegible] तथा [illegible] का भी मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ जिनके द्वारा इस कार्य को पूर्ण में [illegible] सहयोग मिला । अन्त में [illegible] अपनी [illegible] प्रकट करते हुये मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ ।

Chandel

([illegible] चंदेल)

दिनांक :

भोपाल :

—— 0 ——

:: अनुक्रमणिका ::

[illegible]

अध्याय - 3 - पद्धति एवं प्रक्रिया —

- न्यादर्श का चयन
- उपकरण एवं पद्धति
- प्रधानाचार्यों को दी गई प्रश्नावली
- निरीक्षकों को दी गई प्रश्नावली
- निरीक्षण पुस्तिका
- छात्रों का स्वतन्त्र लेख एवं अभिव्यक्तियाँ
- स्वयं एवं प्रमुख का साक्षात्कार

अध्याय - 4 - प्रश्नावली का अध्ययन व निरीक्षण —

- निरीक्षकों को दी गई प्रश्नावली का अध्ययन (अनिश्चित)
- प्रश्नावली में उल्लिखित मुद्दे प्रश्नों का अध्ययन एवं निरीक्षण
- प्रधानाचार्यों को दी गई प्रश्नावली का अध्ययन तथा निरीक्षण (अनिश्चित)
- प्रश्नावली में उल्लिखित मुद्दे प्रश्नों का अध्ययन

अध्याय - 5 - निरीक्षण पुस्तिकाओं का अध्ययन —

- निरीक्षकों द्वारा निरीक्षण पुस्तिकाओं में दी गई टिप्पणियों का अध्ययन
- निरीक्षण पुस्तिका में उल्लिखित प्रशासनिक पहलू
- टिप्पणियों का प्रकार रूप में अध्ययन एवं निरीक्षण

अध्याय - 6 - मिट्टी एवं कृषक ——

- [illegible]
- कृषक
- मिट्टी
- पानी [illegible]

परिशिष्ट ——

- [illegible]
- [illegible] प्रश्नावली
- [illegible] प्रश्नावली
- [illegible]

— तालिकाओं की सूची —

16	निरीक्षकों [illegible] पाठ निरीक्षण [illegible] उद्देश्य
17	[illegible] द्वारा [illegible] के द्वारा अध्यापन शैली के सुधार [illegible]
18	महाविद्यालयीन निरीक्षकों द्वारा पाठों के निरीक्षण का अवलोकन
19	निरीक्षकों द्वारा [illegible] निरीक्षण किये गये [illegible]
20	[illegible] द्वारा [illegible]
21	निरीक्षण पद्धति में सुधार [illegible] प्रशिक्षणार्थियों का [illegible]
22	छात्राध्यापकों के विचार से [illegible] टिप्पणियों का [illegible]
23	महाविद्यालयीन निरीक्षकों के सम्बन्ध में छात्राध्यापकों के विचार
24	[illegible] महाविद्यालयीन निरीक्षकों [illegible] विशेष बातें
25(क)	[illegible] तथा [illegible] प्राप्त टिप्पणियों का विश्लेषण
25(ख)	विषयवस्तु विश्लेषण तथा [illegible] पहलुओं पर [illegible] टिप्पणियों [illegible]
26	[illegible] एवं [illegible] तथा अध्यापन पद्धति एवं [illegible] पर लिखी टिप्पणियों का अध्ययन
27	प्रश्न पूछने का ढंग तथा पाठ के विकास पर लिखी टिप्पणियों का अध्ययन
28	[illegible] का उपयोग एवं अभिव्यक्ति पर प्राप्त टिप्पणियां

29 विषयवस्तु तथा अध्यापन सामग्री पर मिली टिप्पणी का अध्ययन

30 व्याख्यान विधि तथा प्रश्न प्रदर्शन विधि के प्रयोग पर मिली टिप्पणी का अध्ययन

31 कक्षा में सामाजिक वातावरण तथा व्यवस्था पर मिली टिप्पणी का अध्ययन

32 कालांश घण्टे के समय पर मिली टिप्पणी का अध्ययन

33 अध्यापक की योग्यता, भाषा एवं आत्मविश्वास के गुणों पर प्राप्त टिप्पणी का अध्ययन

34 अध्यापकों तथा छात्रों के व्यवहार एवं वेशभूषा पर प्राप्त टिप्पणी का अध्ययन

35 अन्य प्रकार की टिप्पणी का अध्ययन

36 मूल्यांकन विधि के अनुसार छात्रों के सम्बन्ध में की गई टिप्पणियों का अध्ययन

अध्याय - १

१ - समस्या कथन -

प्रस्तुत अध्ययन हेतु जिस समस्या को चुना गया है वह है " इन्टर्नशिप में छात्राध्यापन के निर्देशन का अध्ययन और उसकी प्रभाव क्षमता का मूल्यांकन" ।

२ - पृष्ठभूमि, आवश्यकता एवं महत्व -

भारतीय शिक्षा आयोग ने (१९६६) कहा है कि देश के भाग्य का निर्माण उसके शैक्षिक विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थाओं में हो रहा है। क्योंकि आज के छात्र, देश के भावी आधारस्तंभ है । अस्तु, उन्हें अच्छी से अच्छी शिक्षा दी जानी चाहिए इसी दृष्टिकोण से उपरोक्त बात कही गई है । देश के इन भावी नागरिकों को अच्छा एवं प्रभावी शिक्षण देने के लिए शिक्षकों का, सुयोग्य, सुशिक्षित, तथा प्रभावक छात्राध्यापन की नई तकनिकों से परिचित एवं प्रशिक्षित होना आवश्यक है । दिन प्रतिदिन ज्ञान का क्षेत्र पूर्णतः विस्तृत होता जा रहा है । शिक्षा के कई विषयों में अनुसंधान कार्य हो रहे हैं, नई खोजे होती जा रही है । नयी खोज एवं अनुसंधान के साथ ही अध्यापन की नई प्रणाली एवं नईतकनिकों का भी विकास हो रहा है । इसके साथ ही हमने देश में प्रजातंत्र को न केवल शासन प्रणाली के रूप में अपितु जीवन-दर्शन एवं जीवन पद्धति के रूप में भी स्वीकारा है । अस्तु देश की आवश्यकता, ज्ञान का विस्फोट, युवा नेतृत्व का निर्माण तथा देश में सुयोग्य, जागरूक एवं समझदार नागरिक निर्माण करने हेतु शिक्षा का प्रसार, इन सभी महत्वपूर्ण बातों एवं आवश्यकताओं को देखते हुए हमें अच्छे एवं योग्य प्रशिक्षित शिक्षकों का निर्माण करना भी अत्याधिक आवश्यक है । तभी देश का शैक्षिक स्तर बढ़ेगा। सुयोग्य, सुसंस्कृत, सृजनशील छात्र निर्माण होंगे । प्रजातंत्र का अस्तित्व बना रहेगा । देश में नये अनुसंधान होंगे । समस्याओं का हल मिलेगा और इस प्रकार

देश की प्रगति एवं उन्नति होगी । अतः आवश्यक है कि देश की शिक्षक - प्रशिक्षण संस्थाएं एवं महाविद्यालय इस प्रकार के शिक्षकों का निर्माण करें तथा इस उद्देश्य हेतु पूर्ति के लिए प्रचलित परंपरागत शिक्षण एवं प्रशिक्षण प्रणालियों में सुधार लाएं ।

अध्ययन से पता चलता है कि स्वतंत्रता के ३० वर्ष पश्चात आज भी हमारे देश में प्रशिक्षित शिक्षकों की भारी मात्रा में कमी है । तथा अप्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या अत्यधिक है । जो लोग प्रशिक्षित है उन्हें भी परंपरागत ढंग से अध्यापन - प्रशिक्षण दिया गया है अतः उन्हें भी नई अध्यापन प्रणालियों व नई तकनिकों का प्रशिक्षण देना आवश्यक हो गया है । इस प्रकार शिक्षक - प्रशिक्षण, जैसा पूर्व हो या सेवारत, जो वर्तमान ज्ञान-विज्ञान के विस्फोट एवं देश की विविध समस्याओं के अनुसार नई अध्यापन प्रणालियों एवं तकनीकि को से परीपूर्ण करना आवश्यक हो गया है । इसलिए इस बात की आवश्यकता है कि देश के अध्यापक - प्रशिक्षण महाविद्यालय उपरोक्त सभी बातों का ध्यान में रखते हुए इस दिशा में अधिक से अधिक प्रयत्न करें तथा छात्र-अध्यापकों को कक्षागत, एवं कक्षाबाह्य गतिविधियों का पूर्ण रूपेण प्रशिक्षण दे ताकी इस देश को अच्छे शिक्षण -प्रशिक्षक, उत्तम परिपूर्ण शिक्षक तथा अच्छे -सुसंस्कृत बालक एवं नागरिक उपलब्ध हो सकें । इसलिए शिक्षक प्रशिक्षण को शिक्षा के क्षेत्र में अधिक महत्व - प्राप्त हुआ है हमारे प्रशिक्षण महाविद्यालय इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं । देश में एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा निर्मित ४ क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय इस दिशा में महत्वपूर्ण भुमिका निभा रहे हैं । फिर भी बहुत सी संस्थाएं ऐसी है जिन्हें इस दिशा में सुधार लाने की आवश्यकता है ।

यह शिक्षक - प्रशिक्षण कार्य, देश में स्थित प्रशिक्षण महाविद्यालयों में २ प्रकार से चलता है ।

१) सैद्धांतिक प्रशिक्षण

२) प्रत्यक्ष छात्राध्यापन ।

१) सैद्धांतिक प्रशिक्षण -

इसमें अध्यापन के सिद्धांत, मनोविज्ञान, शिक्षा का इतिहास, शिक्षा दर्शन, शिक्षा की समस्याएं, पाठ्यक्रम, शैक्षिक निर्देशन, शैक्षिक प्रशासन आदि विषयों का सैद्धांतिक रूप से अध्यापन होता है।

२) छात्राध्यापन -

इसमें छात्राध्यापक को अभ्यासार्थ शालाओं में भेज कर निश्चित काल विशेष के लिए छात्राध्यापन के कार्य का वास्तविक अनुभव कराया जाता है जिसमें वह छात्राध्यापन के सिद्धांतों द्वारा मनोवैज्ञानिक ढंग से तथा अध्यापन की विविध पद्धतियों का उपयोग कर के पढ़ाता है तथा प्रकार, में पढ़ाए जाने वाले अध्यापन संबंधी बातें एवं निर्देशों की जाँच करता है। इस प्रकार सैद्धान्तिक प्रशिक्षण में उसे पढ़ाई गई बातों के द्वारा उसके अध्यापन संबंधी व्यवहार में कितना परिवर्तन आया है इसका मूल्यमापन इस छात्राध्यापन के प्रत्यक्ष क्रिया द्वारा होता है। अतः सैद्धांतिक प्रशिक्षण एवं प्रत्यक्ष छात्राध्यापन दोनों परस्पर पूरक तथा अविभाज्य महत्वपूर्ण क्रियाएं हैं। एक दूसरे के बिना दोनों अपूर्ण हैं। फिर भी पहली की अपेक्षा दूसरी अधिक महत्वपूर्ण है क्यों कि वह छात्राध्यापक को छात्राध्यापन का प्रत्यक्ष ज्ञान देती है तथा अनुभव कराती है। इस प्रकार प्रत्यक्ष छात्राध्यापन के क्रिया को अध्यापन - प्रशिक्षण में अत्यधिक महत्व प्राप्त हुआ है।

शिक्षक प्रशिक्षण में छात्राध्यापन के महत्व का प्रतिपादन करते हुए डा० जी० चौरसिया महोदय कहते हैं, " Student teaching has been universally accepted as the most significant part of teacher education. Teacher educators in India have always given a high priority to the student teaching ''?

भारत में, शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान छात्राध्यापकों को प्रत्यक्ष छात्राध्यापन का अनुभव एवं प्रशिक्षण देने के इस क्रिया को अंग्रेजी में प्रक्टिस- टीचिंग कहा जाता है। इसी क्रिया को क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में " इन्टर्नशिप इन टीचिंग " कहते हैं। स्टूडेंट टीचिंग, प्रक्टिस टीचिंग, ब्लाक टीचिंग तथा इंटर्नशिप इन टीचिंग इन सभी शब्दों का अपना अलग अलग अर्थ है। किन्तु फिर भी सामान्यतः ये शब्द मुख्यतः एक ही बात को प्रकट करते हैं और वह है छात्राध्यापकों को वास्तविक विद्यालय के वातावरण में छात्राध्यापन का प्रत्यक्ष एवं वास्तविक अनुभव देना तथा उनमें अध्यापन कौशल निर्माण करना। प्रायः सभी शिक्षक-प्रशिक्षण इस बात को मानते हैं। अलग अलग प्रशिक्षण संस्थाओं ने, छात्राध्यापन के अलग अलग प्रारूप को अपनाया है। इस कारण कई समस्याएं भी निर्माण हुई हैं। अतः छात्राध्यापन के एक ही तथा सर्वोत्तम प्रारूप की आवश्यकता प्रतीत होती जा रही है।

बड़ौदा रिपोर्ट (१९६४) में भी अपने अध्ययन में छात्राध्यापन सम्बन्धित कुछ सुझाव प्रस्तुत किये हैं। रिपोर्ट के अनुसार यदि हमें अध्यापन प्रशिक्षण की क्रिया को अधिक प्रभावी बनाना हो तो हमें छात्राध्यापन, प्रास्ताविक कार्य, तथा विशिष्ट विषयों का अध्यापन, इन सब बातों का योग्य ढंग से नियोजन करना होगा। बड़ौदा रिपोर्ट में पुनः अपने अध्ययन में कहा कि प्रचलित छात्राध्यापन में छात्राध्यापन संबंधी कुछ कौशल तो विकसित हो सकते हैं किन्तु ये छात्राध्यापन को, सदा प्रशासन के तथा विद्यालय में चलने वाली सभी क्रिया कलापों का अनुभव नहीं दे सकते इसका कारण यह है कि प्रचलित छात्राध्यापन पूर्णतः कृत्रिम वातावरण में होता है। इस पद्धति में शाला में चलनेवाली शैक्षिक एवं सहगामी क्रियाओं का पूर्ण परिचय एवं अनुभव छात्राध्यापक को होता हो। उपरोक्त बातों के अनुसार बड़ौदा रिपोर्ट ने कुछ सुझाव प्रस्तुत किये हैं जो निम्न हैं।

---

१ जी. चौरसिया, न्यू इराज़ इन एजुकेशन, १९६७ पृष्ठ ९६

(१) परंपरागत छात्राध्यापन की पद्धति में सुधार होने चाहिए । अनेक प्रत्यक्ष क्रियाकलापों का (प्राक्टिकल ऍक्टिविटीज) समावेश उसमें हो जिसके द्वारा छात्राध्यापक में सही शिक्षक के गुण एवं कौशल का निर्माण हो सकें।

(२) छात्राध्यापक का शाला के सभी क्रियाकलापों से संबंध हो तथा प्रत्यक्ष क्रियाकलाप, छात्राध्यापन, छात्राध्यापक के पाठों का निरीक्षण, आलोचनात्मक पाठ, पाठ्यक्रमगामी क्रियाओं का आयोजन, महाविद्यालय द्वारा गृह कार्यों का लेखन, व्यक्ति वृत्त का अध्ययन, कक्षा में स्थित समूहों का समाजमितिय अध्ययन, श्याम पट्ट कार्य, दृश्य-श्राव्य साधनों का निर्माण, तथा प्रयोगशाला संबंधी कार्य आदि क्रियाओं का छात्राध्यापन में समावेश हो ।

उपरोक्त सभी सुझाव एवं बातों को ध्यान में रखते हुए क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों ने छात्राध्यापन की नवीन पद्धति को लिया है जिसे "इंटर्नशिप इन टीचिंग" कहा जाता है ।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में छात्राध्यापन

एन०सी०ई० आर०टी० द्वारा प्रकाशित अपने "इन्टर्नशिप इन टीचिंग" नामक पुस्तिका में इन्टर्नशिप इन टीचिंग के कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया गया है । इस पद्धति में छात्राध्यापक को छात्राध्यापन के अतिरिक्त विद्यालय में चलनेवाली सभी प्रकार की शैक्षिक एवं सहगामी क्रियाओं का सम्मिलित रूप से ज्ञान दिया जाता है । इस पद्धति में छात्राध्यापन को ३०-४० दिन के लिए सहयोगी विद्यालयों में छात्राध्यापन हेतु भेज दिया जाता है तथा वह उस शाला में एक पूर्णकालिक शिक्षक के रूप में उस काल विशेष के लिए कार्य करता है । जबकि प्रचलित परंपरागत छात्राध्यापन में छात्राध्यापक, शाला में १-२ कालांश पढ़ाकर पुनः अपने महाविद्यालय में चला जाता है । वह वहाँ प्रतिदिन पूर्ण काल तक कार्य नहीं करता, न ही वह स्कूल की संपूर्ण क्रिया कलापों में भाग लेता है । परंपरागत पद्धति में छात्राध्यापन एक तरह से

एक मित्र कर्ता के रूप में यह कार्य करता है । अर्थात् इस पद्धति में, छात्राध्यापन के रूप पाठ निरीक्षण के कार्य में न गंभीरता है न तीव्रता । जब कि इंटर्नशिप इन टीचिंग में छात्राध्यापक छात्राध्यापन के साथ साथ, सहगामी क्रियाओं में भाग लेता है । जैसे - शाला में चलने वाले खेलों में भाग लेना, वादविवाद, परीक्षाओं का आयोजन, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन, विद्यालयीन छात्र - बचत योजना संबंधी कार्य, वाचनालय तथा प्रयोगशाला सम्बन्धित कार्य उसके प्रकार छात्रों से मासिक शुल्क लेना, उनकी उपस्थिति लेना, समय सारणी तैयार करना, शाला के सायंकालीन में भाग लेना तथा अवकाश के कालांशों में पढ़ाना इत्यादि सभी प्रकार के कार्य उसे करने होते हैं । इस प्रकार छात्राध्यापक शाला के वास्तविक वातावरण से, कार्यकलापों से तथा उनकी समस्याओं से भलीभांति परिचित हो जाता है, तथा छात्राध्यापन के कौशल भी सीखता है और यथार्थ रूप में एक सही शिक्षक बन पाता है ।

जहाँ तक छात्राध्यापन का प्रश्न है, इसमें पाठ देने हेतु शिक्षण वस्तु का चुनाव करना, पाठ योजना तैयार करना, उसे सहयोगी शिक्षक एवं अपने प्रशिक्षकों को दिखाकर शुद्ध करा लेना तथा तदुपरान्त उस पाठ की पाठयोजना के अनुसार अध्यापन के सिद्धांतों का पालन करते हुए पढ़ाना, आदि सभी बातों का समावेश होता है । छात्र-अध्यापन में कक्षानुशासन, कक्षा का सामाजिक वातावरण, श्यामपट्ट कार्य, प्रश्नपूछने की कला, पाठ- अध्यापन की प्रस्तावना, गृहपाठ, पाठ में कल्पना या विषय-वस्तु का विस्तार इत्यादि कौशलों का समावेश होता है जिनका छात्राध्यापक को ध्यान रखना होता है इन सभी कौशलों में पारंगत होने का कोशिश छात्राध्यापन द्वारा की जाती है यही विद्यालयीन जीवन का सही अनुभव है । अतः आलोचनात्मक पाठ एवं अंतिम पाठ द्वारा छात्राध्यापन के छात्राध्यापन का मूल्यांकन होता है ।

छात्राध्यापन सम्बन्धित निरीक्षण कार्य -

छात्राध्यापन में निरीक्षकों द्वारा किये जाने वाले निरीक्षण कार्य का

अन्य साधारण महत्व है । छात्राध्यापन में अध्यापन संबंधी जिन कौशलों का समावेश होता है अध्यापन के समय छात्राध्यापक उन कौशल्यों का उपयोग सफल रूप से किस सीमा तक करता है तथाकुशलता से पढ़ाता है इन बातों का निरीक्षण किया जाता है । पाठ के लिए विषय वस्तु का चयन या नियोजन, पाठगत - शिक्षण के उद्देश्य, विषय वस्तु का विश्लेषण अध्यापन के सिद्धान्तों का अनुकरण, कक्षानुशासन, प्रश्न पूछने की कला, दृश्य-श्राव्य सामग्री का उपयोग, श्यामपट्ट कार्य, निपुणता, इत्यादि बातों पर निरीक्षण में बल दिया जाता है । यह निरीक्षण कार्य महाविद्यालयीन निरीक्षकों द्वारा सहयोगी स्कूलों में प्रतिदिन जाकर कियाजाता है । महाविद्यालयीन निरीक्षकों के अनुपस्थिति में सहयोगी स्कूल के शिक्षक यह निरीक्षण कार्य करते हैं । विषयवस्तु का निरीक्षण, प्रायः विषय कुशल करते हैं तथा अध्यापन पद्धति का निरीक्षण अध्यापन विशेषज्ञ करते हैं । छात्राध्यापक द्वारा छात्राध्यापन करते समय निरीक्षक, उसी कक्षा में बैठकर निरीक्षण करते है तथा छात्राध्यापन में छात्राध्यापक द्वारा होने वाली गलतियाँ तथा गुणों का एवं सुधार के आवश्यक सुझावों को उनके निरीक्षण गलतियां तथा पुस्तिका में टिप्पणियों के रूप में लिखते हैं । उन टिप्पणियों को अच्छी तरह पढ़कर, अपनी अध्यापन संबंधी गलतियों को जानकर तथा अपने अध्यापन में सुधार कर के छात्राध्यापक दूसरे दिन फिर अपना पाठ प्रस्तुत करते हैं । छात्राध्यापक द्वारा किए गए पाठ अध्यापन के उपरान्त अध्यापन संबंधी (गुणदोषों के) संदर्भ में निरीक्षकों के साथ चर्चा भी की जाती है । और इस प्रकार छात्राध्यापक अध्यापन की सही प्रणाली सीखता है ।

जैसे कि उपर कहा गया है अध्यापन संबंधी टिप्पणियाँ, छात्राध्यापन के निरीक्षण पुस्तिकाओं में लिखी जाती है । निरीक्षण पुस्तिका में अध्यापन कौशलों की एक सूची या तालिका छपी होती है जिसके आगे महाविद्यालयीन निरीक्षक अपनी टिप्पणियां लिखते हैं । निरीक्षण पुस्तिका में निश्चित वह तालिका इस प्रकार होती है ।

Class - - - - - - - - - - - - - Topic - - - - - - - - - - -

Date - - - - - - - - - - - ---

<u>CRITERIA</u> <u>COMMENTS AND SUGGESTIONS</u>

1) <u>Lesson Plan</u>

   a) objectives indicated in ebehavioural terms.

   b) content analysed.

   c) concepts developed.

2) a) motivation and preparation

   b) methods and techniques

   c) questioning

   d) development of lesson

   e) student participation and exposition.

3) <u>subject matter</u>

4) <u>Teaching Aids</u>

   Black Board works.

   Experiments demonstrated.

5) <u>Classmanagement</u>

6) <u>Social climent in class</u>

7. <u>Personality- Manners</u>

   Voice, speech, confidence

   re-sourcefulness

   imagination, dress etc.

Signature of the supervisor

पाठनिरीक्षण के सिद्धान्त -

१) इन्टर्नशिप के दौरान - निरीक्षण एक ऐक अविरत चलने वाली प्रक्रिया है ।

२) निरीक्षण में, छात्राध्यापक द्वारा होने वाले आत्ममूल्यांकन को भी अत्यधिक महत्व है ।

३) निरीक्षण की क्रिया यह छात्राध्यापक - निरीक्षक - तथा सहयोगी शाला के सहयोगी शिक्षक, इनके सहयोग से चलने वाली क्रिया है ।

४) छात्राध्यापन, कक्षानुभव तथा समस्या सुलझाने की क्षमता इत्यादि बिन्दुओं का ध्यान रखते हुए निरीक्षण कार्य होना चाहिए ।

५) यह निरीक्षण अंशतः बाह्यस्वरूपा है तथा अंशतः अन्तर स्वरूपा है अन्तर स्वरूपा निरीक्षण में विषयवस्तु का निरीक्षण होता है तो बाह्यस्वरूपा निरीक्षण में अध्यापन पद्धति का ।

पाठ निरीक्षण संबंधी निरीक्षकों के कार्य -

१) यह अपेक्षित है कि निरीक्षक कक्षा में निरीक्षण हेतु समय से पूर्व जाये तथा छात्राध्यापकों के प्रगति के सम्बन्ध में सहयोगी शाला के मुख्याध्यापक से चर्चा करें ।

२) वह छात्राध्यापन में अन्य निरीक्षकों द्वारा लिखी हुई टिप्पणियोंका, पाठ - नियोजन का तथा सुझावों का निरीक्षण करें ।

३) छात्राध्यापक के छात्राध्यापन का निरीक्षण करना, मूल्यांकन करना तथा सुझाव देना, उसी प्रकार अपने व्यक्तिगत पुस्तिका में भी छात्राध्यापकों के बाबत, उनकी निरीक्षण संबंधी टिप्पणियां लिखना तथा मूल्यांकन करना ये भी उसके कार्य है ।

४) पाठ - अध्यापन के पश्चात्, छात्राध्यापन की सुधार की और अग्रसर करना तथा मार्गदर्शन करना यह भी उसे करना होता है ।

५) जिनका पाठ निरीक्षण किया गया हो उनमें, अध्यापन संबंधी सुधार हुआ है क्या या नहीं तथा यदि हुआ हो तो किस सीमा तक है। उसी प्रकार

पूर्व टिप्पणियों को कितने परिमाण में कार्यान्वित किया है यह जानने हेतु पुनः निरीक्षण करना आवश्यक था। उसे ध्यान रखना होता है।

6) निरीक्षक द्वारा छात्राध्यापक की विषयवस्तु, अध्यापन पद्धति, पाठ की तैयारी तथा दृश्यश्राव्य साधनों के संबंध में मार्गदर्शन करना इत्यादि अनेक प्रकार के कार्य उसे करने होते हैं।

समस्या का स्पष्टिकरण -

वस्तुतः छात्राध्यापकों के छात्राध्यापन का निरीक्षण निरीक्षकों द्वारा अत्यधिक रुचि एवं गंभिरता से होना चाहिए, किन्तु सामान्यतः यह ज्ञात हुआ है कि वह उतनी गंभिरता से नहीं किया जाता। कुछ निरीक्षण सम्बन्धी निष्कर्ष आदर्श निरीक्षण के विपरित होते हैं और इन दोनों के कारण छात्राध्यापक की छात्राध्यापन सम्बन्धी प्रभाव क्षमता विकसित नहीं हो पाती न ही छात्राध्यापन सम्बन्धी कौशलों का उनमें विकास होता है। निरीक्षण का अपने आप में बहुत अधिक महत्व है। जब तक प्रभावी निरीक्षण नहीं होगा तथा छात्राध्यापकों के छात्राध्यापन सम्बन्धी दोष नहीं दर्शाए जायेंगे तब तक छात्राध्यापकों में छात्राध्यापन सम्बन्धी पूर्ण प्रभावक्षमता नहीं निर्माण हो सकती। अतः निरीक्षण कार्य को गंभिरता से करना चाहिए। कई बार यह देखने में आता है कि पाठ निरीक्षण हेतु, निरीक्षक शालाओं में पहुंचते ही नहीं तथा यदि पहुंचते भी है तो पाठ - निरीक्षण न करते हुए केवल हस्ताक्षर करके चले जाते है। जिससे छात्राध्यापन तथा निरीक्षण दोनों क्रियाएं नाममात्र ही रह जाती हैं। कभी कभी ऐसा होता है कि छात्राध्यापन से जिनका सम्बन्ध नहीं ऐसी निरर्थक टिप्पणियां दी जाती हैं। कभी कभी केवल आलोचनात्मक दृष्टि से टिप्पणियां दी जाती है तो कभी कभी व्यक्तिगत विरोध उसमें सम्मिलित हो जाते हैं। इस प्रकार से सभी प्रकार की समस्याएं निरीक्षण के दौरान निर्माण होती है। अतः इनका अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

जहाँतक शैक्षिक शिक्षा महाविद्यालय की बात है, इन्टर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों द्वारा किया जाने वाला छात्राध्यापन, तथा महाविद्यालयीन निरीक्षकों द्वारा किया गया निरीक्षण कहीं अन्य प्रशिक्षण महाविद्यालयों की तुलना में गंभीरता बरता जाता है। छात्राध्यापक के छात्राध्यापन सम्बन्धी गुण - दोषों को दिखाकर छात्राध्यापकों से उनके अध्यापन सम्बन्धी दोषों के विषय में आपसी चर्चा की जाती है। उनके हर शंका एवं विकल्प का हर संभव यथाप्रयास समाधान किया जाता है। फिर भी हम ऐसा नहीं कह सकते कि इन्टर्नशिप काल में निरीक्षण के सम्बन्ध में महाविद्यालयीन निरीक्षकों द्वारा बिल्कुल ही गलतियाँ नहीं होती तथा निरीक्षण पूर्णतः गंभीर रूप से ही किया जाता है। अतः कुछ मात्रा में, इस निरीक्षण कार्य में भी दोष रहना संभव है। इसलिए निरीक्षण सम्बन्धी इस समस्या का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

समस्या प्रस्तुतीकरण -

उपरोक्त तथ्यों के आधारपर हम शैक्षिक शिक्षामहाविद्यालय के इन्टर्नशिप के कार्यक्रम में होने वाले छात्राध्यापक के निरीक्षण का अध्ययन करेंगे तथा उसके द्वारा छात्राध्यापकों का इस अध्ययन से ज्ञात हो कि निरीक्षकों के निरीक्षण द्वारा छात्राध्यापकों की छात्राध्यापन संबंधी प्रभावक्षमता किस मात्रा में बढ़ती है।

समस्या अध्ययन के उद्देश्य -

प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं।

१) इन्टर्नशिप में होने वाले, छात्राध्यापकों के छात्राध्यापन के निरीक्षण का मूल्यांकन एवं उसका विश्लेषण करना।

२) निरीक्षण में छात्राध्यापक को निरीक्षकों द्वारा मिली हुई टिप्पणियों का विश्लेषण तथा छात्राध्यापक की छात्राध्यापन संबंधी योग्यता एवं प्रभावक्षमता बढ़ाने में उन टिप्पणियों का कितना योगदान है इसका अध्ययन करना।

३) निरीक्षण पद्धति में आवश्यक सुधार की संभावनाओं की खोज करना तथा निरीक्षण पद्धति को और भी अधिक प्रभावी बनाने हेतु सुझाव देना ।

४) टिप्पणियों में, अध्यापन कौशल के सम्बन्ध में निरीक्षकों द्वारा जिन बातों पर अधिक बल दिया जाता है उनमें टिप्पणियों की पुनरावृत्तियों पर ध्यान देना तथा ऐसे अकेन्द्रित कौशलों की खोज करना ।

४) निरीक्षण में समाहित ऐसी कुछ बातें, जिनके कारण छात्राध्यापक के छात्राध्यापन पर बुरा प्रभाव पड़ता है तथा वे उदासीन हो जाते हैं उन सभी पहलुओं के सम्बन्ध में अध्ययन करना तथा उन्हें समाप्त करने के लिये सुझाव देना ।

न्यादर्श -

प्रस्तुत समस्या के अध्ययन हेतु हम निम्न संख्या में न्यादर्श का चुनाव करेंगे ।

१) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के इन्टर्नशिप इन टिचिंग कार्यक्रम में भाग लेने वाले केवल १४० छात्राध्यापक ।

२) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के केवल ११ निरीक्षक ।

उपरोक्त न्यादर्शों को लेकर हम इस समस्या का अध्ययन करेंगे ।

अध्ययन की सीमाएं

प्रस्तुत अध्ययन की सीमाएं निम्न प्रकार है ।

१) प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के इन्टर्नशिप इन टिचिंग कार्यक्रम में भाग लेने वाले छात्राध्यापकों के छात्राध्यापन के निरीक्षण पद्धति का ही केवल मात्र अध्ययन है न कि संपूर्ण इंटर्नशिप के कार्यक्रम का ।

२) प्रस्तुत अध्ययन में केवल क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के निरीक्षकों के निरीक्षण को ही सम्मिलित किया गया है, न कि सहयोगी शालाओं सहयोगी शिक्षकों के निरीक्षण को ।

३) प्रस्तुत अध्ययन में हम केवल १० छात्राध्यापकों की १० निरीक्षण पुस्तिकाओं में दी गई टिप्पणियों का ही अध्ययन एवं विश्लेषण करेंगे ।

४) छात्राध्यापकों द्वारा पढ़ाए गये ४० पाठों में से प्रतिमान केवल २० पाठों को तथा उनपर मिली टिप्पणियों को ही केवल निरीक्षण पुस्तिकाओं से हम अध्ययन हेतु चुनेंगे तथा इस प्रकार केवल २०० पाठों पर मिली टिप्पणियों का विश्लेषण करेंगे ।

उपकरण -

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्न प्रकार के उपकरणों का हम उपयोग करेंगे ।

१) छात्राध्यापकों को दी गई प्रश्नावली ।

२) महाविद्यालयीन निरीक्षकों को दी गई प्रश्नावली ।

३) केवल १० निरीक्षण पुस्तिकाएं ।

अध्ययन की पद्धति एवं तकनीक -

१) हम प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रदत्त सामग्री के प्राप्ति के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग करेंगे ।

२) प्रश्नावली के माध्यम से छात्राध्यापकों द्वारा निरीक्षण पद्धति के सम्बन्ध में उनके विचार जानकर उसका विश्लेषण करेंगे । उसी प्रकार निरीक्षकों द्वारा प्राप्त विचारों का भी विश्लेषण करेंगे ।

३) प्रश्नावली के माध्यम से, प्राप्त उत्तरों का प्रतिशत निकालकर उसके आधार पर हम अध्ययन के निष्कर्ष ज्ञात करेंगे तथा सुझाव देंगे ।

४) खुले (ओपन एन्डेड) प्रश्नों का विश्लेषण केवल प्राप्त सुझावों के ही आधार पर करेंगे ।

अध्ययन का औचित्य

इस अध्ययन के पूर्व, इसी समस्या से सम्बन्धित कुछ अध्ययन किये जा चुके है । उनमें से कुछ अध्ययन इस प्रकार हैं ।

(१) प्रथम अध्ययन डा० एनु० जैय राधाराधियों का है (१९५६) जो शैक्षीग शिक्षा महाविद्यालय के इन्टर्नशिप कार्यक्रम पर किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन केवल छात्राध्यापकों को दिये गए प्रश्नावली के माध्यम से ही किया गया है जिससे छात्राध्यापकों की छात्राध्यापन में किन क्षेत्रों में अधिक कठिनाईं होती है तथा क्या सुधार किए जाने चाहिए इसका पता चलता है ।

(२) यह अध्ययन, पी०एच०डी के लिए प्राक्टिस टिचिंग पर केन्द्रिय शिक्षा संस्थान देहली में किया गया । प्राक्टिस टिचिंग की अवधि में छात्राध्यापकों को जो फीड मिले उनके आधार पर यह अध्ययन किया गया तथा निष्कर्ष निकाला गया कि छात्राध्यापकों के छात्राध्यापन में उन्हें दिन प्रतिदिन मिलने वाली अच्छी तथा बुरी कमियों को जानकर उनके द्वारा अध्यापन में सुधार के प्रयत्न किए गये हैं ।

(३) इस अध्ययन भी प्राक्टिस टिचिंग पर ही किया गया है जो सिरेबार सायकिया द्वारा (१९७०)

प्रस्तुत अध्ययन से इतना ही पता लगा कि निरीक्षकों ने जो निरीक्षण किया वह बहुत ही अयोग्य था । इसी प्रकार बहुत ही कम पाठ निरीक्षण किए गए थे तथा निरीक्षकों द्वारा अध्यापन पद्धति के सम्बन्ध में योग्य सुचनाएं दीए जाने का अभाव पाया गया ।

उपरोक्त अध्ययनों से हमें पता चलता है कि अनेकों अध्ययन इस क्षेत्र में हो चुके हैं किन्तु वे या तो अपूर्ण है या तो संपूर्ण छात्राध्यापन कार्यक्रम पर किए गए है । जो अध्ययन केवल प्राक्टिस टिचिंग पर किए गए है उनमें भी निरीक्षण के हर पहलू पर ध्यान नहीं दिया गया है । क्रमांक १ का अध्ययन

केवल प्रश्नावली के ही आधार पर किया गया है इसमें छात्राध्यापकों के निरीक्षण पुस्तिकाओं में उतनी विश्वासनीयता प्रतीत नहीं होती जितनी की होनी चाहिए। इसी प्रकार अध्ययन की दृष्टि में केवल संपूर्ण इन्टर्नशिप के कार्यक्रम केन्द्रित है न कि केवल छात्राध्यापन के ही निरीक्षण पर। अतः यह अध्ययन प्रस्तुत समस्या पर व्यापक दृष्टि नहीं डाला पाता।

द्वितीय अध्ययन जो कि छात्रों को छात्राध्यापन में मिलने वाली श्रेणियों के आधार पर किया गया उसमें भी छात्राध्यापकों को मिलने वाली टिप्पणियों का संदर्भ नहीं है। अतः यह अध्ययन भी जितना होना चाहिए उतना पूर्ण नहीं है। अर्थात इसी ढंग से प्रस्तुत समस्या के अध्ययन की आवश्यकता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

तीसरे अध्ययन से भी उस अध्ययन के अपूर्णता का परिचय होता है क्यों कि केवल दो या तीन निष्कर्ष ऐसे निकले हैं जो केवल निरीक्षण की अयोग्यता पर तथा निरीक्षकों के निरीक्षण संबंधी अरुचि पर प्रकाश डालते हैं।

प्रस्तुत तीनों अध्ययनों का अध्ययन करने पर हमें इस समस्या पर अध्ययन की पुनः आवश्यकता प्रतीत होती है। जिसके द्वारा छात्राध्यापकों की छात्राध्यापन में अनुभव होने वाली कठिनाइयाँ, निरीक्षण में निरीक्षकों की रुचि निरीक्षण कार्य में पूर्णता से सहभागी होने की उनकी वृत्ति योग्य अयोग्य टिप्पणियाँ छात्राध्यापकों को अपने टिप्पणियों द्वारा सही ढंग से मार्गदर्शन, आलोचना तथा प्रशंसा करने की निरीक्षकों की वृत्ति छात्राध्यापन के उपरान्त अनेकों समस्याओं पर की जाने वाली चर्चाएं पाठ बिल्कुल जांच कर केवल हस्ताक्षर करने की वृत्ति, टिप्पणियों द्वारा छात्राध्यापक के छात्राध्यापन पर पड़ा हुआ प्रभाव तथा अध्ययन सम्बन्धित सुधार छात्राध्यापकों का निरीक्षण पद्धति के एवं निरीक्षकों के सम्बन्ध में अभिमत इत्यादि अनेकों प्रश्नों का अध्ययन किया जाना है।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या के अध्ययन की उचित एवं सही आवश्यकता हमें प्रतीत होती है। यही अध्ययन का औचित्य है।

अध्याय - २

संबंधित साहित्य -

शैक्षिक अनुसंधान विश्वकोश संस्करण ३, में छात्राध्यापन को, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्षों से महत्वपूर्ण मानी जानेवाली आवश्यकता के रूप में कहा गया है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के,प्रयोगशालीय रूप में छात्राध्यापन के क्रिया का विकास, मॉडल स्कूल, विश्वविद्यालय के तहत चलने वाले शिक्षा विभाग तथा व्यवसायिक रूप से चलने वाले महाविद्यालय इनसे विगत ६० वर्षों से संबंधित है। जहां तक इस क्षेत्र में होने वाले अनुसंधान का सम्बन्ध है, शैक्षिक अनुसंधान विश्वकोश के अनुसार वह निम्न स्तर का ही है। इसका सम्भाव्य कारण यही है कि इस क्षेत्र में अनुसंधान कर्ताओं में रुचि का अभाव तथा क्रियाओं के ऐसे अनियंत्रणात्मक क्षेत्र में निष्कर्षात्मक अनुसंधान के कार्य में आनेवाली कठिनाइयाँ। इसी प्रकार छात्राध्यापन, वातावरण अथवा परीस्थिति, निरीक्षण, प्रशासनिक व्यवस्थाएं प्रवेश तथा चुनाव एवं तैयारी के कार्यक्रम आदि अंगों में होने वाले विकास या परिवर्तन जो छात्राध्यापकों की व्यक्तिगत भिन्नताओं से सम्बन्धित होते हैं और यही प्रमुख कठिनाइयों का निर्माण करते हैं।

शैक्षिक अनुसंधान विश्वकोश के अनुसार, प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित उपलब्ध प्रकाशित साहित्य, अधिकतर लेखों के रूप में है तथा वह मत एवं विचार, छात्राध्यापन का वर्णन आयोग एवं कमेटी के सुझाव तथा कुछ परीक्षणात्मक अध्ययन पर अवलंबित है। भारत एवं पाश्चात्य देशों में प्रस्तुत समस्या पर अनुसन्धान हो चुके हैं किन्तु भारत में होने वाले अनुसंधानों की संख्या कम है। कोठारी आयोग ने भी इसे सुधारने के विषय में सुझाव दिए है। वैसे भी एन०सी०ई० आर०टी० द्वारा इस क्षेत्र में काफी काम किया जा चुका है। फिर भी इस क्षेत्र में पुरानी विचारधाराओं का त्यागकर

और अधिक कार्य करने की बातों पर अधिक बल दिया गया है ।

(१) छात्राध्यापन की तैयारी

(२) छात्राध्यापक के वातावरण से भलिभाँति परिचित होना

(३) छात्राध्यापकों का पाठ निरीक्षण

(४) छात्राध्यापन सम्बन्धी प्रणाली पद्धतियों का उपयोग

(५) सुचना, स्त्रोत सेवा का उपयोग(इन्ट्र-मूव-मेन्ट रिसोर्सेस)

(६) कक्षा प्रशासन एवं अनुशासन

(७) कक्षावकाश कालीन कार्य

(८) निर्देश एवं मुल्यांकन

(९) व्यावसायिक उत्तरदायित्व

(१०) स्वयं के प्रगति का मूल्यांकन ।

उपरोक्त सभी बातों पर सम्मिलित रूप से विचार करते हुए, छात्राध्यापन सम्बन्धी वस्तुनिष्ठ निरीक्षण पद्धति एवं निरीक्षण कार्य की आज आवश्यकता है, तभी हम योग्य तथा सर्वांगीण असाधारण क्षमतावाले शिक्षकों का निर्माण करने में सफल होंगे । अतः पुनः इस बात का प्रतिपादन करना अत्यधिक आवश्यक है कि प्रस्तुत समस्या के सम्बन्ध में अधिक से अधिक अध्ययन किया जाय तथा अनुसंधान का अनुपात बढ़े ।

छात्राध्यापन - निरीक्षण एवं इससे सम्बन्धित अन्य समस्याओं को लेकर कुछ अध्ययन इसके पूर्व हो चुके हैं वे निम्नप्रकार हैं ।

(१) <u>बनर्जी, एन०के०, ए स्टडि स्पेसिफिक एबिलिटी एंड अटेनमेंट इन दि</u> <u>टिचिंग प्रोफेसन इन ज्युनियर हाय एंड हायर सेकंडरी स्कूल्स डी०फिल०</u> <u>थेसिस, इलाहाबाद, १९५६ ई०</u>

<u>उद्देश्य</u> -

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार थे ।

(१) शिक्षक प्रशिक्षण के दो पहलुओं के परस्पर संबंध के बारे में खोज करना । उदा० छात्राध्यापन तथा सैद्धान्तिक अध्ययन ।

(२) उपरोक्त दोनों पहलू सामान्य बुद्धिमत्ता एवं अध्यापन - अभिरुचि से किस सीमा तक संबंधित है (जो कि आब्जेक्टिव टेस्ट द्वारा टेस्ट की गई है) इसका निश्चय करना ।

न्यादर्श -

न्यादर्श, गवर्नमेंट सेंट्रल पैडागॉगिकल इन्स्टीट्यूट इलाहाबाद के १९५४-५५ के सत्र में पढ़ने वाले छात्राध्यापन थे ।

उपलब्धियां

(१) सफल कक्षाध्यापन के लिए निम्नप्रकार के गुणों की आवश्यकता है - तेजी से विचार करने की शक्ति हास्य-विनोद करने का गुण, शीघ्र समझने की शक्ति, अपने आपको समाज अनुकूल एवं उपयोगी बना लेने की प्रवृत्ति, जो कि छात्राध्यापक को कक्षा में प्रभावी, तेजस्वी एवं चुस्त बनाने में सहायक होता है ।

(२) प्रचलित परीक्षा प्रणाली में प्राक्टिस टीचिंग यह एक निकृष्ट पहलू है ।

(२) मेथ,एन: तथा सार्जा, इन्टर्नशिप इन टीचिंग प्रोग्राम इन फ़ॉर आर०सी०ई०

आफ एजुकेशन (१९६६)

उद्देश्य -

उपरोक्त अध्ययन का उद्देश्य, इन्टर्नशिप कार्यक्रम के सम्बन्ध में कमियां जानना तथा उसके नियोजन एवं सुधार का अध्ययन करना था ।

उपकरण -

इस अध्ययन के लिए, छात्राध्यापकों, महाविद्यालयीन निरीक्षक तथा

सहयोगी शालाओं के शिक्षक -निरीक्षण कर्ताओं को प्रश्नावली दी गई । अध्ययन से प्राप्त उपलब्धियां जो सुझावों के भी रूप में हैं निम्न प्रकार हैं -

उपलब्धियां

(१) ५० प्रतिशत से अधिक पाठ, सहयोगी शाला के निरीक्षण कर्ताओं द्वारा तथा शेष महाविद्यालयीन निरीक्षकों द्वारा निरीक्षण किए जाने चाहिए ।

(२) महाविद्यालयीन निरीक्षक तथा सहयोगी शाला के शिक्षक निरीक्षण कर्ताओं को सप्ताह में प्रत्येक छात्राध्यापकका मूल्यांकन तथा उसकी विस्तृत चर्चा करनी चाहिए ।

(३) महाविद्यालयीन निरीक्षकों के पास छात्राध्यापकों के अध्यापन पाठ नियोजन, महाविद्यालयीन दक्षतायें तथा प्राप्त पौत्रीय अनुभव एवं उनके द्वारा दिए गए सुझावों से सम्बन्धित बातों की लिखित जानकारी होनी चाहिए ।

(४) छात्राध्यापकों को पाठ नियोजन, इकाई योजना, छात्रों का सहभाग, कक्षा-प्रशासन एवं संचालन अध्यापन सामग्री का चयन तथा संयुवारी छात्रों के मूल्यांकन हेतु उन उन्हें दिए गए प्रश्न तथा इन सभी बातों में सुधार लाने हेतु उपाय योजना आदि क्षेत्रों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ।

(५) सहयोगी शिक्षक -निरीक्षण कर्ताओं को भी कुछ विषय में कठिनाई हुई जैसे पाठ नियोजन को सुधारने, तथा चर्चा करने के लिए समय निकलना उसी प्रकार अयोग्य समय में आयोजित बैठकों में उपस्थित होने के लिए समय निकालना ।

सुझाव -

महाविद्यालयीन निरीक्षकों में छात्र कार्यक्रम के अनेकों पहलुओं के सम्बन्ध में एकमत, एक विचार होने चाहिए जैसे -पाठ नियोजन उद्देश्यों को लिखना तथा अध्यापन पद्धति इत्यादि ।

(३) श्रीव रत्व, आर०वी०, इन्वल्युएशन आफ प्रा ि स टीचिंग इन टीचर ट्रेनिंग इन्स्टिट्यूशन, सी०आई०ई० न्यू देहली १६७०

यह अध्ययन जो कि पी०एच०डी० की उपाधि हेतु किया गया था, उसके प्रमुख उद्देश्य निम्नप्रकार है ।

उद्देश्य

१) छात्राध्यापन के उद्देश्यों का अध्ययन ।

२) विषयवस्तु तथा छात्राध्यापन के मूल्यांकन पद्धति का अध्ययन ।

३) अन्य सहायक उद्देश्य, जैसे - शिक्षक प्रशिक्षण के संपूर्ण कार्यक्रम में, छात्राध्यापन के स्थान व महत्व का अध्ययन ।

४) छात्राध्यापन का अभ्यास एवं मूल्यांकन पद्धति छात्राध्यापक के अध्यापन संबंधी उपलब्धियों को किस प्रकार बढ़ाता है उसका अध्ययन ।

५) छात्राध्यापकों के छात्राध्यापन के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन ।

प्रस्तुत अध्ययन, छात्राध्यापकों को छात्राध्यापन सत्र की अवधि में प्राप्त श्रेणियों (ग्रेड्स) के आधार पर किया गया है ।

उपलब्धियां

१) शिक्षक -प्रशिक्षकों ने इस बात को माना है कि वे छात्राध्यापक, जिन्हें अपने छात्राध्यापन में दिन - प्रतिदिन विकास का पता चलता है, उन्होंने अपने छात्राध्यापन में प्राप्त अच्छी बुरी श्रेणियों के बावजूद अपने छात्राध्यापन के कौशल में सुधार करने का प्रयास किया ।

२) लगभग ७६ = प्रतिशत छात्राध्यापकों ने, छात्राध्यापन के प्रति अपना असंतुष्ट दृष्टिकोण प्रगट किया ।

३) शिक्षक प्रशिक्षकों में भी मत भिन्नता रही, वह यह कि "फिड बैक" किस आधार पर किया जाय ?

i) यह छात्राध्यापकों के ज्ञान के आधार पर दिया जाए अथवा

ii) छात्राध्यापक जिस संस्था में पढ़ता है वहाँ के मूल्यांकन पद्धति के आधार पर या

(iii) अध्यापन संबंधी उनकी रुचि के स्तर के आधारपर ।

(४) रिचेस्कर तथा संक्रिया, ए स्टडि आफ प्राक्टिस टिचिंग आफ टिचर्स इन ट्रेनिंग (१९६०)

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य एवं उद्देश्य इस प्रकार थे ।

- प्रशिक्षणार्थी किस प्रकार इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं ।

- प्रशिक्षणार्थियों को किस प्रकार से लाभ होते हैं ।

- अध्यापन काल में उन्हें किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है ।

- वे निरीक्षकों से क्या सीख पाते हैं ।

- निरीक्षण किस सीमा तक प्रभावी रहा ।

न्यादर्श एवं उपकरण -

- प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सुधार के सम्बन्ध में क्या सुझाव दिए गए इत्यादि -

न्यादर्श एवं उपकरण -

अध्ययन हेतु जो न्यादर्श चुने गए थे सब गौहाटी विश्वविद्यालय के १९७० के बी०टी० के छात्र थे । अध्ययन हेतु जिस उपकरण का चुनाव किया गया वह थी छात्राध्यापन के सभी पहलुओं को धारण करने वाली प्रश्नावली ।

प्रमुख उपलब्धियाँ - (केवल पाठ निरीक्षण सम्बन्धित)

१) पाठ अध्यापन का निरीक्षण अत्यंत निम्न स्तर का रहा । केवल कुछ ही छात्राध्यापक ऐसे थे जिनके सभी पाठों का निरीक्षण किया गया ।

३) अध्यापन विधि सन्दर्भ में, अध्यापन-विधि सर्जों द्वारा
   योग्य सुझाव नहीं दी गई ।

सुझाव -

१) निरीक्षण में नियमितता हो चाहिए ।
२) छात्राध्यापन में दी जाने वाली पाठों की संख्या मर्यादा कम
   होनी चाहिए ।
३) अध्यापन - अभ्यास के सम्बन्ध में निश्चित किए गए नियमों को
   कठोरता से पालन किया जाना चाहिए ।
४) निरीक्षण कर्ताओं की संख्या में वृद्धि होनी चाहिए ।

(५) <u>शर्मा, अरुण, प्राब्लेम्स आफ स्टूडेन्ट टीचर्स इन कन्नौज,</u>

इस अध्ययन से जो उपलब्धी प्राप्त हुई है उसके अनुसार छात्राध्यापकों को अपने निरीक्षकों से अपनी कठिनाइयों के सम्बन्ध में चर्चा करने का अवसर नहीं मिल सके अतः परिणाम यह हुआ कि वे नियमित पाठ पढ़ाने में अधिक रुचि नहीं ले सके ।

(६) <u>त्रिपाठी, के०डी०, ए क्रिटिकल स्टडी आफ इन्टर्नशिप इन टिचिंग अट</u>
    <u>रीजनल कालेज आफ एजुकेशन भोपाल - १६७६</u>

प्रस्तुत अध्ययन संपूर्ण रूप से इन्टर्नशिप इन टिचिंग कार्यक्रम पर किया गया है । इन्टर्नशिप इन टिचिंग में समाविष्ट सभी प्रकार के कार्यकलापों तथा शैक्षिक एवं सहगामी क्रियाओं पर किया गया यह एक महत्वपूर्ण अध्ययन है । इन्टर्नशिप कार्यक्रम में समाहित छात्राध्यापन एवं महाविद्यालयीन -निरीक्षकों द्वारा इस छात्राध्यापन के निरीक्षण पर भी प्रस्तुत अध्ययन से प्रकाश डाला है

उद्देश्य -

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इन्टर्नशिप इन टीचिंग कार्यक्रम के सभी पहलुओं का अध्ययन करना तथा उनमें आने वाली कठिनाइयों व समस्याओं का अध्ययन कर उन्हें दूर करने के उपाय बताना है । प्री-इन्टर्नशिप आदर्श पाठ तथा प्रत्यक्ष इन्टर्नशिप एवं उसमें किया जाने वाला छात्राध्यापन, सहगामी क्रियायें पाठ निरीक्षण, तथा छात्रों में होने वाले गुणात्मक परिवर्तनों का संपूर्ण एवं व्यापक रूप से किया गया यह अध्ययन है ।

न्यादर्श -

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है । अध्ययन हेतु न्यादर्श इस प्रकार लिये गये हैं :

महाविद्यालयीन निरीक्षक - ३०

बी०एड० छात्राध्यापक - २००

सहयोगी शालाओं के निरीक्षण कर्ता - ४५

उपकरण -

इस अध्ययन के लिए प्रश्नावली तथा साक्षात्कार विधि का उपयोग किया गया है । महाविद्यालयीन निरीक्षण, सहयोगी शालाओं के निरीक्षण कर्ता तथा बी०एड० में पढ़ने वाले छात्राध्यापक इन सभी को अलग अलग प्रकार की प्रश्नावलियां दी गई तथा साथ ही में साक्षात्कार भी लिए गये तथा इन्टर्नशिप इन टीचिंग के कार्यक्रम के सम्बन्ध में इनके विचार जाने गये ।

अध्ययन की उपलब्धियां -

अध्ययन से निम्न उपलब्धियां प्राप्त हुई -

१) कक्षा में निरीक्षकों का अप्रत्याशित आना देखकर छात्राध्यापक खुश हुए ।

२) प्रशिक्षित निरीक्षक, अप्रशिक्षित निरीक्षकों की अपेक्षा अधिक अनुभवी थे ।

३) निरीक्षकों ने छात्राध्यापकों से पाठ निरीक्षण के पश्चात चर्चाएं की ।

४) ६० प्रतिशत से अधिक निरीक्षकों का विचार है कि उनके निरीक्षण एवं टिप्पणियों के ही कारण छात्राध्यापकों के छात्राध्यापन तथा अध्यापन कौशलों में सुधार हुआ है ।

५) निरीक्षकों ने निरीक्षण के समय अधिक से अधिक बल, कक्षाध्यापन तकनिक एवं विषयवस्तु के प्रस्तुतिकरण पर दिया है जब कि उनसे कम साधारणतया: सभी कार्य कलापों पर, उससे भी कम अध्यापन सामग्री पर तथा सबसे कम सौन्दर्य - सुधारों पर ।

६) निरीक्षकों ने विषयवस्तु तथा अध्यापन पद्धति दोनों ही बातों का निरीक्षण किया ।

७) ८० प्रतिशत निरीक्षकों के विचार से उनके द्वारा दी गई टिप्पणियों का परिणाम छात्राध्यापकों में रचनात्मक सुधार लाने में हुआ है ।

८) अध्यापिका संस्थाओं में निरीक्षकों ने मार्गदर्शक के रूप में काम करके छात्राध्यापकों की अध्यापन प्रणाली में सुधार के प्रयास किए तथा समस्या भी सुलझाई ।

९) सभी निरीक्षक व्यवहार में शुद्ध तथा समुचित थे । उन्होंने छात्राध्यापकों के सुधारों की प्रशंसा भी की ।

१०) ५७ प्रतिशत छात्राध्यापकों ने यह मत व्यक्त किया है कि कुछ निरीक्षकों ने पूर्ण समय तो कुछने न्यून समय तक पाठ निरीक्षण किये ।

११) ६६ प्रतिशत छात्राध्यापकोंने प्रगट किया की निरीक्षकों ने विषयवस्तु सम्बन्धी चुनाव तथा पाठ नियोजन में मदद की ।

१२) ७० प्रतिशत छात्राध्यापकों ने अनुभव किया कि, उनके द्वारा पढ़ाए जाने वालों पाठों का मूल्यांकन निरीक्षकों द्वारा पूर्ण रूपेण हुआ है ।

१३) छात्राध्यापकों को, शालाओं का निम्न स्तर, अनुशासन की समस्या, पढ़ाने हेतु योग्य एवं पर्याप्त कालांशों का अनुभव, निरीक्षकों के टिप्पणियों में असमानता तथा अध्यापन सामग्री का अभाव आदि पहलुओं के सम्बन्ध में कठिनाइयाँ निर्मित हुई ।

सुझाव -

१) निरीक्षक, निरीक्षण में पूर्ण रूप से रुचि लें ।
) वे छात्राध्यापकों को अधिक से अधिक सहयोग करें व दें ।
३) निरीक्षक समय पर स्कूल में जायें ।
४) छात्राध्यापक जिस भाषा में पाठ पढ़ाता है उस प्रादेशिक भाषा का ज्ञान निरीक्षकों को होना चाहिए ।
५) टिप्पणियाँ सुवाच्य अक्षरों में दी जाय तथा पाठ निरीक्षण के उपरांत छात्राध्यापकों से वे कठिनाइयों पर चर्चा करें ।
६) प्रत्येक पाठ का निरीक्षण होना चाहिए ।
७) प्रशिक्षित निरीक्षकों ने पाठ अध्यापन सम्बन्धी निम्न बातों में सुधार की आवश्यकता महसूस की ।

अ) विद्युत्त केरीकेशन ।

ब) उदाहरण तथा विषय वस्तु का स्पष्टीकरण ।

स) विषय वस्तु का प्रभावी आयोजन करने की क्षमता ।

द) विचारों के आदान प्रदान का कौशल तथा प्रशंसा ।

-o-

अध्याय - ३

अनुसंधान की पद्धति एवं प्रणाली

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य हमने इसके पहले स्पष्ट किये हैं। इस अध्ययन द्वारा हमें यह देखना है कि निरीक्षण में निरीक्षकों द्वारा लिखी टिप्पणियों के कारण छात्राध्यापक के शिक्षण कौशल में क्या प्रभाव पड़ा है। इस अध्याय में न्यादर्श चयन, उपकरण व्यक्तियों के विश्लेषण की पद्धति के सम्बन्ध में विवरण दिया जा रहा है जो कि अनुसंधान की प्रक्रिया के आवश्यक चरण हैं।

(१) न्यादर्श चयन -

प्रस्तुत अध्ययन के लिए हमने क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयीन निरीक्षक तथा क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों को चुना है।

१) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के निरीक्षक -

इस वर्ष, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय द्वारा विभिन्न सहयोगी शालाओं में आयोजित, इन्टर्नशिप इन टीचिंग कार्यक्रम के निरीक्षण कार्य में भाग लेने वाले महाविद्यालयीन निरीक्षकों की कुल संख्या ४६ थी। जिनमें ८ शिक्षक शिक्षा विभाग के थे, भाषा एवं साहित्य के २ वाणिज्य, २ कार्यानुभव, २ सामाजिक शास्त्र तथा १० विज्ञान के थे। प्रस्तुत निरीक्षकों में से हमने कुल २२ निरीक्षक न्यादर्श के रूप में चुने हैं, जिनका विभाजन निम्न प्रकार से है।

व्याख्याता शिक्षा विभाग	२
व्याख्याता दृश्य श्राव्य	१
व्याख्याता भाषा एवं साहित्य	२
व्याख्याता विज्ञान एवं गणित	

कार्यानुभव	१
वाणिज्य	१
	११

-- यादृच्छिक चुनाव, किसी विशिष्ट पद्धति द्वारा नहीं किया गया है अपितु उन्हें प्रश्नावलियाँ दी जाने पर जिनसे वे प्राप्त हो सकीं ऐसे निरीक्षकों के संख्या को न्यादर्श के रूप में लिया गया है ।

२) छात्राध्यापक

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों का भी न्यादर्श के रूप में चयन उपरोक्त पद्धति से ही किया गया है । इस वर्ष कुल २२६ छात्राध्यापकों ने छात्राध्यापन के कार्य में भाग लिया । उनमें से १४० छात्राध्यापकों का चयन भी उनके अपने न्यादर्श के तौर पर चुना है । यह १४० छात्राध्यापकों का चयन भी उनके द्वारा प्राप्त प्रश्नावलियों की संख्या के आधार पर ही किया गया है । उपरोक्त १४० छात्राध्यापकों में, विज्ञान भाषा, कृषि, वाणिज्य एवं कार्यानुभवों के छात्रों को लिया गया है । मराठी उर्दू, गुजराती हिन्दी तथा अंग्रेजी के पाठ पढ़ाने वाले छात्राध्यापक भी इनमें समाविष्ट हैं । भोपाल में तथा भोपाल से बाहर अन्य प्रान्तों के सहयोगी स्कूलों में पढ़ाने वाले छात्राध्यापक भी इनमें हैं । एक वर्षीय बी०एड० तथा इन्टिग्रेटेड बी०एस० के छात्र-छात्राओं का समावेश न्यादर्श में किया गया है ।

३) उपकरण एवं पद्धति -

तथ्य - प्राप्ति हेतु जिस उपकरण का निर्माण किया गया, वह है प्रश्नावली । प्रश्नावली को मुख्य २ प्रकारों में विभाजित किया गया ।

१) छात्राध्यापकों के लिए निर्मित प्रश्नावली ।

२) महाविद्यालयीन निरीक्षकों के लिए निर्मित प्रश्नावली ।

दोनों प्रकार की प्रश्नावलियों में अनेक प्रकार के प्रश्न पूछे गये जिनका स्वरूप प्रतिबन्धित भी था तथा खुला भी । क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के इन्टर्नशिप इन टीचिंग कार्यक्रम में प्रचलित निरीक्षण पद्धति के विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में छात्राध्यापक एवं निरीक्षकों के अभिप्राय: जानने हेतु अध्यापन सम्बन्ध में विभिन्न पहलुओं पर प्रश्न पूछे गये ।

१) <u>छात्राध्यापकों को दी गई प्रश्नावली</u>

यह प्रश्नावली दो भागों में विभक्त की गई है तथा इसमें कुल २९ प्रश्न है, जिनमें प्रतिबन्धित प्रश्नों की संख्या २५ तथा खुले प्रश्नों की संख्या ४ है । इन प्रश्नों कक्षाध्यापन, कक्षानुशासन, महाविद्यालयीन निरीक्षकों की भूमिका, निरीक्षण पद्धति एवं निरीक्षकों के निरीक्षण के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे गये हैं । छात्राध्यापकों को होने वाली कठिनाइयां तथा निरीक्षण पद्धति को सुधारने हेतु उनके विचार जानने के लिए खुले प्रश्नों द्वारा प्रश्न पूछे गये है ।

२) <u>निरीक्षकों को दी गई प्रश्नावली</u> -

निरीक्षकों को दी गई प्रश्नावली में, कुल २४ प्रश्न पूछे गये, जिनमें ६ प्रश्न खुले स्वरूप के तथा १८ प्रतिबन्धित स्वरूप के थे । निरीक्षकों की भी उनकी निरीक्षण सम्बन्धी भूमिका, उनका छात्राध्यापकों के साथ किया गया व्यवहार, निरीक्षण कार्य में रुचि, निरीक्षण में दी गई टिप्पणियां तथा निरीक्षण पद्धति के सुधार के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे गये । निरीक्षण पद्धति लाभप्रद है या नहीं इस पर भी प्रश्न पूछे गये । प्रतिबन्धित प्रश्नों द्वारा जिस विषय की जानकारी नहीं मिली उसे खुले प्रश्नों द्वारा प्राप्त किया गया । निरीक्षण पद्धति में समाहित कमियां तथा कमजोर पहलुओं के सम्बन्ध में भी उनका अभिमत जानने का प्रयास किया गया । प्रश्नावली को देने से पूर्व परीक्षण भी किया गया । मोटे तौर पर यह प्रश्नावली निरीक्षण पद्धति से सम्बन्धित निरीक्षकों का अभिमत तथा उन्हें निरीक्षण में

प्राप्त अनुभवों के सम्बन्ध जानकारी देती है । छात्राध्यापक का पैर्ड्रुणा पाठ योजना, प्रश्न पूछने की कला, श्यामपट्ट कार्य, दृश्य श्रव्य सामग्री तथा गृहपाठ आदि के सम्बन्ध में भी प्रश्न पूछे गए । वास्तव में यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या निरीक्षण पद्धति में मिली टिप्पणियाँ एवं निर्देशन के द्वारा छात्राध्यापक की अध्यापन पद्धति एवं कौशल में सुधार होता है तथा उनके व्यवहार में गुणात्मक परिवर्तन आता है ?

३) निरीक्षण पुस्तिका -

प्रश्नावली के साथ निरीक्षण -पुस्तिका का उपयोग भी तथ्यों के प्राप्ति हेतु किया गया । छात्राध्यापकों की केवल ६० निरीक्षण - पुस्तिकाओं को एकत्र करके प्रत्येक निरीक्षण पुस्तिका में से केवल २० पाठों का चयन तथ्यों की जानकारी एवं विश्लेषण हेतु किया गया । निरीक्षण - पुस्तिका में, छात्राध्यापकों के द्वारा पढ़ाए गए पाठों पर निरीक्षकों द्वारा मिली हुई टिप्पणियाँ एवं सुझाव होते हैं, जिनके द्वारा उनके दिन - प्रतिदिन प्रतिदिन के व्यवहार में परिवर्तन एवं छात्राध्यापक के कौशल में होने वाले सुधारों के सम्बन्ध में पता चलता है ।

इस प्रकार इन उपकरणों का उपयोग तथ्यों की प्राप्ति हेतु किया गया है ।

(४) तथ्यों का एकत्रीकरण एवं कठिनाइयाँ -

तथ्यों के प्राप्ति हेतु २० निरीक्षकों को प्रश्नावलीयां दी गई किन्तु उनमें से केवल १६ प्रश्नावलियां ही प्राप्त हो सकी । छात्राध्यापकों के सम्बन्ध में २२६ में से लगभग १७५ छात्राध्यापकों को प्रश्नावलीया दी गई किन्तु उनमें से केवल १४० ही वापिस मिली । जहाँ तक निरीक्षकों के सम्बन्ध में प्राप्त कठिनाइयों का प्रश्न है, कुछ निरीक्षकों को उनके आवश्यक एवं महत्वपूर्ण कार्यवश समय नहीं मिल सका या वे समय नहीं निकाल सके । कुछ निरीक्षक ऐसे थे जिन्होंने प्रश्नावली को भरने से इनकार कर दिया । कुछ निरीक्षकों में

प्रश्न। क्ती नहीं लौटाई, जो कुछ निरीक्षक महोदय ऐसे भी मिले जिन्होंने अनुसंधान कर्ता पर व्यंग्य कर के " यह सब बेकार एवं न करने की है " ऐसा कहकर प्रश्नावली भरने से इनकार कर दिया । कुछ निरीक्षक ऐसे थे जिन्होंने केवल, प्रश्नावली हिन्दी भाषा में होने के कारण उसे भरने से इनकार किया जब कि सत्य यह है कि वे हिन्दी अच्छी तरह बोल तथा लिख सकते हैं । अतः मुख्य रुप से प्रश्नावली भरने के सम्बन्ध में उदासीनता ही अनुसंधान कर्ता के लिए प्रमुख समस्या बनी रही ।

यहां छात्राध्यापकों के संबंध में भी यही समस्या है । बहुतों ने तो उसे भरने से ही इनकार कर दिया कारण था कि यदि वे निरीक्षकों के निरीक्षण के सम्बन्ध में सही विचार लिखते हैं तो कहीं यह बात उनके लिए कोई समस्या न बन जाय? समझा बुझा कर यह काम करवाना पड़ा । कई छात्राध्यापकों ने प्रश्नावली नहीं लौटाई । कुछ छात्रों ने कहा कि उन्हें पढ़ाई से ही अवकाश नहीं मिलता अतः व्यर्थ कि बातों में क्यों समय गवाएं । छात्राध्यापकों के सम्बन्ध में प्रश्नावली न भरने का प्रमुख कारण तो यह है कि सही विचार प्रगट करने से घबराते रहे । दूसरा कारण यह है कि बहुतों को इस समस्या के बारे में कोई समझ ही नहीं है । तीसरा कारण उदासीनता । कई छात्राध्यापक ऐसे मिले जिन्होंने प्रश्नावली के कई प्रश्न बिना उत्तर लिखे कोरे ही छोड़ दिए ।

उपरोक्त सभी प्रकार की समस्याओं का सामना करते हुए तथ्यों का एकत्रीकरण किया गया ।

(४) तथ्य एवं सामग्री का व्यवस्थापन -

तथ्य एवं आंकड़ों के संकलन के पश्चात् उनका व्यवस्थापन तथा सारणीयन किया गया । तदुपरान्त तथ्यों का एवं प्राप्त अभिमतों का सांख्यिकीय पद्धति से प्रतिशत निकाला गया । प्रत्येक प्रश्न - उपप्रश्नों के प्रतिशत निकालने के पश्चात् कुल प्रश्नों का प्रतिशत निकालने की प्रक्रिया अपनाई

गएँ । कुछ खुली प्रश्नों का प्रतिफल निकलने की प्रणाली के सारणियन में अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । यही बात निरीक्षण पुस्तिका के संदर्भ में हुई । निरीक्षण पुस्तिका में छात्राध्यापक की अध्यापन की विषय वस्तु के सम्बन्ध में विभिन्न पहलुओं पर लिखी टिप्पणियों की व्याख्या करना और उन्हें उन विभिन्न वर्गों में विभाजित करने में अत्यधिक कठिनाई हुई । कई ऐसी टिप्पणियाँ थीं जो निरीक्षण पुस्तिका में दिए गये किसी भी वर्ग में नहीं रखी जा सकती थीं उन्हें संभव होने पर उन्हीं वर्गों की तालिका में रखा गया तथा कुछ विशिष्ट टिप्पणियों के लिए निरीक्षण पुस्तिका में अलग से नए स्तंभ भी जोड़ने पड़े ।

निरीक्षण पुस्तिका में कई बार टिप्पणियाँ नहीं दी गई थी। ऐसी समय में उन्हें छोड़कर उसके आगे के पाठों पर लिखी टिप्पणियों पर विचार करना पड़ा । इस समस्या के कारण टिप्पणियों का क्रमशः विकास और निरीक्षण को छात्राध्यापकों में होने वाले परिवर्तनों का तिथि वार मापन नहीं हो सका ।

अध्याय-४

प्रश्नावली का अध्ययन व विश्लेषण -

इसका उल्लेख हमने पूर्व मे ही कर दिया है कि कुल ११ निरीक्षकों ने इस निरीक्षण कार्य में भाग लिया है जो कि न्यादर्श के रूप मे हमारे समक्ष है। इन ११ निरीक्षकों मे ५ निरीक्षक अप्रशिक्षित तथा शेष ६ प्रशिक्षण प्राप्त अर्थात बी०एड० उत्तीर्ण , जिनमें २ प्रशिक्षण रत है। हम सर्वप्रथम निरीक्षकों को दी गई प्रश्नावली का अध्ययन तथा विश्लेषण करेंगे।

(१) निरीक्षकों को दी गई प्रश्नावली का अध्ययन -

(१) निरीक्षकों को पाठ निरीक्षण के सम्बन्ध मे उनके अनुभव के सम्बन्ध मे पूछा गया जैसे- " आप कितने वर्षों से छात्राध्यापकों के पाठों का निरीक्षण कर रहे हैं ? " उस समय निम्न जानकारी मिली :

संभाव्य उत्तर	प्रतिशत
१ वर्ष से कम	१८. १८ प्रतिशत
२ वर्ष से ३ वर्ष	१८. १८ प्रतिशत
४ वर्ष से६ वर्ष	२७. २७ प्रतिशत
७ से १० वर्ष	९. ०९ प्रतिशत
१० से अधिक	२७. २७ प्रतिशत
	९९. ९९ प्रतिशत

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि ४ से ६ वर्ष तथा १० से अधिक वर्ष तक निरीक्षण कार्य करने वाले निरीक्षकों का प्रतिशत समान तथा दोनों का मिलकर ५४. ५४ प्रतिशत है। अत: हम कह सकते हैं कि ४ वर्ष से लेकर १० वर्ष

या उससे भी अधिक अनुभव प्राप्त निरीक्षकों का प्रतिशत ६३. ६३ प्रतिशत है। निष्कर्ष यह है कि निरीक्षण कार्य अधिकतर अनुभवी निरीक्षकों द्वारा ही किया गया है।

(२) निरीक्षकों के सम्बन्ध में छात्राध्यापकों की प्रतिक्रिया जानने हेतु जब पूछा गया कि " आप पाठ निरीक्षण हेतु जब कक्षा में बैठते हैं तब छात्राध्यापक की प्रतिक्रिया कैसी लगती है ? " प्राप्त जानकारी इस प्रकार थी :

संभाव्य उत्तर	प्रतिशत
सामान्य	३६ ३६ प्रतिशत
चिन्ताग्रस्त	२७ २७ प्रतिशत
उदासीन	६ ०६ प्रतिशत
खुश	१८ १८ प्रतिशत
अन्य	१८ १८ प्रतिशत
	९९ ९९ प्रतिशत

उपरोक्त तथ्यों द्वारा पता चलता है कि अधिकतर छात्राध्यापक सामान्य मनोवस्था में रहे जैसे ३६ ३६ प्रतिशत । १८ १८ प्रतिशत छात्राध्यापक खुश रहे। २७ २७ प्रतिशत छात्र जब चिन्ताग्रस्त हो जाते हैं तब ऐसा प्रतीत होता है कि वे प्रशिक्षण हेतु स्वयं नये हैं या उन्हें अध्यापन का पूर्वानुभव नहीं है या निरीक्षकों की अधिक उपस्थिति के कारण वे चिन्ताग्रस्त हैं। खुश एवं अन्य सामान्य मनोवस्था में रहने वाले छात्राध्यापकों को अध्यापन का पूर्वानुभव प्राप्त हो सकता है या उनमें अध्यापन हेतु पूर्ण आत्मविश्वास है। उदासीन रहने वाले छात्रों का प्रतिशत ६ ०६ प्रतिशत है तथा यह सबसे कम है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये छात्र जैसे तैसे प्रशिक्षण कार्य समाप्त करना चाहते हैं न उन्हें प्रशिक्षण कार्य से कोई लगाव है न ही शिक्षक व्यवसाय में रुचि है। १८ १८ प्रतिशत निरीक्षकों ने अन्य प्रतिक्रिया

व्यक्त की (१) कभी स्वाभाव सी कभी चिन्तायुक्त तथा कभी उदासीन सी कभी कुछ (२) कभी गंभीर और तत्पर रहे ।

(३) तालिका -१

निरीक्षकों द्वारा इस वर्ष विद्यालयों में पाठ निरीक्षण

विद्यालयों की संख्या	प्रतिशत
३ से कम	२७ २७ प्रतिशत
३ से ५	६ ०६ प्रतिशत
६ से ८	१८ १८ प्रतिशत
६ से १०	१८ १८ प्रतिशत
१० से अधिक	२७ २७ प्रतिशत
	१०० ०० प्रतिशत

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ६ से १० शालाओं तक या उससे भी अधिक शालाओं मे निरीक्षण करने वाले निरीक्षकों की संख्या ६३ ६३ प्रतिशत है । निष्कर्ष यह निकला है कि निरीक्षण कर्ताओं ने एक से अधिक शालाओं मे निरीक्षण कार्य किया है ।

(४) तालिका -२

पाठ निरीक्षण के पश्चात गल्तियों के सम्बन्धी छात्राध्यापकों से चर्चा.

संभाव्य उत्तर	प्रतिशत
नहीं की	---
थोड़ी बहुत की	५५ ५५ प्रतिशत

पूर्ण रूप से की	५४.५४ प्रतिशत
आवश्यकता ही नहीं समझी	---
समय नहीं मिला	---
	९९.९९ प्रतिशत

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि पाठ निरीक्षण के पश्चात अध्यापन संबंधी गल्तियों के सम्बन्ध में पूर्णरूपेण चर्चा करने वाले निरीक्षकों की संख्या ५४.५४ प्रतिशत है तथा थोड़ी बहुत चर्चा करने वालों का प्रतिशत ४५.४५ प्रतिशत है । निष्कर्ष यह निकलता है कि अधिकतर निरीक्षकों ने गल्तियाँ सुधारने हेतु पाठ निरीक्षण के पश्चात् चर्चा करना अत्यावश्यक समझा है ।

(५) पूछा गया कि टिप्पणियों के पश्चात् छात्राध्यापक की अध्यापन शैली में क्या कुछ सुधार देखे गये, अभिप्राय इस प्रकार थे:-

संभाव्य उत्तर	प्रतिशत
बिल्कुल नहीं	---
कुछ	६३.६३ प्रतिशत
बहुत अधिक	२७.२७ प्रतिशत
अन्य	१० प्रतिशत
	१०० प्रतिशत

उपरोक्त तथ्यों से पता चलता है कि ६३.६३ प्रतिशत निरीक्षकों के मतानुसार टिप्पणियों के पश्चात् कुछ न कुछ सुधार निश्चित हुआ है जबकि २७.२७ प्रतिशत निरीक्षकों के मतानुसार अध्यापन में अत्यधिक सुधार हुआ है । ९.१० प्रतिशत निरीक्षकों ने अन्य अभिप्राय दिया है जैसे - कभी सुधार दिखा

कभी नहीं तथा कुछ उदाहरणों में अधिक तथा कुछ में कम । निष्कर्ष यह है कि टिप्पणियों के पश्चात् अध्ययन शैली में सुधार होते हैं ।

(६) " क्या पाठ निरीक्षण तथा टिप्पणियों के कारण ही अध्यापन कौशल में विकास हुआ ? " ऐसा पूछने पर निम्न जानकारी मिली ।

संभाव्य उत्तर	प्रतिशत
जी हाँ उसके ही कारण	४५ ४५ प्रतिशत
उनके प्रतिदिन के अभ्यास के कारण	३६ ३६ प्रतिशत
अन्य कारण	१८ १८ प्रतिशत
	१०० % प्रतिशत

४५ ४५ प्रतिशत निरीक्षक मानते हैं कि टिप्पणियों के कारण ही अध्यापन कौशल में विकास हुआ है । ३६ ३६ प्रतिशत निरीक्षकों के मतानुसार यह विकास उनके प्रतिदिन के अभ्यास के कारण हुआ । कुछ निरीक्षकों ने अन्य अभिप्राय प्रकट किये हैं वे निम्न प्रकार हैं :-

(१) टिप्पणियां तथा अभ्यास दोनों के ही सम्मिलित कारणों से ।

(२) मार्गदर्शन पर बहुत कम विकास देखा ।

निष्कर्ष यह है कि अध्यापन कौशल में विकास में टिप्पणियों का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है ।

(१७) तालिका -३

टिप्पणियों के प्रति छात्राध्यापकों की प्रतिक्रिया.

प्रतिक्रिया	प्रतिशत
बहुत नाराज	---
कुछ कुछ दुःखी	२७ २७ प्रतिशत
दुखी	---

प्रसन्न हुए	63.63%
बहुत प्रसन्न हुए	9.10%
	100.0%

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है कि 63.63% निरीक्षकों के विचार से अधिकतर छात्राध्यापक प्रसन्न हुए हैं। "अत्याधिक प्रसन्न हुए हैं" इस पक्ष में अभिप्राय देने वाले निरीक्षकों का प्रतिशत 9.10% है। कुछ कुछ छात्राध्यापक दुखी हुए किन्तु निष्कर्ष यह दर्शाता है कि टिप्पणियाँ प्राप्ति के संदर्भ में छात्राध्यापक अत्यन्त प्रसन्न नहीं होते पाते अर्थात उनका विचार है कि टिप्पणियों के द्वारा ही उनके अध्यापन सम्बन्धी दोषों का निर्देशन होता है तथा अध्यापन में सुधार होते हैं।

(12) निरीक्षकों से पूछा गया कि क्या आपने अपनी टिप्पणी द्वारा छात्राध्यापक के केवल दोष बताये या आलोचना की ? प्राप्त अभिप्राय निम्न प्रकार से है :-

अभिप्राय उत्तर	प्रतिशत
केवल दोष	-
गुण दोष दोनों	100%
केवल गुण ही बताए	-
	100%

उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि निरीक्षक ने छात्राध्यापक को दी गई टिप्पणियाँ गुण दोष दोनों को दर्शाने वाली थीं, केवल गुणों को दर्शाने वाली ही नहीं। उपरोक्त जानकारी से अनुमान यह निकाला जा सकता

है कि, छात्राध्यापक की अध्यापन सम्बन्धी प्रभावशीलता बढ़ाने में उनके गुण तथा दोषों पर समान रूप से प्रकाश डालना अत्यधिक आवश्यक है। अर्थात गुण दोष दोनों ही रूप में स्पष्ट टिप्पणियां की गई।

(12) पूछा गया कि पाठ निरीक्षण के समय कक्षा में बच्चों के समक्ष छात्राध्यापक को डांटना वे कब उचित समझते हैं, प्राप्त उत्तर निम्न प्रकार से है :-

प्रतिक्रिया	प्रतिशत
एक बार गलती करने पर	-
बहुत बार गलती करने पर	-
बार बार गलती करने पर	-
हमेशा गलती करने पर	27•27%
अन्य अभिप्राय	72•73%
	100%

प्रस्तुत तथ्यों से पता चलता है कि छात्राध्यापक के सदैव गलती करने पर ही उन्हें छात्रों के समक्ष डांटना उचित समझने वाले निरीक्षकों का प्रतिशत 27•27% है। सर्वाधिक प्रतिशत उनका है जिन्होंने अन्य अभिप्राय दिये हैं जैसे :- पाठ समाप्त होने के उपरान्त। निष्कर्ष रूप निकलता है कि अधिकतर निरीक्षक, छात्राध्यापक की कक्षा में बच्चों के समक्ष डांटना अनुचित समझते हैं। उनकी दृष्टि से डांटना भी है तो पाठ निरीक्षण के पश्चात तथा सदैव गलती करने पर। अर्थात पहले पूर्ण उनके द्वारा स्नेह से छात्राध्यापक की कमियां सुधारने के प्रयत्न निश्चित रूप से किये जाते हैं।

(13) तालिका - 4 -

निरीक्षकों द्वारा पाठ निरीक्षण में दिया गया समय

समय विभाजन	प्रतिशत
पूर्ण समय तक	63.63 %
आधे समय तक	27.27 %
10 मिनिट के लगभग	9.10 %
बहुत थोड़ा समय	-
बिल्कुल नहीं	-
	100.00 %

उपरोक्त तालिका से निरीक्षकों द्वारा पाठ निरीक्षण में दिये गये समय का स्पष्टीकरण होता है । पूर्ण समय तक निरीक्षण करने वाले निरीक्षकों की संख्या 63.63% है, जबकि अर्ध समय तक निरीक्षण करने वाले निरीक्षकों की संख्या 27.27% है । दस मिनिट के लगभग निरीक्षण करने वालों की संख्या अतिशय कम है जो कि 9.10% ही है । निष्कर्ष यह निकलता है कि निरीक्षकों ने पूर्ण कालीन पाठ निरीक्षण पर अधिक जोर दिया तथा पूर्ण कालीन निरीक्षण को ही उचित निरीक्षण समझने वाले निरीक्षकों की संख्या अधिक थी ।

(14) तालिका - 5 -

निरीक्षण विधि की उपयोगिता के संबंध में मत

अभिप्राय	प्रतिशत
बहुत उपयोगी	63.63 %

उपयोगी	9.10 %
कुछ कुछ उपयोगी	27.27 %
उपयोगी नहीं	-
	100.00 %

उपरोक्त तालिका द्वारा स्पष्ट है कि 63.63 % निरीक्षकों की दृष्टिकोण से पाठ निरीक्षण पद्धति अत्याधिक उपयोगी है । 27.27 % निरीक्षकों ने अपने अभिप्राय से उसे कुछ कुछ उपयोगी बताया है । जिनकी अब तक प्रचलित पाठ निरीक्षण पद्धति अत्यधिक ही उपयोगी हो सकती है । निरीक्षण पद्धति उपयोगी नहीं है ऐसा अभिप्राय किसी ने भी व्यक्त नहीं किया है ।

(15) तालिका - 6 -

निरीक्षकों द्वारा पाठ निरीक्षण में प्रोफार्म का उपयोग

अभिप्राय	प्रतिशत
पूर्ण रूप से किया गया	63.63 %
थोड़ा बहुत	-
कभी कभी	-
बिल्कुल नहीं	27.27 %
आवश्यकता नहीं समझी	9.10 %
	100.00 %

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 63.63 % निरीक्षकों

ने पाठ निरीक्षण में प्रोबिंग शीट का उपयोग किया है। 27.27 % निरीक्षकों ने मात्र इस विधि का उपयोग नहीं किया। 9.10% निरीक्षकों ने आवश्यकता महसूस नहीं की। निष्कर्ष यह है कि प्रोबिंग शीट विधि निरीक्षण में अधिक मात्रा में उपयोग में लाई गई। अतः उसकी उपयोगिता निश्चित ही प्रगट होती है।

(17) तालिका - 7 -

निरीक्षकों द्वारा पाठ निरीक्षण किये जाने वाले
छात्राध्यापकों की संख्या

छात्राध्यापक	निरीक्षक	योग्यता	अनुभव
20	3	अप्रशिक्षित	1 वर्ष से कम
50	2	अप्रशिक्षित	4 से 6 वर्ष
		प्रशिक्षित	2 से 3 वर्ष
20	2	अप्रशिक्षित	2 से 3 वर्ष
		प्रशिक्षित	10 से अधिक
30	2	प्रशिक्षित	4 से 6 वर्ष
		प्रशिक्षणरत	10 से अधिक
40	2	प्रशिक्षणरत	7 से 10
		प्रशिक्षित	10 से अधिक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षित एवं अनुभवी निरीक्षकों ने ही निरीक्षण कार्य में अधिक मात्रा में भाग लिया है। जैसे :-

50 छात्राध्यापकों के पाठों का निरीक्षण करने वाले निरीक्षकों में एक निरीक्षक प्रशिक्षित तथा उन्हें तीन वर्षों का अनुभव है तथा एक अप्रशिक्षित किन्तु उन्हें 4 से 6 वर्ष का अनुभव है। 40 छात्राध्यापकों के पाठों का निरीक्षण करने वाले 2 निरीक्षक जो कि 10 वर्ष तथा उससे भी अधिक अनुभव रखते हुए भी प्रशिक्षित तथा एक प्रशिक्षणार्थ है। 30 छात्राध्यापकों के पाठों का निरीक्षण भी ठीक इसी प्रकार हुआ है। निष्कर्ष यह निकलता है कि पाठों निरीक्षण कार्य में अत्यधिक अनुभवी एवं प्रशिक्षित निरीक्षकों ने ही भाग लिया है। अल्पानुभवि एवं अप्रशिक्षित निरीक्षकों के निरीक्षण पर अधिक बल नहीं दिया गया है अर्थात अनुभवी एवं प्रशिक्षित निरीक्षकों के निरीक्षण एवं टिप्पणियों में अधिक विश्वसनीयता होती है इस बात का ध्यान रखा गया है।

(18) निरीक्षण में अध्यापन के साथ साथ छात्राध्यापक की वेशभूषा, सेवा आदि बातों पर भी क्या आपने टिप्पणियां दी ? ऐसा प्रश्न पूछने पर निम्न जानकारी मिली

अभिप्राय	प्रतिशत
बहुत	18.18 %
कुछ	27.27 %
बिल्कुल नहीं	54.55 %
	100.00 %

उपरोक्त प्रश्न के अध्ययन से यह पता चलता है कि 54.55 % निरीक्षकों ने वेशभूषा, सेवा आदि बातों पर तनिक भी टिप्पणियां नहीं दी। शेष निरीक्षकों ने मात्र दी है। अतः यह ज्ञात होता है कि उपरोक्त

पक्षों पर टिप्पणियाँ देना अनुचित समझा गया है । जिस आवश्यकता होने पर ही उन बातों पर टिप्पणियाँ दी गईं ।

(7) पूछा गया है कि छात्र निरीक्षण के पश्चात छात्राध्यापक के अध्यापन कौशल सम्बन्धी किन विषयों में निरीक्षकों ने सुधार निर्देश दिये तब निम्न प्रकार से जानकारी मिली :-

तालिका - 8 -

क्रमांक	अध्यापन कौशल के प्रकार	प्रतिशत
अ)	पढ़ाने की विधि	63.63 %
ब)	प्रश्न पूछने का कौशल	54.54 %
स)	श्यामपट्ट कार्य	36.36 %
द)	कक्षानुशासन	36.36 %
य)	विषय वस्तु प्रस्तुतीकरण	63.63 %
र)	विद्यार्थियों की रुचि एवं ध्यान	27.27 %
ल)	अन्य कौशल	9.10 %

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि निरीक्षकों द्वारा अध्यापन कौशल सम्बन्धी सर्वाधिक बल पढ़ाने की विधि तथा विषय वस्तु प्रस्तुतीकरण पर दिया गया है; कारण दोनों पक्षों का प्रतिशत सर्वाधिक अर्थात 63.63% है । उसके पश्चात प्रश्न पूछने के कौशल पर अधिक बल दिया गया है कारण उसका प्रतिशत 54.54% है । उसी प्रकार क्रमशः श्यामपट्ट कार्य एवं कक्षानुशासन, विद्यार्थियों की रुचि एवं ध्यान, इन पक्षों पर बल दिया गया है । कुछ निरीक्षकों ने अन्य पक्षों पर भी बल दिया जैसे प्रदर्शन पद्धति आदि है । निष्कर्ष यह है कि

अध्यापन कौशल सम्बन्धी और विषयों में निरीक्षण के पश्चात सुझाव दिया गये अध्यापक का निरीक्षण में प्रस्तुत टिप्पणी का प्रभाव है ।

(0 · 9)

तालिका ' 9 '

निरीक्षकों के भाषाओं का ज्ञान तथा पाठों का निरीक्षण

भाषाएँ	भाषाओं का ज्ञान लिखना तथा पढ़ना प्रतिशत	भाषाओं में पाठ निरीक्षण प्रतिशत
अंग्रेजी	100 %	90.90 %
हिन्दी	100 %	90.90 %
मराठी	27.27%	45.45 %
उर्दू	0.00%	18.18 %
गुजराती	0.00%	9.09 %

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि निरीक्षकों को हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा का पूर्ण रूप से ज्ञान है । मराठी भाषा जानने वाले निरीक्षकों का प्रतिशत 27.27 % है उससे यह स्पष्ट है कि मराठी भाषा के जानकारों की संख्या अत्यधिक कम है तथा उर्दू एवं गुजराती को जानने वाले मात्र शून्य ही कम हैं । भाषाओं के ज्ञान के अनुसार एवं जहाँ तक विभिन्न भाषाओं में पाठ निरीक्षण का प्रश्न है तब स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक पाठ अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषाओं में निरीक्षण किये गये जो सामान्यतः सभी की जानकारी की भाषा है । किन्तु मराठी उर्दू, गुजराती आदि भाषाओं में पाठ निरीक्षण के प्रतिशत के आधार पर स्पष्ट होता है कि उन भाषाओं

का ज्ञान न होते हुए भी उनमें पाठ निरीक्षण हुआ है । अतः इस आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि जब इस प्रकार का निरीक्षण होता है तब तो इस में वह निरीक्षण नहीं हो पाता । भाषा के ज्ञान के अभाव में निबन्धात्मक, अनुवादात्मक, [illegible] व्याख्यात्मक आदि प्रश्नों का निरीक्षण नहीं हो पाता । फलतः केवल श्रुतलेखन, प्रश्न पूछने की कला तथा श्यामपट्ट कार्य आदि का ही निरीक्षण होता है । इस प्रकार का निरीक्षण अपूर्ण होता है अतः आवश्यकता प्रतीत होती है कि इन सभी भाषाओं को निरीक्षक जानें तथा इसी कारण यह कठिनाई यहाँ पर उपस्थित होती है तथा यह भाषाएँ कठिन नहीं हैं । यहाँ आधार भी ... जा सकता है ।

(18) तालिका - 10 -

विभिन्न विषयों में पाठ निरीक्षण का प्रतिशत

विषय	प्रतिशत
गणित	72.72 %
विज्ञान - भौतिकी, रसायनिकी, जीवकी	90.90 %
वाणिज्य	54.54 %
कृषि	9.10 %
भाषा	63.63 %
नागरिक शास्त्र	45.45 %
इतिहास	54.54 %
[illegible]	63,63 %

उपर्युक्त तालिका से यह जानकारी मिलती है कि सर्वाधिक पाठ विज्ञान विषय के जिनमें भौतिकी, रसायनिकी एवं जीवकी समाविष्ट है निरीक्षण किये गये । तदुपरान्त क्रमशः गणित, भाषा तथा [illegible],

एवं प्रतिभाग का शिक्षकों की पद्धति की [illegible] का [illegible]
है।

प्रश्नावली में समाविष्ट खुले प्रश्नों का [illegible] एवं विश्लेषण

(19) [illegible] पूछा गया कि छात्राध्यापक के [illegible] शिक्षण वस्तु के संबंध में निरीक्षक ने जो टिप्पणी दी है उसे [illegible] किस प्रकार से प्राप्त हुए।

100% निरीक्षकों ने इस प्रश्न के उत्तर दिये हैं। शिक्षण वस्तु के संबंध में जो टिप्पणियाँ की गई हैं [illegible] प्रकार से हैं कुछ टिप्पणियाँ ऐसी हैं [illegible] प्रयोग में [illegible] स्पष्ट करती हैं। अधिकतर टिप्पणियाँ [illegible] से संबंधित हैं। [illegible] प्रश्न प्रणाली के द्वारा [illegible] स्पष्ट होता है।

तालिका - 11 -

पाठ में विषय वस्तु के संबंध में दी गई टिप्पणियाँ

क्रमांक	टिप्पणियाँ	प्रतिशत
1.	विषयवस्तु को अच्छी तरह से व्यवस्थित किया गया है या नहीं।	10.18 %
2.	प्रस्तुतीकरण की शैली रोचक एवं प्रभावशाली है या नहीं	27.27 %
3.	विषयवस्तु छात्र के पूर्वज्ञान से संबंधित है या नहीं	9.10 %
4.	विषयवस्तु पर अध्यापक का प्रभुत्व है या नहीं	13.18 %
5.	संकल्पनाओं का स्पष्टीकरण उचित ढंग से किया गया है या नहीं	10.18 %

6.	नये शीर्ष कार्यों पर कार्य किया करें	9.10 %
7.	विषय वस्तु को गति एवं क्रम न पढ़ाएँ	27.27 %
8.	विषय वस्तु के अध्यापन विधान में छात्रों की सहभागिता रहें	9.10 %
9.	पाठ्यक्रम अनुसूचियाँ बनाएँ	9.10 %
10.	दृश्य श्रव्य सामग्री का उपयोग करें	18.18 %
11.	रोचक	9.10 %
12.	उत्तम	9.10 %
13.	अपूर्ण	9.10%
14.	उच्च ढंग वाला	9.10 %
15.	विषयवस्तु निर्धारित समय में पूर्ण नहीं करते हैं	9.10 %
16.	क्या शिक्षक से प्रश्न पूछता है ?	9.10 %
17.	छात्रों के मानसिक परिपक्वता को ध्यान में रखकर पढ़ाता है ?	9.10%
18.	पुनः पुनः उच्चारण के द्वारा शब्दों की ... शब्दों का अभ्यास कराना चाहिए	9.10 %
19.	जीवन के दैनिक के अनुभवों के उदाहरणों के रूप में दीजिए	9.10 %
20.	कक्षा में सरल वाक्यों का प्रयोग कीजिए	9.10 %
21.	विषयवस्तु का प्रस्तुत उचित ढंग से प्रस्तुत किया गया है या नहीं ?	18.18 %

प्रस्तुत तालिका से यह स्पष्ट होता है कि उपरोक्त 21 प्रकार की टिप्पणियों में कुछ टिप्पणियों पर अधिक बल दिया गया है जैसे विषयवस्तु का संगठन, प्रस्तुतीकरण करने की शैली, विषयवस्तु पर प्रभुत्व, अवधारणाओं का उचित स्पष्टीकरण, सही व विषयवस्तु के अध्यापन का निर्धारण, दृश्य श्रव्य सामग्री द्वारा विषयवस्तु का प्रतिपादन इत्यादि ।

(20) प्रश्न पूछा गया कि पाठ निरीक्षण में अध्यापन कौशल के किन पक्षों पर निरीक्षकों ने ध्यान दिया एवं निरीक्षण किया तब निम्न प्रकार के उत्तर प्राप्त हुए :

90.90% उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के उत्तर दिये हैं ।

तालिका - 12 -

अध्यापन कौशल में निरीक्षण किये गये विभिन्न बिन्दु

क्रमांक	अध्यापन कौशल के बिन्दु	प्रतिशत
1.	श्यामपट्ट लेखन तथा पाठ प्रस्तावना	9.10 %
2.	पुनर्बलन एवं मूल्यांकन	18.18 %
3.	प्रश्नों का विवरण, प्रश्न करने की तकनीक तथा प्रश्नों का सह सम्बन्ध	27.27 %
4.	अध्यापन सामग्री	45.45 %
5.	छात्रों का सहयोग तथा अध्यापन में उनकी रुचि	9.10 %
6.	कक्षानुशासन	9.10 %
7.	छात्रों की प्रशंसा तथा प्रोत्साहन	27.27 %
8.	स्थिति के आवश्यकतानुसार अध्यापन प्रणाली	36.36 %
9.	पुनर्शीलता	9.10 %
10.	कक्षा के अन्तिम पंक्ति में बैठे हुए छात्रों की ओर ध्यान देना	9.10 %
11.	पूर्व ज्ञान का परीक्षण	9.10 %
12.	विषयवस्तु का विश्लेषण	27.27 %
13.	उद्देश्य	9.10 %
14.	स्वर एवं आवाज की स्पष्टता तथा मधुरता	9.10 %

15.	कक्षा में छात्र-अध्यापक सहयोग	9.10 %
16.	छात्राध्यापक में अभिव्यक्ति की क्षमता एवं रुचि	9.10 %
17.	एक सम्पूर्ण दिवस में समायोजित तथा युग	9.10 %
18.	छात्राध्यापक की अध्यापन में प्रयुक्त भाषा	9.10 %
19.	योजना के विभिन्न सोपान	9.10 %
20.	वेश भूषा तथा वेश	9.10 %
21.	प्रदर्शन (डिमान्सट्रेशन)	9.10 %
22.	छात्रों से प्राप्त विभिन्न प्रकार के उत्तर छात्राध्यापकों को बोलने पर क्या प्रेरित करते हैं ?	9.10 %

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि निरीक्षण कर्ताओं ने कुल 22 अध्यापनकौशलों पर अपना ध्यान केन्द्रित करके निरीक्षण किया किन्तु उन वस्तु में से जिन वस्तुओं पर अधिक ध्यान दिया वे निम्न प्रकार हैं:- पाठ प्रस्तुतीकरण एवं ... प्रश्नों का वितरण एवं सम्बोध, अध्यापन सामग्री, छात्रों की प्रशंसा एवं प्रोत्साहन, समय एवं स्थिति के अनुसार अध्यापन प्रणाली तथा विषय वस्तु का विश्लेषण इत्यादि ।

(21) तालिका - 13 -

निरीक्षण पद्धति को अधिक उपयोगी एवं प्रभावशाली बनाने

: हेतु उपाय :

क्रमांक	उपाय एवं अभिप्राय	प्रतिशत
1.	एक कालांश में न्यूनतम छात्राध्यापकों के पाठों का निरीक्षण कीजिए	9.10 %
2.	सम्पूर्ण कालीन निरीक्षण की ली जाय है	27.27 %

3. छात्राध्यापकों के स्पष्टीकरण होने चाहिये।
विषय वस्तु का पूर्ण निरीक्षण करके ज्ञान देना चाहिए — 9.10 %

4. पाठ योजना के पुरानी तकनीकों में परिवर्तन होते रहना चाहिये — 9.10 %

5. समय एवं स्थिति के अनुसार पाठ योजना के परिवर्तन में निरीक्षकों को सक्रिय मदद देनी चाहिये — 9.10 %

6. अध्यापन सामग्री में सुधार हो तथा उसका पूर्ण उपयोग हो — 9.10 %

7. छात्राध्यापकों की वेश भूषा आडम्बरहीन रहे — 9.10 %

8. शैक्षिक उद्देश्य के प्रदर्शन का आयोजन होना चाहिये — 9.10 %

9. पाठाध्यापन एवं निरीक्षण क्रम पूर्ण होने पर दूसरे दिन के पाठ के लिये छात्राध्यापकों से निरीक्षकों द्वारा विचार विमर्श तथा गुण दोषों पर विचार होना चाहिये — 9.10 %

10. छात्राध्यापक के आवाज स्पष्ट है या नहीं इस पर ध्यान दें — 9.10 %

11. शिक्षणकार्य व्यक्तिगत कुशलता से होने चाहिये — 9.10 %

12. अध्यापन में छात्रों के रुचि एवं सहभाग होना चाहिये — 9.10 %

13. निरीक्षक को विषयवस्तु तथा अन्य भाषाओं का ज्ञान होना चाहिये — 9.10 %

14. विज्ञान पाठ में प्रदर्शन तकनीक पर बल देना चाहिये — 9.10 %

15. विज्ञान पाठ में समस्या समाधान प्रणाली पर बल देना चाहिये — 9.10 %

16. छात्राध्यापकों की वास्तविक प्रगति के सम्बन्ध में निरीक्षकों से प्रधानाध्यापक तथा अन्य अधिकारियों से चर्चा होनी चाहिये — 9.10 %

17.	सेमिनार का कार्यक्रम आदर्श शालाओं में आयोजित किया जावे	9.10 %
18.	छात्राध्यापकों अध्यापन के समय निरीक्षकों के द्वारा हतोत्साहित नहीं किया जाना चाहिये तथा न ही उन्हें पाठाध्यापन में व्यवधान हो	9.10 %
19.	पाठ योजना के अभाव में छात्राध्यापक को कक्षा में अध्यापन की अनुमति नहीं देना चाहिये	9.10 %
20.	जब भी शालाओं में निरीक्षण करें तो निरीक्षण कार्य के लिये पारिश्रमिक दिया जाय	9.10%
21.	हर निरीक्षण कर्ता की एक आदर्श तथा सर्वमान्य निरीक्षण प्रणाली एवं अध्यापन प्रणाली होना चाहिये	9.10 %
22.	निरीक्षक प्रशिक्षित एवं अनुभवी हो	9.10 %
23.	निरीक्षण पद्धति अधिक मात्रा में वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ होनी चाहिये	9.10 %
24.	हर निरीक्षक की टिप्पणियाँ भिन्न भिन्न न हों इसलिये सामूहिक उपयोजना की जाय	9.10 %
25.	टिप्पणियाँ अस्पष्ट नहीं होना चाहिये	9.10 %

प्रस्तुत तालिका में यह स्पष्ट होता है कि अधिकतर टिप्पणियों में अध्यापन सम्बन्धी सभी बातों पर बल दिया गया है । पूर्वकालीन पाठ निरीक्षण पर मात्र अधिक निरीक्षकों ने अपने अभिप्राय दिये हैं । पाठ निरीक्षण के पश्चात छात्राध्यापकों की गलतियों पर चर्चा करना, पाठ नियोजन तथा समस्याओं पर परामर्श देना, छात्राध्यापक को कक्षा में न टोकना तथा निरीक्षण पद्धति को अधिक वैज्ञानिक बनाने हेतु प्रयत्न करना आदि सुझाव दिये गये हैं । आदर्श शालाओं में सेमिनार कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव यह दर्शाता है । य अन्य शालाओं में सभी सुविधाएँ तथा साधन सामग्री उपलब्ध

नहीं होती । इन बातों के अभाव में छात्राध्यापक, छात्राध्यापन कुशलता में अधिक प्रभावशाली नहीं हो पाते हैं । अतः शालाओं में इन सुविधाओं की उपलब्धि से इस समस्या का समाधान हो सकता है । निष्कर्ष यह है कि उपरोक्त सुझावों का पालन करने से निरीक्षण पद्धति और भी अधिक प्रभावशाली हो सकती है ।

(22) तालिका - 14 -

निरीक्षकों के निरीक्षण पुस्तिका सम्बन्धी सुझाव

क्रमांक	सुझाव	प्रतिशत
1.	निरीक्षण पुस्तिका की टिप्पणियों के वर्ग में छात्राध्यापक की कुशलता का पक्ष भी अंकित होना चाहिये	9.10 %
2.	निरीक्षकों को अपने कालांश में छात्राध्यापकों के नाम भी लिख लेने चाहिये जिनका कि पाठ निरीक्षण हो चुका है	9.10 %
3.	निरीक्षण पाठ एवं सरल पाठ के लिये अलग अलग निरीक्षण पुस्तिकाओं का प्रयोग होना चाहिये	9.10 %
4.	निरीक्षण पुस्तिका आकार में बड़ी होनी चाहिये क्योंकि उनमें टिप्पणियां लिखने में जगह कम है	9.10 %

निरीक्षण पुस्तिका सम्बन्धी उपरोक्त सुझावों पर ध्यान दिया जाना चाहिये तथा निरीक्षण पद्धति में निरीक्षण पुस्तिका का वैज्ञानिक योगदान प्राप्त होगा तथा छात्राध्यापक की अध्यापन सम्बन्धी प्रभावशीलता बढ़ेगी ।

(25) निरीक्षकों से पूछा गया कि छात्राध्यापकों के निर्देशन व पाठ निरीक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व कार्य विधि में भाग लेकर निरीक्षण को अधिक से अधिक वस्तुनिष्ठ बनाने के लिये वे छात्राध्यापकों के साथ किन बातों पर विचार विमर्श करना चाहेंगे ?

प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर में प्राप्त अभिमत निम्न प्रकार है । लगभग 80% निरीक्षकों ने इस प्रश्न के उत्तर में अपने अभिमत दिये हैं :-

अभिमत :

(1) विषयवस्तु में निहित महत्वपूर्ण संकल्पनायें
(2) उन संकल्पनाओं के अनुसार शिक्षण अध्यापन प्रणालियाँ
(3) अध्यापन साधन सामग्री तथा दृश्य श्रव्य साधनों द्वारा छात्रों पर प्रभाव
(4) विद्यालयीन समस्यायें
(5) छात्राध्यापक का व्यवहार एवं प्रगति
(6) छात्राध्यापक का मानसिक तनाव
(7) पाठ नियोजन तथा अध्यापन प्रणाली की जानकारी
(8) वेश भूषा एवं व्यक्तित्व शैली
(9) बच्चों से उत्तर प्राप्त करने में उचित वातावरण
(10) मूल्यांकन विधि
(11) अध्यापन में प्रयुक्त किये जाने वाली युक्तियों के प्रकार
(12) प्रश्न पूछने के प्रकार
(13) भाषा तथा वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली
(14) [illegible] अनुक्रिया
(15) श्यामपट्ट कार्य तथा लेख

उपरोक्त आँकड़ों से निष्कर्ष निकलता है कि पाठ निरीक्षण या निरीक्षण पद्धति प्रभावी रूप से कार्यान्वित होने के लिये निरीक्षक वर्ग को उपरोक्त बातों को प्रधानाध्यापकों से चर्चा करना आवश्यक है । यदि ऐसा होता है तो निरीक्षण पद्धति निश्चित प्रभावशाली होगी ।

(24) निरीक्षण पद्धति से पूरा लाभ उठाने तथा निरीक्षण को अधिक उपयोगी एवं प्रभावशाली बनाने के लिये उनसे सुझाव लिये गये, निम्न प्रकार के सुझाव प्राप्त हुए :-

सुझाव

(1) निरीक्षण इस प्रकार आयोजित किया जाना चाहिये कि एक सप्ताहभर दो निरीक्षक शाला में उपस्थित रह सकें जिनमें एक विषयविशेषज्ञ तथा दूसरा [illegible] हो तब निरीक्षण कार्य उचित ढंग से होगा ।

(2) निरीक्षक अनुभवी होना चाहिये ।

प्रधानाध्यापकों की दी गई जानकारी का
अध्ययन तथा विश्लेषण

कुल 140 प्रधानाध्यापकों को यह प्रश्नावली दी गई तथा प्रश्नावली द्वारा जो जानकारी प्राप्त हुई है वह निम्न प्रकार है:-

(1) प्रधानाध्यापकों से पूछा गया कि कुल कितने निरीक्षकों ने उनकी शाला का निरीक्षण किया तब निम्न प्रकार की जानकारी प्राप्त हुई :-

निरीक्षक	प्रतिशत
3 से कम	[illegible]

3 से 5	17 %
6 से 8	54 %
9 से 12	24 %
	100 %

उपरोक्त तथ्यों से यह पता चलता है कि 54 % छात्राध्यापकों के पाठों का निरीक्षण 6 से 8 निरीक्षकों द्वारा हुआ है। 24% छात्राध्यापकों का पाठ निरीक्षण 9 से 12 निरीक्षकों द्वारा हुआ है तथा ऐसे कुछ छात्र हैं जिनका पाठ निरीक्षण 3 से भी कम निरीक्षकों द्वारा हुआ है। निष्कर्ष यह निकलता है कि निरीक्षकों की अधिक संख्या के कारण ही अधिक पाठों का निरीक्षण हुआ है तथा कम निरीक्षकों के कारण पाठ निरीक्षण की संख्या भी कम है।

(2) तालिका - 15

निरीक्षकों द्वारा अध्यापन सम्बन्धी निम्न पहलुओं पर ध्यान

क्रमांक	विभिन्न अध्यापन के पहलू	प्रतिशत
अ)	पढ़ाने का ढंग व विधि	74 %
ब)	विषय वस्तु प्रस्तुतीकरण	59 %
स)	श्यामपट्ट कार्य	50 %
द)	प्रश्न पूछने की कला	67 %
य)	छात्रों का प्रत्युत्तर	53 %
र)	वेश भूषा	17 %
ल)	अन्य	9 %

उपरोक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि निरीक्षकों के द्वारा पाठ निरीक्षण में अध्यापन सम्बन्धी अधिकतर ज्ञान, पढ़ाने का ढंग या विधि, प्रश्न पूछने की कला, विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण, छात्रों का सहभाग तथा श्यामपट्ट कार्य इन पक्षों पर दिया गया है। वेश भूषा आदि पर सबसे कम टिप्पणियां दी गई। कुछ छात्राध्यापकों ने अन्य पक्षों का भी वर्णन किया है जिन पर कुछ मात्रा में निरीक्षण में ध्यान दिया गया जैसे :- कक्षा में अनौपचारिक वातावरण, सहायक सामग्री, पाठ नियोजन, प्रदर्शन पद्धति, कठिन शब्द बताने की विधि, भाषा शैली तथा उच्चारण, समय नियोजन, अनुशासन, छात्र निर्देश [illegible], आत्म विश्वास, पाठ नियोजन के उद्देश्य इत्यादि। किन्तु इन पक्षों में निरीक्षण करने वाले निरीक्षकों का प्रतिशत केवल 9% है। निष्कर्ष यह निकलता है कि पाठ निरीक्षण में लगभग सभी पक्षों पर ध्यान दिया गया है। वेश भूषा पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। वेश भूषा पर दी गई टिप्पणियाँ अपवादस्वरूप स्थिति में दी गई प्रतीत होती है।

(3) जब पूछा गया कि निरीक्षकों की टिप्पणियों से उन्हें कैसा अनुभव हुआ तो निम्न अभिमत प्रस्तुत किये गये :-

अभिमत	प्रतिशत
बहुत उत्साहित	15 %
उत्साहित	78 %
हतोत्साहित	6 %
बहुत ही हतोत्साहित	1 %
	100 %

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि टिप्पणियों से प्राप्त होने वाला क्षेत्र भी उत्साहित करने वालों का केवल प्रतिशत है जैसे :- 70%. टिप्पणियों के कारण अत्यधिक उत्साहित होने वालों का केवल 15% है। निष्कर्ष यह निकलता है कि निरीक्षकों के द्वारा दी गयी टिप्पणियाँ पर्याप्त मात्रा में समाधान प्रस्तुत करने वाली थीं, तथा उनमें छात्रों को उत्साहित करने की शक्ति थी। जो अध्यापक के ये टिप्पणियों के कारण हतोत्साहित होने के बात करते हैं वे या तो घबराने वाली प्रवृत्ति के थे या तो टिप्पणियाँ हतोत्साहित करने वाली दी गयीं। किन्तु ऐसे अध्यापकों का प्रतिशत बहुत कम है अर्थात नगण्य। निष्कर्ष यह निकलता है कि टिप्पणियों के कारण का व्यापक क्षेत्र भी उत्साहित करके अध्यापन में सुधार लाने का प्रयास कर सकती है। यह बात अध्यापक की प्रभावशीलता बढ़ाने की ओर निर्देश करती है।

(4) यह पूछने पर कि, निरीक्षकों की टिप्पणियों का प्रमुख उद्देश्य क्या था, उत्तरदाताओं ने निम्न धारणायें दीं।

टिप्पणियों का उद्देश्य	प्रतिशत
कमी बिंदु बताना	15 %
सुधार हेतु सुझाव देना	86 %
कटु आलोचना करना	3 %
कमियाँ बताना	27 %

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 15% अध्यापकों के विचार से निरीक्षण में कमी बिंदु बताये गये तथा 86% अध्यापकों के विचार से अध्यापन सम्बन्धी सुधार हेतु सुझाव दिये गये। केवल कटु आलोचना करना तथा कमियाँ बताने की घटनाएँ भी निरीक्षण में

हुई है । किन्तु उनकी मात्रा कम है निष्कर्ष यह निकलता है कि निरीक्षण में टिप्पणियाँ देने का प्रमुख उद्देश्य अध्यापन सम्बन्धी सुधार हेतु सुझाव देना ही था । जिन निरीक्षकों ने कटु आलोचना की है, वे शायद निरीक्षण के सिद्धान्तों से अवगत नहीं है, यह स्पष्ट है ।

(5) छात्राध्यापकों से पूछा गया कि निरीक्षकों ने उनके अध्यापन शैली के सम्बन्ध में क्या कहा, तो निम्न प्रकार के उत्तर प्राप्त हुए ।

उत्तर	प्रतिशत
केवल गुण दिखाए	1%
गुण दोष दोनों दिखाए	89%
केवल दोष ही दिखाए	10%
	100%

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश निरीक्षकों ने निरीक्षण में गुण दोष दोनों दर्शाए हैं । कुछ निरीक्षकों ने केवल दोष ही दिखाए हैं किन्तु उनकी संख्या बहुत कम है तथा यह उचित भी है । निष्कर्ष यह निकलता है कि पाठ निरीक्षण उचित रूप से किया गया जिसमें छात्राध्यापक के अध्यापन सम्बन्धी गुण तथा दोष दोनों दिखाए गये अर्थात् छात्राध्यापकों को उचित अध्यापन के लिये प्रोत्साहित किया गया तथा दोषों के सम्बन्ध में उन्हें अवगत कराया गया । अधिकांश मात्रा में न दोष दिखाए गए तथा न ही गुण । केवल दोष दर्शाने वाले निरीक्षक पूर्वाग्रहित भी हो सकते हैं यह स्पष्ट है ।

(6) पूछा गया कि क्या निरीक्षकों ने उन्हें कक्षा में छात्रों के सम्मुख डाँटा तब निम्न प्रकार की जानकारी मिली ।

अभिमत	प्रतिशत
प्रायः डांटा	2%
कभी कभी डांटा	5%
बिल्कुल नहीं	93%
	100%

उपरोक्त प्राप्तांकों के आधार पर स्पष्ट होता है कि अधिकतर निरीक्षकों ने कक्षा में पहुंचने के उपरान्त छात्राध्यापकों को नहीं डांटा तथा जिन जिन निरीक्षकों ने उन्हें डांटा है वे या तो निरीक्षण करना नहीं जानते या कोई अन्य कारण हो सकता है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रायः अधिकांश निरीक्षक छात्राध्यापकों को कक्षा में डांटना उचित नहीं समझते हैं अर्थात निरीक्षण कार्य में निरीक्षकों ने बुद्धि का उपयोग किया है। डांटने वाले निरीक्षकों की संख्या नगण्य होने से छात्राध्यापकों के अध्यापन पर उसका कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ा है।

(7) निरीक्षकों से निरीक्षण हेतु कक्षा में प्रवेश करने के सम्बन्ध में जब पूछा गया कि वे कक्षा में कब प्रवेश करते थे तब निम्न जानकारी मिली :-

कक्षा में प्रवेश का समय	प्रतिशत
प्रारम्भ से ही	50 %
अध्यापन के मध्य में	25 %
लगभग पाठ समाप्त होने के समय	3 %
कभी भी	22 %
	100 %

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अर्द्ध प्रतिशत निरीक्षकों ने प्रारम्भ से पाठ निरीक्षण करने की कोशिश की । 25% एवं 22% प्रधानाध्यापकों के मतानुसार जो निरीक्षक अध्यापन के मध्य कक्षा में निरीक्षण करने जाए उन्हें प्रारम्भ से पाठ का निरीक्षण करना उचित नहीं हुआ होगा । कारण मर्यादित समय में एवं मर्यादित निरीक्षकों की संख्या के अभाव में हर पाठ में निरीक्षण करने हेतु कक्षा में शुरू से बैठना ठीक नहीं है । वस्तुतः पाठ शुरू से ही निरीक्षण किया जाना चाहिये ।

(8) निरीक्षकों के निरीक्षण काल के सम्बन्ध में जब पूछा गया कि कितने समय तक वे निरीक्षण करते हैं तब निम्न प्रकार की जानकारी मिली :-

निरीक्षण काल	प्रतिशत
पूर्ण कालांश	40 %
अर्द्ध कालांश	30 %
थोड़े समय	20 %
बहुत थोड़े समय	2 %
	100 %

उपरोक्त तालिका से यह जानकारी मिलती है कि केवल 40% निरीक्षकों ने पूर्ण कालीन निरीक्षण किया है । किन्तु अर्द्ध कालांश तक निरीक्षण करने वाले एवं अल्प समय तक निरीक्षण करने वाले निरीक्षकों की संख्या कुल अधिक है यथा :- 30% 20% तथा 2%. वस्तुतः निरीक्षण प्रणाली अधिक प्रभावित होने के लिये तथा प्रधानाध्यापकों को प्रभावकारक बनाने के लिये पाठ निरीक्षण अधिक से अधिक मात्रा में पूर्ण कालीन होना चाहिये किन्तु यह संभव नहीं हो पाता है । निष्कर्ष यह निकलता है कि और ज्यादा

कारण इन्हीं निरीक्षकों की सीमित संख्या तथा केन्द्रों एवं अध्यापकों की अधिक संख्या है ।

(9) " निरीक्षण में मिली टिप्पणियाँ आपकी अध्यापन शैली के सुधार में कितनी सहायक सिद्ध हुईं ? " यह पूछने पर निम्न तथ्य प्राप्त हुए हैं :-

अभिमत	प्रतिशत
अत्यधिक सहायक	20%
बहुत सहायक	[illegible]
कुछ सहायक	30%
बिल्कुल नहीं	[illegible]
सामान्य	[illegible]
	100%

प्रस्तुत तथ्य यह दर्शाते हैं कि निरीक्षण में प्राप्त टिप्पणियाँ अध्यापन शैली के सुधार में कदाचित मात्रा में सहायक हुई हैं । निष्कर्ष यह निकलता है कि टिप्पणियाँ अध्यापन शैली के सुधार में किंचित सहायक होती हैं । अर्थात् वे अध्यापकों पर प्रभाव नहीं डालती हैं ।

(10) पुनः पूछा गया कि " निरीक्षकों का पाठ निरीक्षण सम्बन्धी उद्देश्य क्या आपकी अध्यापन शैली के दोष निकालकर उसमें सुधार लाने का था या आपकी त्रुटि सिद्ध करने का ? " उत्तर में निम्न जानकारी मिली :-

तालिका - 16 -

निरीक्षकों का पाठ निरीक्षण सम्बन्धी उद्देश्य

उद्देश्य	प्रतिशत
गुण बताकर सुधार करने का	30 %
दोष दिखाकर सुधार करने का	65 %
दोष को छिपाने का	3 %
प्रोत्साहित करने का	2 %
केवल निरीक्षण	-
	100%

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि निरीक्षकों के निरीक्षण का उद्देश्य छात्राध्यापकों के अध्यापन शैली में सुधार करने का ही है, किन्तु यह गुण तथा दोष दोनों दिखाकर दर्शाया गया है । उपरोक्त तालिका यह दर्शाती है कि सुधार के उद्देश्य से ही गुणों की अपेक्षा दोष अधिक दर्शाये गये । निर्दिष्ट दोष छिपाने का तथा प्रोत्साहित करने का प्रयत्न जिन्होंने किया वे निरीक्षण पद्धति के आधारभूत तथ्य नहीं समझ पाये या तो विचार प्रकट की गयी ।

(ii) पूछा गया कि इन्टर्नशिप पर जाने के समय तक छात्राध्यापकों को अध्यापन कौशल एवं शैली के सम्बन्ध में उनके शिक्षकों द्वारा कितना तैयार किया गया था, तब निम्न जानकारी मिली :-

अभिमत	प्रतिशत
पूर्ण रूप से तैयार	32 %
काफी	40 %
कुछ कुछ बताया गया था	28 %
बिल्कुल नहीं बताया गया था	-
	100%

उपरोक्त जानकारी से यह पता चलता है कि इन्टर्नशिप से पूर्व तक छात्राध्यापकों में अध्यापन प्रणाली एवं कौशलों के सम्बन्ध में पूर्ण रूप से एवं काफी मात्रा में शिक्षित किया गया था । कुछ छात्राध्यापकों के विचार से थोड़ा बहुत बताया गया था, अर्थात ऐसे छात्राध्यापकों का प्रतिशत कम है । संभव है कुछ मात्रा में वह अंशों में त्रुटियाँ रह गयी हों तथा छात्राध्यापक असंतुष्ट रहे हों, किन्तु फिर भी उपरोक्त जानकारी यह स्पष्ट हो जाता है इन्टर्नशिप कार्यक्रम से पूर्व छात्राध्यापकों को काफी सी मात्रा लगभग पूर्ण रूप से अध्यापन प्रशिक्षण के लिये तैयार किया जाता है ।

(12) तालिका - 17 -

निरीक्षण पद्धति द्वारा छात्राध्यापकों के अध्यापन शैली में सुधार संबंधी अभिमत

अध्यापन शैली में सुधार	प्रतिशत
अध्यापन शैली विकसित हुई	69 %
घबराहट कम हुई	26 %
प्रश्न करने के कौशल में सुधार	44 %
कक्षानुशासन में सहायता	16 %
पाठ नियोजन में सहायता	36 %
अन्य सुधार	4 %

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि प्रचलित निरीक्षण पद्धति के द्वारा छात्राध्यापकों की अध्यापन शैली में अत्यधिक विकास हुआ है । पाठ नियोजन में तथा प्रश्न करने के कौशल में भी सुधार हुए हैं । 26% छात्राध्यापकों की दृष्टि से उनकी घबराहट कम हुई है । जिससे यह

है कि इसी पाठ्यपुस्तक अध्यापन शैली में कुछ रुचि पैदा होने में मदद
मिली है । छात्राध्यापकों ने अन्य सुझाव सामने दिए हैं जैसे [illegible] एकता,
कार्यों को करने में सहायता, समय नियमित, चार्ट, विद्यालय सुधार आदि ।

(15) तालिका - 18 -

महाविद्यालयीन निरीक्षकों द्वारा पाठों के निरीक्षण
का प्रतिशत

क्रमांक	पाठ निरीक्षण की मात्रा	छात्राध्यापकों के अभिमत का प्रतिशत
अ)	10% या कम	18 %
ब)	11% से 20%	19 %
स)	21% से 30%	21 %
द)	31% से 40%	14 %
इ)	40% से 50%	14%
ई)	50% से अधिक	14 %
		100 %

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 30% पाठों से लेकर तो 50% पाठों का निरीक्षण योग्य रूप से हुआ है । इन प्रतिशतों का योग करने से कुल प्रतिशत 42% होता है अर्थात लगभग 50% पाठों का निरीक्षण निरीक्षकों द्वारा किया गया है । शेष पाठों का निरीक्षण सहयोगी शालाओं के सहयोगी शिक्षक कर्मचारियों द्वारा किया गया । निष्कर्ष यह निकलता है कि लगभग 50% पाठों का निरीक्षण तो भी महाविद्यालयीन निरीक्षकों द्वारा किया जाता है ।

(14) छात्राध्यापकों से जब पूछा गया कि निरीक्षकों के द्वारा दी गई टिप्पणियों पर चर्चा करके निरीक्षकों उनका कितना विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण किया तब निम्न जानकारी प्राप्त हुई :-

विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण	प्रतिशत
बहुत	50 %
थोड़ा	45 %
बिल्कुल नहीं	5 %
	100%

उपर निर्दिष्ट तथ्यों से पता चलता है कि 50% छात्राध्यापकों का दृष्टिकोण इस पक्ष में है कि टिप्पणियों का विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण करने की भूमिका निरीक्षकों द्वारा अधिक मात्रा में पूरी की गई । 45% छात्राध्यापकों के विचार से थोड़ी मात्रा में स्पष्टीकरण किया गया तथा 5% छात्राध्यापकों के विचार से टिप्पणियों का स्पष्टीकरण नहीं किया गया । हो सकता है कि इसके पीछे समयाभाव का कारण हो या उन्होंने आवश्यकता ही नहीं समझी । निष्कर्ष यह है कि अधिक मात्रा में निरीक्षकों द्वारा चर्चा के रूप में टिप्पणियों का विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण किया गया है ।

(15) निरीक्षकों द्वारा दी गई टिप्पणियों की अस्पष्टता एवं निरर्थकता के सम्बन्ध में जब पूछा गया तब निम्न जानकारी प्राप्त हुई :-

अस्पष्टता	प्रतिशत
बहुत	1 %
कुछ	47 %
बिल्कुल नहीं	52 %
	100%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 40% टिप्पणियां कुछ मात्रा में अस्पष्ट एवं निरर्थक थीं। 50% से भी अधिक मात्रा में टिप्पणियां अधिक एवं स्पष्ट थीं। निष्कर्ष यह निकलता है कि लगभग 50% टिप्पणियों का अस्पष्ट रूप में होना अनुचित है। टिप्पणियों का उद्देश्य ही छात्राध्यापकों द्वारा उन्हें पढ़ने, समझने तथा सुधार लाने का है। अतः यह दोष दूर होना चाहिये।

(16) " अध्यापन सम्बन्धी कठिनाईयों एवं समस्याओं का समाधान निरीक्षकों की टिप्पणियों से कितनी मात्रा में हुआ ? " इस प्रश्न पर निम्न बातें ज्ञात हुईं :-

समस्या समाधान	प्रतिशत
पूर्ण रूपेण	13 %
काफी	60 %
कुछ कुछ	25 %
बिल्कुल नहीं	2 %
	100 %

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि निरीक्षकों की टिप्पणियों से छात्राध्यापकों की अध्यापन सम्बन्धी कठिनाईयों एवं समस्याओं का समाधान काफी सीमा तक हुआ है। 2% छात्राध्यापकों के मतानुसार समस्या समाधान बिल्कुल नहीं हुआ है। क्योंकि ऐसे उत्तरदाताओं की संख्या बहुत कम है। निष्कर्ष यह निकलता है कि टिप्पणियों के द्वारा छात्राध्यापकों की समस्या एवं कठिनाईयों का समाधान हुआ है। आवश्यकता इस बात की है कि समस्या एवं कठिनाईयों का समाधान अधिक से अधिक मात्रा में टिप्पणियों

थी । सभी निरीक्षक सदा प्रतिवाद उचित रूप से सुना है ऐसा नहीं कह सकती है । जो निरीक्षक अपनी टिप्पणी द्वारा स्पष्ट आता नहीं कर पाये उन्हें उस विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिये कि उनके टिप्पणी द्वारा अध्यापकों की समस्या एवं कठिनाईयों का समाधान हो सके ।

(17) पूछा गया कि क्या उनके विचार से यह निरीक्षण पद्धति उचित है ? तब निम्न अभिमत प्राप्त हुए :-

अभिमत	प्रतिशत
अत्यधिक	42 %
काफी	40 %
कुछ	15 %
नगण्य	1 %
बिल्कुल नहीं	2 %
	100 %

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि निरीक्षण पद्धति काफी हद तक उचित एवं लाभदायी है ।

(18) जब पूछा गया कि प्रधानाध्यापकों के विचार से इस निरीक्षण पद्धति में कितना सुधार किया जाना चाहिये तब निम्न अभिमत प्राप्त हुए :-

अभिमत	प्रतिशत
बहुत सुधार आवश्यक	21 %
कुछ सुधार आवश्यक	52 %

विशेष आवश्यकता नहीं	25 %
बिल्कुल नहीं किये जाना चाहिये	2 %
	100 %

उपरोक्त तथ्यों से पता चलता है कि निरीक्षण पद्धति में कुछ मात्रा में सुधार होना आवश्यक है । निष्कर्ष यह है कि प्रचलित निरीक्षण पद्धति में कुछ दोष अवश्य हैं तथा उन्हें घटाना आवश्यक है ।

(21) प्रधानाध्यापकों से पूछा गया कि क्या निरीक्षकों ने वेश भूषा खेल आदि के सम्बन्ध में टिप्पणियाँ दी तब निम्न जानकारी प्राप्त हुई :-

अभिमत	प्रतिशत
बहुत	3 %
कुछ	32 %
बिल्कुल नहीं दी	65 %
	100 %

प्रस्तुत तथ्यों से यह ज्ञात होता है कि वेश भूषा, खेल आदि के सम्बन्ध में कम मात्रा में टिप्पणियां दी गई । 65% प्रधानाध्यापकों के विचार से इन पहलुओं पर बिल्कुल भी टिप्पणियां नहीं दी गई । इन पहलुओं पर जिन निरीक्षकों ने टिप्पणियां दी थे उन्होंने निम्न कारणों से प्रेरित होकर टिप्पणियाँ दी ऐसा प्रतीत होता है ।

(1) टिप्पणियां देने के लिये उपरोक्त पहलुओं के अतिरिक्त कुछ भी ठोस नहीं विचार किये ।

(2) वेश भूषा आपत्ति जनक लगने से।

(3) टिप्पणियां लिखना देना है इसी दृष्टिकोण से

(4) किन्हीं अन्य कारणों से

(22) तालिका - 19 -

निरीक्षकों के द्वारा अंकित निरीक्षण के क्षेत्र तथा प्रतिशत

क्रमांक	निरीक्षण के क्षेत्र	प्रतिशत
अ)	अध्यापन विधि	78 %
ब)	विषयवस्तु	45 %
स)	प्रश्नोत्तर कार्य	57 %
द)	श्यामपट्ट कार्य	42 %
य)	व्यक्तित्व	21 %
र)	कक्षानुशासन	39 %
ल)	वेशभूषा आदि	10 %
व)	अन्य पक्ष	4 %

उपरोक्त तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि निरीक्षण में निरीक्षकों के द्वारा सर्वाधिक ध्यान अध्यापन विधि पर दिया गया है। तदुपरान्त क्रमशः प्रश्नोत्तर कार्य, विषयवस्तु, श्यामपट्ट कार्य, कक्षानुशासन, व्यक्तित्व एवं वेशभूषा पर क्रम से निरीक्षकों ने निरीक्षण में अध्यापन सम्बन्धी विभिन्न पक्षों पर ध्यान दिया है। 4% छात्राध्यापकों ने कुछ अन्य पक्षों का भी उल्लेख किया है जैसे :- कक्षा में सामाजिक वातावरण, पाठ नियोजन, प्रदर्शन पद्धति द्वारा अध्यापन, आदतों के कारण किये जाने वाले हाव भाव, अध्यापन सामग्री इत्यादि। इन सभी बातों पर

प्रस्तुत ध्यान दिया गया ।

(25) पूछने पर कि, शाला निरीक्षण में प्रस्तुत हुई टिप्पणियों को निरीक्षण के पश्चात क्या आप घर जाकर प्रतिदिन ध्यान से पढ़ते थे, निम्न जानकारी मिली :-

अभिमत	प्रतिशत
बहुत ध्यान से	62 %
थोड़ी बहुत देख लिया करते थे	35 %
बिल्कुल ध्यान नहीं देते थे	3 %
	100 %

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि प्रधानाध्यापकों ने टिप्पणियों को शाला निरीक्षण के पश्चात घर जाकर प्रतिदिन ध्यान से पढ़ा है । टिप्पणियाँ बहुत ध्यान से से पढ़ने वालों का प्रतिशत 62% है । कुछ ऐसे प्रधानाध्यापक हैं जिन्होंने टिप्पणियों पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया है किन्तु ऐसों की संख्या बहुत अल्प है । निष्कर्ष यह है कि अधिकांश प्रधानाध्यापक टिप्पणियों को घर जाकर प्रतिदिन ध्यान से पढ़ते हैं ।

(26) यह पूछा गया कि निरीक्षकों के द्वारा प्रतिवेदन लिखी हुई टिप्पणियों को पढ़कर क्या वे अपनी अध्यापन पद्धति में दर्शाये गये व बदलने का प्रयास प्रतिदिन करते थे तब निम्न प्रकार की जानकारी मिली :-

अभिमत	प्रतिशत
बहुत प्रयास करते थे	74 %

थोड़ा बहुत	23 %
ध्यान नहीं देते थे	3 %
	------
	100 %

उपरोक्त बातों से यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने (74%) निरीक्षण में प्राप्त टिप्पणियों के अनुसार, अपनी अध्यापन पद्धति में व्याप्त दोष घटाने का प्रयास अधिक मात्रा में किया है। थोड़ा बहुत प्रयास जिन्होंने किया है उनका प्रतिशत 23% है। जिन्होंने नहीं किया वे शायद यों ही प्रशिक्षण की उपाधि प्राप्त करने हेतु आये थे।

(27) "टिप्पणियों के द्वारा अध्यापन पद्धति में व्याप्त दोष घटाने का प्रयास आप किस प्रकार करते थे ?" पूछा पूछने पर उत्तरदाताओं ने निम्न प्रकार की जानकारी दी :-

तालिका - 20 -

टिप्पणियों के द्वारा व्याप्त दोष घटाने का प्रयास करने के लिये प्रयत्न

अनुक्रम	दोष घटाने हेतु विभिन्न प्रयास	प्रतिशत
अ)	पाठ नियोजन में सुधार करके	54 %
ब)	अध्यापन कौशल पर ध्यान देकर	60 %
स)	शिक्षणवस्तु का योग्य चुनाव करके	19 %
द)	प्रश्न अच्छी तरह पूछकर	40 %
इ)	श्यामपट्ट कार्य ठीक तरह करके	34 %

घ)	कक्षानुशासन की ध्यान देकर	26 %
च)	अन्य प्रयास	3 %

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांशतः अध्यापन कौशल पर ध्यान देकर टिप्पणियों के द्वारा अध्यापन पद्धति में दर्शाये दोष घटाने का प्रयास छात्राध्यापकों द्वारा किया गया है। प्रस्तुत पाठ नियोजन में सुधार, प्रश्न अच्छे तरह पूछकर, श्यामपट्ट कार्य ठीक तरह करके तथा कक्षानुशासन पर ध्यान देकर एवं विषयवस्तु का योग्य ज्ञान करके अध्यापन पद्धति में दर्शाये दोष घटाने का प्रयास छात्राध्यापकों ने किया है। 3 प्रतिशत छात्राध्यापकों ने अन्य प्रयासों का भी उल्लेख किया है जैसे :- मिली हुई टिप्पणियाँ पुनः न मिले उस बात का ध्यान रखकर पढ़ाना, छात्रों के पूर्व ज्ञान का ध्यान रखना, अध्यापन सामग्री का उपयोग करना इत्यादि।

(28) पूछने पर कि क्या ऐसा भी हुआ है कि जिन दोषों के सम्बन्ध में टिप्पणियाँ प्रथम दिन मिलीं, दूसरे दिन भी उन्हीं पर मिलीं, निम्न जानकारी प्राप्त हुई :-

अभिमत	प्रतिशत
अक्सर	3 %
कभी कभी	55 %
बिल्कुल नहीं	34 %
दो दिन से उपरान्त नहीं मिली	8 %
	100 %

ऊपर निर्दिष्ट तालिका से यह स्पष्ट होता है कि 55% छात्राध्यापकों के विचार से मात्र कभी कभी ऐसा हुआ है तथा 34% छात्राध्यापकों के विचार से ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ है । 8% छात्राध्यापकों के विचार से दो दिन के उपरान्त से वे टिप्पणियां फिर नहीं मिलीं । निष्कर्ष यह निकलता है कि छात्राध्यापकों के अध्यापन कौशल में निश्चित सुधार हुआ है तभी पुनः वे टिप्पणियां बार बार नहीं मिली हैं । केवल कभी कभी ऐसा होने का कारण है छात्राध्यापक के अध्यापन कौशल के सुधार में लगने वाला समय । अर्थात सुधार के लिये कभी दो दिन लग सकते हैं तो कभी अधिक । तीन प्रतिशत छात्राध्यापकों के विचार से वे ही टिप्पणियां पुनः पुनः दी जाती हैं इसका तात्पर्य यह है कि वे अपनी अध्यापन शैली में सुधार का प्रयास नहीं करते हैं ।

(29) छात्राध्यापकों से पूछा गया कि क्या वे मानते हैं कि निरीक्षकों द्वारा दी गई टिप्पणियां उन्हें एक कुशल अध्यापक बनाने में सहायक हो सकती हैं, तब निम्न प्रकार के अभिमत प्राप्त हुए :-

अभिमत	प्रतिशत
अत्यधिक	30 %
बहुत	50 %
कुछ	15 %
बिल्कुल नहीं	5 %
	100 %

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्राध्यापकों के विचार से कि टिप्पणियां उन्हें कुशल अध्यापक बनाने में सहायक होती हैं ।

9% छात्राध्यापकों ने विपक्ष में मत प्रस्तुत किये हैं अर्थात उनकी संख्या नगण्य है । हो सकता है कि उन्हें योग्य टिप्पणियाँ न मिली हों । निष्कर्ष यह है कि टिप्पणियाँ छात्राध्यापकों को कुशल अध्यापक बनाने में सहायक हो सकती हैं ।

(30) उनसे पूछा गया कि " निरीक्षकों द्वारा दी गई टिप्पणियों ने क्या उन्हें आत्म मूल्यांकन के लिये प्रेरित किया ? " प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर में उत्तरदाताओं ने निम्न प्रकार के अभिमत व्यक्त किये :-

अभिमत	प्रतिशत
बहुत	53 %
कुछ	40 %
नहीं	7 %
	100 %

उपरोक्त तालिका से यह जानकारी मिलती है कि निरीक्षकों द्वारा दिये टिप्पणियाँ उन्हें अधिक मात्रा में आत्म मूल्यांकन के लिये प्रेरित करती हैं । निष्कर्ष यह निकलता है कि टिप्पणियाँ छात्राध्यापक को आत्म मूल्यांकन हेतु प्रेरित करती हैं ।

(31) पूछने पर कि " यदि आपके पाठों का निरीक्षण नहीं होता फिर भी क्या आप योग्य ढंग से और रुचिकर बच्चों को पढ़ाने का कोशिश करती हैं ? " निम्न जानकारी मिली :-

क्रमांक	अभिमत	प्रतिशत

अ)	पूर्ण रूपेण	62 %
ब)	थोड़ा बहुत	30 %
स)	जी नहीं	6 %
द)	जैसे तैसे पढ़ाते	1 %
य)	मौज मनाते	1 %
र)	अन्य अभिप्राय	-
		100 %

प्रस्तुत तालिका से यह जानकारी मिलती है कि अधिकांश छात्राध्यापकों की विचार से शाला का निरीक्षण न होने पर भी वे योग्य ढंग से रुचि लेकर अध्यापन कार्य करते । 7% या 6% छात्राध्यापक मात्र जैसे तैसे अध्यापन कार्य करने की तथा मौज मनाने की बात करते है ।

(32) इस प्रश्न के उत्तर में कि " क्या वाह्य निरीक्षण की पद्धति एवं प्रक्रिया आपको ठीक प्रकार लगती है ? " उन्होंने निम्न प्रकार के अभिमत दिये हैं :-

अभिमत	प्रतिशत
पूर्ण रूप से	5 %
थोड़ा बहुत	25 %
बिल्कुल नहीं	35 %
ठीक लगती है	35 %
	100 %

उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि अधिकांश छात्रा-ध्यापकों का मन निरीक्षण पद्धति के सम्बन्ध में अच्छा है । निरीक्षण पद्धति उन्हें बोझ स्वरूप नहीं लगती अपितु अच्छी लगती है । 25% छात्राध्यापकों के विचार में निरीक्षण पद्धति बोझ स्वरूप है क्योंकि छात्राध्यापक यह जान के बीच घबराहट एवं परेशानी सी में लिप्त रहता है उन्हें यह कि निरीक्षण पद्धति के कारण छात्राध्यापक को अध्यापन में स्वतन्त्रता नहीं होती अतः उन छात्राध्यापकों को यह सब बोझ स्वरूप लगना स्वाभाविक है । निष्कर्ष यह है कि 35% छात्राध्यापकों के विचार से निरीक्षण पद्धति की प्रक्रिया अच्छी है । तथा 3 35% छात्राध्यापकों के विचार से यह विशुद्ध भी नहीं स्वरूप नहीं । 5% छात्राध्यापक जिन्होंने टिप्पणियां दीं स्पष्ट बोझ स्वरूप लगने का कारण कहते हैं, उनका है कि अध्यापन पद्धति में पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते हैं ।

(3.) छात्राध्यापकों से यह निरीक्षण न करने वाले निरीक्षकों के सम्बन्ध में पूछने पर निम्न प्रकार की जानकारी मिली :-

अभिमत	प्रतिशत
नहीं	58 %
कुछ	40 %
बहुत	2 %
	100 %

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 58% छात्राध्यापकों के विचार से उन्हें ऐसे निरीक्षक नहीं मिले जिन्होंने आ. निरीक्षण किया हो नहीं । 40% छात्राध्यापकों के विचार से कुछ निरीक्षक ऐसे मिले हैं

जिन्होंने पाठ निरीक्षण किया किन्तु अधिकांश कक्षा में पाठ निरीक्षण करने वाले निरीक्षकों की मात्रा अधिक है ।

(34) " क्या आपने कक्षा में निरीक्षक के आने पर प्रसन्नता का अनुभव किया ? " इस प्रश्न के उत्तर में निम्न जानकारी मिली :-

अभिमत	प्रतिशत
सदैव	42 %
अधिकांशतः	31 %
कभी कभी	20 %
कभी नहीं	7 %
	100 %

उपरोक्त जानकारी से यह स्पष्ट होता है कि 42% अध्यापकों ने सदैव प्रसन्नता का अनुभव किया है । तथा 31% अध्यापकों ने अक्सर प्रसन्नता प्रगट की है । 7% अध्यापकों के कथन से स्पष्ट होता है कि उन्हें कक्षा में निरीक्षक का आना बुरा लगा है । अर्थात 7% अध्यापक अध्यापन पूर्ण स्वतन्त्रता चाहते है यह स्पष्ट है । निष्कर्ष यह है कि निरीक्षक के कक्षा में आने पर अध्यापकों ने प्रायः प्रसन्नता का अनुभव किया है ।

(35) " इन्टर्नशिप के दौरान अध्यापन सम्बन्धी जो भी कठिनाई आप अनुभव करती थी क्या उसे आपके निरीक्षकों ने शाला के प्राचार्य से मिल कर दूर करने का प्रयास किया ? " इस प्रश्न के उत्तर में निम्न जानकारी प्राप्त हुई :-

अभिमत	प्रतिशत
सदैव	23 %
प्रायः	29 %
कभी कभी	13 %
बिल्कुल नहीं	12 %
कोई ऐसी कठिनाई थी ही नहीं	23 %
	100 %

उपरोक्त विवरण से ज्ञात होता है कि बहुत कम अवसर ऐसा हुआ है कि जब कार्यालयों से अध्यापन सम्बन्धी कठिनाईयों को विद्या-लयीन निरीक्षकों ने शाला के प्राचार्यों से मिलकर दूर करने की कोशिश की है । यह आवश्यकता एवं समयानुसार करनी पड़ती जाती है और निश्चित नियम नहीं किन्तु आवश्यकता पड़ने पर ऐसा किया गया है ।

(36) " विषय वस्तु पढ़ाने वाले निरीक्षक क्या अपनी टिप्पणियां आम तौर पर विषय वस्तु पर ही देते थे या पढ़ाने की विधि पर भी ? " यह प्रश्न के उत्तर में निम्न प्रकार से जानकारी प्राप्त हुई है :-

अभिमत	प्रतिशत
आम तौर पर विधि पर	33 %
आम तौर पर विषयवस्तु पर	18 %
दोनों पर	54 %
किसी पर भी नहीं	5 %
	100 %

उपरोक्त तथ्य यह दर्शाते हैं कि निरीक्षण में टिप्पणियां विषय वस्तु एवं अध्यापन विधि इन दोनों पर दी गई हैं किन्तु अध्यापन विधि पर अधिक बल दिया गया है। 94% छात्राध्यापकों के विचारानुसार टिप्पणियां दोनों पहलुओं पर दी गईं। 6% छात्राध्यापकों के विचार से टिप्पणियां किसी भी वस्तु पर नहीं दी गईं। अर्थात दो संभावनाएं दिखाई देती हैं। (1) पाठ जांचे ही नहीं गए (2) टिप्पणियां किसी अन्य पहलू पर दी गई हों।

(30) ऐसा पूछने पर कि " क्या आपको लगता है कि अध्यापन में आपके द्वारा होने वाली गल्तियां क्रमशः कम होती गईं तो उसके साथ ही मिलने वाली टिप्पणियां भी क्रमशः कम मिलें ? " निम्न अभिमत प्राप्त हुए हैं :-

अभिमत	प्रतिशत
हाँ कम मिलें	68 %
बिल्कुल ही नहीं मिलें	12 %
टिप्पणियां अधूरी मिलें	20 %
	100 %

उपरोक्त जानकारी से यह ज्ञात होता है कि अत्यधिक मात्रा में छात्राध्यापकों को यह लगता है कि पाठाध्यापन में उनके द्वारा होने वाली गल्तियां क्रमशः कम होती जाएं तथा साथ में टिप्पणियां भी क्रमशः कम मिलें। 12% छात्राध्यापकों के विचार से गल्तियां कम होने पर टिप्पणियां बिल्कुल ही नहीं मिलनी चाहिये। 20% छात्राध्यापक उनके द्वारा गल्तियां न होने पर भी शायद अपनी आपकी पाठाध्यापन की कला में पूर्ण सक्षम नहीं मानते अर्थात पाठाध्यापन में गल्तियां बिल्कुल न होने या कम होने

पर भी टिप्पणियां कम मिलें इस प्रकार के उनके विचारधारा यह दर्शाती है कि उनमें सदैव सीखने की प्रवृत्ति बनी हुई है इस कारण वे टिप्पणियां अधिक मिलने की अपेक्षा करती हैं ।

(29) पूछा जाने पर कि " कितना बार हुआ है कि किसी सप्ताह में निरीक्षक निरीक्षण के लिए आये ही नहीं ? " " उत्तर में निम्न जानकारी प्राप्त हुई :-

अभिमत	प्रतिशत
पहले सप्ताह में नहीं	30 %
दूसरे सप्ताह में नहीं	8 %
तीसरे सप्ताह में नहीं	2 %
चौथे सप्ताह में नहीं	3 %
कभी नहीं	46 %
उत्तर नहीं दिया	11 %
	100 %

उपरोक्त तथ्यों से यह जानकारी प्राप्त होती है कि निरीक्षक-कर्ता प्रथम सप्ताह में निरीक्षण हेतु अधिक मात्रा में शालाओं में नहीं गये । ऐसा कदापि नहीं होना चाहिये । दूसरे या तीसरे तथा चौथे सप्ताह में निरीक्षणार्थ न आने वाले निरीक्षकों की संख्या बहुत कम है । 46% अध्यापिकाओं ने यह कहा कि निरीक्षण हेतु निरीक्षक आये नहीं अर्थात यह असंभव सा लगता है । हाँ इस पर से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अध्यापिका इस संबंध में निरीक्षक निरीक्षण के आते हों तथा कभी कभी आते भी न हों । जो भी हो निरीक्षण हर सप्ताह में हर दिन होना चाहिये

तभी निरीक्षण प्रक्रिया योग्य एवं प्रभावशाली बनी रहेगी ।

(30) पूछा गया कि टिप्पणियों में विषय वस्तु तथा अध्यापन विधि का प्रतिशत क्या था तब निम्न प्रकार की जानकारी मिली । प्रतिशत का औसत इस प्रकार है :-

विषय वस्तु	विधि	अन्य कौशल
41%	50 %	9 %

निष्कर्ष यह निकलता है कि अध्यापन विधि एवं विषयवस्तु के प्रतिशत का औसत लगभग समान है अतः दोनों पक्षों पर समान रूप से ध्यान दिया गया । कुछ मात्रा में इन पक्षों के अतिरिक्त अन्य पक्ष पर भी ध्यान दिया गया ।

प्रश्नावली में समाहित मुक्त प्रश्नों का अध्ययन

निरीक्षण पद्धति के सम्बन्ध में अध्यापकों के विचार जानने के लिये कुछ प्रश्न मुक्त स्वरूप के पूछे गये जिनके उत्तर में निम्न प्रकार की जानकारी प्राप्त हुई । प्रश्न क्रमांक 19, 20, 23 तथा 24 में पूछा चार प्रश्न मुक्त स्वरूप के हैं जिनका विश्लेषण निम्न प्रकार है :-

(19) " निरीक्षण पद्धति में आपके विचार से क्या सुधार आवश्यक है ? " ऐसा पूछने पर निम्न प्रकार के अभिमत प्राप्त हुए ।

उपर्युक्त तथ्य यह स्पष्ट कर रहे हैं कि निरीक्षण पद्धति में सुधार के पक्ष में केवल 77% अध्यापकों ने ही अपने विचार प्रगट किये हैं ।

तालिका - 21 -

क्रमांक	निरीक्षण पद्धति में सुधार सम्बन्धी अभिमत	प्रतिशत
1)	निरीक्षण पूर्ण स्वाधीन हो	23 %
2)	निरीक्षण से पूर्व नियोजित पाठ एवं अन्य पक्षों की चर्चा होनी चाहिये	2%
3)	निरीक्षण हेतु निरीक्षकों में समय से पूर्व ही कक्षा में आकर बैठना चाहिये	7 %
4)	विषय वस्तु को स्वरूप के आधार पर ही अध्यापन विधि पर टिप्पणियाँ लिखें	1 %
5)	पाठ की निश्चित सीमाओं में निरीक्षण किया जाय	1 %
6)	छात्राध्यापकों को उत्साहित एवं प्रोत्साहित किया जाय	5 %
7)	प्रशिक्षित निरीक्षक ही केवल निरीक्षण कार्य करें	2 %
8)	केवल आलोचना के लिये आलोचना न करें	1 %
9)	गृह कार्य देने पर अधिक बल न दिया जाय	1 %
10)	निरीक्षण के सम्बन्ध में सर्वमान्य मापदण्ड का निर्माण हो तथा सभी निरीक्षकों का निरीक्षण सम्बन्धी दृष्टिकोण एक समान हो । भिन्न भिन्न अभिप्राय छात्राध्यापक में घबराहट पैदा करते हैं ।	10 %
11)	पूर्वाग्रहित होकर छात्राध्यापक की उपेक्षा न जाय	1 %
12)	प्रथम सप्ताह में निरीक्षण केवल अध्यापन के सिद्धान्तानुसार हो	1 %
13)	निरीक्षक बीच में कक्षा में हस्तक्षेप न करे	2 %
14)	निरीक्षक कक्षा में बैठकर निरीक्षण करने के स्थान पर अप्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण करें इससे छात्राध्यापक घबरायेगा नहीं तथा उसी प्रकार आत्म अध्यापन कौशल का निरीक्षण होगा	5 %
15)	विषय वस्तुओं तथा अध्यापन विधियों निरीक्षक एक ही जाय तथा एक ही समय निरीक्षण हेतु आया करें	3 %

16)	छात्राध्यापक के निरीक्षकों को निरीक्षण के लिये नहीं आना चाहिये	1 %
17)	जिस निरीक्षकों को उस प्रांतीय भाषा का ज्ञान होना चाहिये जिसमें छात्राध्यापक पढ़ता है	8 %
18)	अध्यापन सामग्री के आवश्यकता पर अत्यधिक बल न दें क्योंकि हर समय यह सम्भव नहीं है तथा श्यामपट्ट एवं चाक ही सबसे अच्छी अध्यापन सामग्री है	2 %
19)	छात्राध्यापकों की कापी के समक्ष न डांटें तथा डांटने की प्रथा का अन्त हो	10 %
20)	केवल आलोचना ही न करें [illegible] गुण दोष दोनों बताए	10 %
21)	अनावश्यक टिप्पणी न लिखें जिससे कि छात्राध्यापक हतोत्साहित हो	2 %
22)	पाठ की आलोचना के साथ ही सुधार भी सुझाए	2 %
23)	प्रयोग पद्धति द्वारा अध्यापन में कुछ त्रुटियों तुरन्त समझाई जावें अर्थात पाठाध्यापन के उपरान्त	1 %
24)	कक्षा में छात्राध्यापक के द्वारा प्रत्यक्ष पाठ अध्यापन के समय सुझाव देना, खड़े होकर सलाह देना, तथा छात्रों से स्वयं प्रश्न करना आदि प्रकार का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये इससे कक्षा अव्यवस्थित हो जाती है	8 %
25)	निरीक्षक पूर्व ग्रह दूषित दृष्टि से निरीक्षण न करें	1 %
26)	निरीक्षण में भेद भाव न हो तथा निष्पक्ष निरीक्षण हो	6 %
27)	छोटी छोटी बातों पर टिप्पणियां न दें जैसे कक्षा में घूमते हुए पढ़ाना, चॉक से खेलना, इत्यादि वस्तुतः यह बातें आवश्यक होती हैं	2 %
28)	अच्छे बिन्दुओं की प्रशंसा अवश्य होनी चाहिये ताकि छात्राध्यापक उत्साहित हो	3 %
29)	वेश भूषा केश, शैली आदि पर अधिक ध्यान न दें	1 %

30) टिप्पणियां कापी के विशेष पृष्ठ पर न दी जाय तथा निरीक्षण संबंधी छात्राध्यापक के मन में, का निष्कर्ष तुरन्त अलग लिखा जाना चाहिये 1%

31) निरीक्षकों का छात्राध्यापकों से किया जाने वाला व्यवहार सद्भावना पूर्ण तथा सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिये 2 %

32) निरीक्षकों निरीक्षण हेतु शाला में आने से पहले ही विवरण दिया जाय 4 %

33) प्रत्येक पाठ का निरीक्षण किया जाय तथा निरीक्षण प्रतिदिन हो ताकि छात्राध्यापक को उनकी स्वयं की प्रगति का ज्ञान हो 7 %

34) टिप्पणियां अच्छे अक्षरों में दी जाय क्योंकि उन्हें पढ़ने में कठिनाई जाती है । टिप्पणियों का स्पष्टीकरण भी दिया जाय 3 %

35) कुछ त्रुटियां मौखिक रूप से समझाई जाय। त्रुटियों का समाधान पूछे ही न जाय 1 %

36) प्रथम सप्ताह में कोई निरीक्षक निरीक्षण के लिये न आवे ताकि छात्राध्यापक शाला के वातावरण से अच्छी तरह परिचित हो सकें 3 %

37) अन्तिम पाठ के निरीक्षण के समय विषय सम्बन्धी निरीक्षकों का होना अत्यधिक आवश्यक है 2 %

38) विद्यालय की असुविधाओं को छात्राध्यापक की गलती न माने 2 %

39) एक निरीक्षक को एक ही शाला में निरीक्षण हेतु भेजा जाय 1 %

40) निरीक्षण विषय सम्बन्धी निरीक्षकों द्वारा या विषय विशेषज्ञों द्वारा ही किया जाय 7 %

41) निरीक्षक पाठ के मध्य में न आवे ताकि कक्षा में व्यवधान उपस्थित न हो 3 %

42) विज्ञान विषय के पाठों का निरीक्षण विज्ञान शिक्षक से संबंधित निरीक्षक ही करें 2 %

43) निरीक्षणोपरान्त छात्राध्यापक संबंधी गुण दोषों पर चर्चा की जाय 6 %

44) न्यूनतम 50% पाठों का निरीक्षण होना ही चाहिये 2 %

45)	अधिकतम पाठों का निरीक्षण होना चाहिए, यदि संभव न हो तो एक कक्षा में अधिक से अधिक दो या पाठ निरीक्षण किये जाय	2 %
46)	एक साथ निरीक्षण कर रहे दो निरीक्षकों के निरीक्षण में भिन्नता नहीं होना चाहिये	2 %
47)	विषय वस्तु से संबंधित अध्यापन पद्धति के अनुकरण पर बल दिया जाय अन्य पद्धति को अपनाने का दबाव न डालें	1 %
40)	एक आध आदर्श पाठ के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिये	4 %
49)	छात्राध्यापक की प्रतिदिन की प्रगति देखी जाय	1 %
50)	प्रान्तीय भाषा न जानने वाले निरीक्षक निरीक्षण न करें	1 %
51)	प्रारम्भिक दशा में अत्यधिक प्रोत्साहन दिया जाए	2 %
52)	निरीक्षण कार्य धैर्य से करें	1 %
53)	पाठ्याध्यापन के हर पहलू का निरीक्षण होना चाहिये तथा तदनुसार टिप्पणियाँ लिखी जानी चाहिये	5 %

उपरोक्त दीर्घ तालिका द्वारा स्पष्ट होता है कि कुल 53 सुझावों पर छात्राध्यापकों ने निरीक्षण पद्धति के सुधार पर बल दिया है। इन 53% सुझावों में जिन पर अधिक बल दिया गया है वे हैं क्रमशः :- पूर्णकालीन निरीक्षक, निरीक्षण में भी सर्वमान्य मापदण्ड, निरीक्षकों को प्रान्तीय भाषा का ज्ञान, कमरे के बाहर छात्राध्यापकों को डाँटने की प्रथा का अन्त, प्रत्येक पाठ का निरीक्षण, विषय विशेषज्ञों द्वारा निरीक्षण, गुण दोष दोनों पर चर्चा तथा हर पहलू का निरीक्षण इत्यादि। इन बातों पर ध्यान देने से निरीक्षण पद्धति और भी प्रभावशाली बन सकती है।

(20) "आपको कक्षा समय पर जो टिप्पणियां मिली उनमें कुछ ऐसी अनुपयुक्त भी लगीं ?" कृपया लिखें"। इस प्रश्न के उत्तर में निम्न जानकारी मिली।

इस प्रश्न के उत्तर देने वाले उत्तरदाताओं का प्रतिशत 32% है। शेष उत्तरदाताओं ने अपनी अभिमत नहीं दिये हैं शायद उन्हें वे टिप्पणियां अनुपयुक्त न लगी थीं। [illegible]

तालिका - 22 -

क्रमांक	उत्तरदाताओं के विचार से अनुपयुक्त टिप्पणियां	प्रतिशत
1)	ठीक से न आते	7%
2)	पाठ योजना ठीक नहीं	2%
3)	लेखन तथा वेशभूषा ठीक नहीं है	13%
4)	अवधि कक्षाओं तथा कक्षा में आपकी पर अवलंबित जो, अनुकूल वातावरण के कारण उन्हें वहन करना कठिन हो जाता है	16%
5)	गृह कार्य के कापियां नहीं जांची गईं, अन्य कार्यों से अलग व्यवस्थापक पर ध्यान नहीं	2 %
6)	आवाज अस्पष्ट है तथा छात्रों की पीठ मुड़कर न देखते हैं	3%
7)	छात्रों को समुचित उत्तर देने हेतु प्रोत्साहित न करें	3 %
8)	विषय का गहरा ज्ञान न होने से अध्यापन की बातें जल्दी से नहीं आयें	2%
9)	नामों के बीच ठीक नहीं है	3%
10)	अध्यापन ठीक असफल है	2%
11)	[illegible] के बाधक न नियंत्रण	2%

12) अध्यापक [illegible] लिखे गये । भाषा [illegible] के
सम्बन्ध में जो टिप्पणी अपेक्षित है — 4%

13) कक्षा में अध्यापन के समय पानी पीकर [illegible] चलना ठीक नहीं है,
क्योंकि बालक ने कक्षा में ही रहे और [illegible] कारण [illegible] बैठे था ?
[illegible] आवश्यक नहीं कुर्सी [illegible] जगह जाना पड़ता है — 2%

14) चॉक तथा डस्टर [illegible] पर रखना चाहिए । क्योंकि कक्षा में
[illegible] रखने की सुविधा नहीं थी — 2%

15) मेज की चर्चा न करें — 2%

16) [illegible] सीधा रखें — 2%

17) अध्यापन में [illegible] न छोड़ें — 2%

18) कक्षा में घूमते हुए न पढ़ाएँ, क्योंकि पढ़ाने का अपना
अपना अन्दाज होता है जिससे छात्रों का [illegible]
एकाग्रता [illegible] होती है — 3%

19) श्यामपट्ट पर [illegible] चाहिए । क्योंकि [illegible] की आवश्यकता
नहीं थी । यह टिप्पणी भाषा [illegible] के कारण दी गई — 3%

20) पाठ को [illegible] पढ़ाया जा रहा है तथा [illegible]
का प्रयोग किया जा रहा है उसी प्रकार [illegible] की [illegible]
के लिए [illegible] गया — 2%

21) अक्षरों को न काटें, क्योंकि उनके शब्दों को काटना भी
पड़ता है — 3%

22) कक्षा व्यवस्था की भी [illegible] — 2%

23) परस्पर [illegible] (अभिभावक का मत) — 2%

24) व्यक्तिगत [illegible] की टिप्पणियाँ — 2%

25) श्यामपट्ट का प्रयोग न हो — 3%

26) [illegible] में न रहें — 2%

उपरोक्त अंकिलों द्वारा स्पष्ट होता है कि 26 प्रकार की टिप्पणियां छात्राध्यापकों को अनुपयुक्त लगी हैं जिनका स्पष्टीकरण भी टिप्पणियों के साथ में ही किया गया है । विशेषकर यह टिप्पणियां छात्राध्यापकों को अनुपयुक्त लगीं उनकी प्रदर्शन पद्धति एवं सहायक सामग्री पर अत्यधिक बल, पोशाक एवं वेश भूषा, जोर से बोलना, छात्रों का व्यवहारिक ढंग तथा कक्षा कक्षा में घूमते हुए पढ़ाना इत्यादि टिप्पणियां हैं । छात्राध्यापकों के विचार से यह टिप्पणियां निरीक्षकों के भाषा की अज्ञानता के कारण तथा छोटी छोटी बातों पर दी गई हैं । बच्चों के सामूहिक उत्तर देने के पक्ष में छात्राध्यापकों ने कुछ दलीलें दी हैं जैसे :- (1) सामूहिक उत्तर यह दर्शाता है कि बच्चों ने विषय अच्छी तरह समझ गया है (2) अधिकांश शालाओं में सामूहिक उत्तर देने की प्रथा है अतः बार बार कहने पर भी वे अपनी आदत नहीं छोड़ते । कुछ टिप्पणियां मात्र लिखित ही अयोग्य हैं ।

(23) यह पूछने पर कि " महाविद्यालयीन निरीक्षकों के संबंध में अपने विचार निःसंकोच लिखिये । " निम्न अभिमत मिले :-

प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर में 67% छात्राध्यापकों ने अपने अभिमत दिये हैं शेष छात्राध्यापकों ने कुछ भी नहीं लिखा है ।

तालिका - 23 -

क्रमांक	महाविद्यालयीन निरीक्षकों के सम्बन्ध में छात्राध्यापकों के विचार	प्रतिशत
(1)	कुछ लोगों ने केवल दोष ही निकाले तथा आलोचना की	5 %
(2)	विभिन्न निरीक्षकों ने विभिन्न मत दिये जैसे - कुछ कहते थे कि कक्षा में घूमकर पढ़ाओ तो कुछ कहते कि एक जगह स्थिर होकर पढ़ाओ	9 %
(3)	अधिकांश निरीक्षक बड़े सहयोगी एवं मृदुभाषी थे	14 %

(4)	उन्होंने अध्यापन में योग्य मार्गदर्शन देकर कठिनाइयों को सुलझाना	11 %
(5)	निरीक्षण करना, छात्राध्यापकों की त्रुटियों को देखना, त्रुटियों में सुधार तथा व्यावसायिक भावना से प्रेरित होना आवश्यक है	10 %
(6)	निरीक्षण कार्य में रुचि का अभाव था	5 %
(7)	अध्यापन के समय बीच में ही छात्राध्यापक की गलती नहीं पकड़ना चाहिये	1 %
(8)	कक्षा में अपनी कक्षा के साथ जाना तथा कक्षा नियंत्रण करना अनुचित है, इससे अध्यापन में व्यवधान उत्पन्न होता है	2 %
(9)	पक्षपातपूर्ण निरीक्षण तथा अनियमित निरीक्षण अनुचित है	5 %
(10)	एक ही पाठ का एक ही समय निरीक्षण करने वाले निरीक्षकों की टिप्पणियों में अन्तर था	2 %
(11)	विषय विशेषज्ञ द्वारा निरीक्षण नहीं किया गया	1 %
(12)	कठोर परीक्षण विधि के प्रयोग पर बल देना तथा अध्यापन पर जोर देना अनुचित	3 %
(13)	केवल व्याख्यान करते चले जाना तथा निरीक्षण न करते हुए टिप्पणियां देना अनुचित	1 %
(14)	विभिन्न क्षेत्रीय भाषा के ज्ञान के अभाव में अनुचित टिप्पणियां	5 %
(15)	टिप्पणियों को स्पष्ट नहीं किया जाता	2 %
(16)	निरीक्षण उत्तरदायित्व का तथा गुण दोष दोनों बताने चाहिये	4 %
(17)	टिप्पणियां अस्पष्ट अक्षरों में तथा जल्दी में लिखना	4 %
(18)	नयी प्रविधियों को अध्यापन में शामिल करने का ढंग बताना	1 %
(19)	छात्राध्यापकों से बराबरी का व्यवहार नहीं किया जाता	2 %
(20)	कुछ निरीक्षकों का नाम सुनकर ही छात्राध्यापक घबराते हैं	1 %

(21)	केवल दो निरीक्षकों ने पूर्ण रूप से ध्यान निरीक्षण किया	1%
(22)	कुछ निरीक्षक समयाभाव के कारण पाठ पूर्ण होने के पहले ही चले गये	3 %
(23)	कुछ निरीक्षकों ने निरीक्षणोपरान्त उपर्युक्त सुझाव दिये तथा चर्चा की	3 %
(24)	कुछ निरीक्षकों ने छात्राध्यापकों से मिलकर कठिनाईयाँ दूर कीं	1 %
(25)	अध्यापन विधि एवं विषयवस्तु इन दोनों पक्षों पर टिप्पणियाँ दी गई	1 %
(26)	कुछ निरीक्षकों ने प्रथम गुण बताकर तदनन्तर दोष बताये	4 %
(27)	कुछ निरीक्षकों ने विज्ञान एवं कला विषय के अध्यापक होने का बहाना बताकर निरीक्षण नहीं किया	1 %
(28)	कुछ निरीक्षकों ने निरीक्षण की रुचि से साथ निरीक्षण किया किन्तु समयाभाव के कारण से अधिक मार्गदर्शन नहीं कर सके	7 %
(29)	कुछ निरीक्षकों ने छोटी छोटी बातों पर महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ दी	1 %
(30)	अप्रशिक्षित निरीक्षकों ने असावधान कर टिप्पणियाँ दीं	1 %
(31)	कुछ निरीक्षकों ने केवल उनके विषय से सम्बन्धित पाठ को निरीक्षण किये	1 %
(32)	एक निरीक्षक ने अप्रस्तुत वस्तु की माँग की	1 %
(33)	एक निरीक्षक ने परिभाषा, स्पेलिंग गलत रूप में लिखी	1 %
(34)	निरीक्षकों ने व्यावहारिक ढंग से उद्देश्य लेखन के सम्बन्ध में टिप्पणियाँ दी किन्तु वे कैसे लिखे जायं यह नहीं बताया	2 %
(35)	इन्टर्नशिप पर जाना पर्याप्त पर बहुत थे । वे चाहते कि अनुचित सलाह न दें	1 %
(36)	भाषा के अज्ञान के कारण क्रियात्मक पक्ष पर भी ध्यान दिया गया	1 %
(37)	कृषि विषय के पाठों की निरीक्षण केवल कृषि विषय सम्बन्धी निरीक्षकों ने किया	2 %

उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि छात्राध्यापकों ने कम अधिक प्रमाण में निरीक्षकों सम्बन्धी ऊपर निर्दिष्ट 37 प्रकार के विभिन्न अभिमत प्रकट किये हैं। इन सभी अभिप्रायों में जिन पर अधिक बल दिया है वे हैं - अधिकांश निरीक्षकों का मृदुल व्यवहार, सही मार्गदर्शन, समस्या समाधान में योग्य सहयोग, विभिन्न निरीक्षकों के विभिन्न मत, कुछ निरीक्षकों का छात्राध्यापकों के साथ अनुचित व्यवहार तथा रुचि से रहित निरीक्षण आदि। इन बातों की अपेक्षा अन्य पहलुओं पर भी विचार किया गया। उपरोक्त अभिमत महत्वपूर्ण हैं उनका सही ढंग से उपयोग होने से निरीक्षण पद्धति निर्दोष एवं वस्तुनिष्ठ बन सकती है अतः उपरोक्त अनुचित बातों को त्यागने की कोशिश की जानी चाहिये।

(24) " निरीक्षकों से निरीक्षण के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें आप जानते हैं तो अवश्य लिखें " इस प्रश्न के उत्तर में निम्न अभिप्राय प्राप्त हुए।

प्रस्तुत प्रश्न के उत्तर में केवल 45% छात्राध्यापकों ने ही सक्रिय रूप से भाग लिया शेष निरीक्षकों ने उत्तर नहीं दिये।

तालिका - 24 -

क्रमांक	महाविद्यालयीन निरीक्षकों के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें	प्रतिशत
(1)	बहुत से निरीक्षक अच्छे स्वभाव के हैं	1 %
(2)	निरीक्षण कार्य में मार्गदर्शन करने के सम्बन्ध में रुचि की कमी तथा कई बार उद्देश्यहीन निरीक्षण	3 %
(3)	कुछ निरीक्षक अनम्रता से बात करते हैं	1 %
(4)	पूर्ण अध्यापन की कौशलों को निरीक्षण नहीं किया गया	1 %
(5)	कुछ निरीक्षकों ने प्रसन्नतापूर्वक अपने उत्तरदायित्व का ध्यान रखकर निरीक्षण किया	5 %

(6)	कुछ निरीक्षक कक्षा में स्वेटर बुनने का कार्य भी करते हैं	1 %
(7)	मैं तुम्हें अभी ठीक जानता हूँ ऐसा कहकर अध्यापकों को निराश करना	1 %
(8)	एक निरीक्षक ने पाकेट डायरी के साथ कक्षा में प्रवेश किया	1 %
(9)	कुछ निरीक्षकों ने छात्रों से स्वयं प्रश्न पूछे	3 %
(10)	कुछ निरीक्षकों ने अच्छे बिन्दु न बताकर केवल दोष ही बताए	1 %
(11)	कुछ निरीक्षक अध्यापकों के मनोभाव समझने में असमर्थ रहे	1 %
(12)	कुछ निरीक्षकों ने केवल प्रश्न पूछने के ढंग पर ही ध्यान दिया	2 %
(13)	अधिकांश निरीक्षक मराठी, उर्दू, गुजराती एवं अन्य भाषाओं को नहीं जानते	1 %
(14)	कुछ निरीक्षकों ने पूर्व दी गई टिप्पणियों को देखकर टिप्पणियां दीं	1 %
(15)	अधिकतर निरीक्षक अंग्रेजी में बोलते हैं तथा टिप्पणियां भी अंग्रेजी में देते हैं जो अप्रस्तुत है । वस्तुतः टिप्पणियां हिन्दी में देना चाहिये ।	1 %

प्रस्तुत तालिका में अध्यापकों ने निरीक्षकों के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें लिखी हैं । इन बातों का उपयोग निरीक्षण पद्धति के दोष घटाने में किया जा सकता है तथा निरीक्षण पद्धति को निर्दोष एवं अधिक प्रभाव शाली बनाया जा सकता है ।

अध्याय — 5

निरीक्षण पुस्तिकाओं का अध्ययन

निरीक्षकों द्वारा निरीक्षण पत्रिकाओं में दी गई टिप्पणियों का अध्ययन

शोध हेतु प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के लिये अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए अपने दस छात्राध्यापकों की दस निरीक्षण पुस्तिकायें ली हैं तथा प्रत्येक छात्राध्यापक के दस पाठ इस प्रकार कुल सौ पाठों पर दी गई टिप्पणियों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया है । निरीक्षण पुस्तिका में अध्यापन कौशल के विभिन्न पक्षों को समाविष्ट करने वाली निरीक्षण सूचिकायें पत्रिकायें (आब्जर्वेशन शेड्यूल) होती हैं । छात्राध्यापक के पाठों का निरीक्षण करते समय उनके अध्यापन में दिखाई देने वाले गुण दोष एवं अपेक्षित सुझावों को निरीक्षण पुस्तिका में समाविष्ट निरीक्षण सूचिकाओं पर छपे हुए अध्यापन कौशल के विभिन्न पक्षों के आगे टिप्पणियों के रूप में लिखा जाता है । सौ पाठों पर दी गई इन टिप्पणियों का अध्ययन एवं विश्लेषण उन अध्यापन कौशल के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखकर किया गया है । निरीक्षण पुस्तिका में समाविष्ट निरीक्षण पत्रिका में निम्नांकित अध्यापन कौशलों का निरीक्षण किया गया है ।

:: निरीक्षण पुस्तिका में समाविष्ट अध्यापन कौशल ::

(1) पाठ नियोजन

अ) उद्देश्य, की व्यावहारिक शब्दावली में लिखे हुए हैं ।

ब) विषयवस्तु (कन्टेंट) का विश्लेषण

स) कल्पनाओं का विकास

(2) अ) अभिप्रेरणा एवं पुनर्बलन

ब) पद्धति एवं तकनीक

स) प्रश्न पूछने का ढंग

द) गति का विकास

य) वाणी का उपयोग एवं अभिव्यक्ति

(3) अ) विषय वस्तु (कन्टेंट मैटर) [illegible]

(4) अ) अध्यापन सामग्री (टीचिंग एड)

ब) श्यामपट्ट कार्य

स) प्रयोग प्रदर्शन (एक्सपेरीमेंटल डिमान्सट्रेशन)

(5) कक्षा में सामाजिक वातावरण

(6) कक्षा व्यवस्था एवं प्रशासन

(7) अ) व्यक्तित्व [illegible]

ब) आवाज, उच्चारण, तथा भाषा का ज्ञान

स) प्रश्न पूछने के कौशल

द) कल्पना शक्ति एवं वेश भूषा

उपरोक्त निरीक्षण प्रपत्र को आधार बनाकर कुल 100 पाठों में अध्यापन कौशल के किन पक्षों पर निरीक्षकों ने अपने निरीक्षण में अधिक बल दिया है तथा कितने प्रतिशत निरीक्षण हुआ है, इन बातों के आधार पर प्रस्तुत निरीक्षण पुस्तिका का अध्ययन प्रस्तुत है ।

तालिका - 25 (ब)

टिप्पणियाँ	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
पाठ नियोजन (20)	
1/ अध्यापन से पूर्व नियोजन की	5 %
2/ पाठ नियोजन में आवृत्तियां थीं	5 %
3/ नियोजन योग्य ढंग का था	40 %
4/ पाठ योजना ध्यान देकर बनाएँ तथा गलतियाँ न दोहराएँ	10 %
5/ समाधानकारक	25 %
6/ प्रस्तावना अच्छी थी	5 %
7/ पाठ नियोजन ठीक नहीं था क्योंकि पाठ्य मुद्दे नहीं लिखे थे	5 %
8/ प्रस्तावना का नियोजन योग्य नहीं था अतः निर्देशानुसार नियोजन करें	5 %
	100 %

टिप्पणियाँ	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
उद्देश्य (37)	
1/ अच्छी तथा आचरणात्मक ढंग से थे	14 %
2/ उद्देश्य योग्य थे	14 %
3/ विशिष्ट कारणों का उल्लेख नहीं किया	5 %
4/ आचरणात्मक ढंग से लिखे गये किन्तु भाषा में सुधारने की आवश्यकता है	3 %
5/ पुस्तकमय([illegible])उद्देश्य नहीं लिखे गये	3%
6/ स्पष्ट योजना नहीं लिखी गई	3 %
7/ अपेक्षित आचरणात्मक	3 %
8/ ठीक थे	27 %
9/ उद्देश्य भिन्न ढंग से लिखे गये	3 %
10/ आचरणात्मक ढंग का अभाव	5 %
11/ समाधान कारक	8 %
12/ सुधार	3 %
13/ बहुत अच्छा	5 %
14/ उद्देश्य ठीक रूप में थे	2 %
15/ उद्देश्य स्पष्ट लिखें	2 %
	100 %

तालिका - 25 (घ)

टिप्पणियाँ	उत्तरदाताओं का प्रतिशत	टिप्पणियाँ	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
विषयवस्तु का विश्लेषण (23)		**रचना विधान (23)**	
1/ गलतियों की पुनरावृत्ति न हो	+20 %	1/ योग्य ढंग से किया गया	10 %
2/ विश्लेषण योग्य नहीं था	9 %	2/ पाठ योजना को स्पष्ट करने का प्रयास कर रहा था	5 %
3/ विश्लेषण योग्य था	17.40%	3/ अधिक प्रयास की आवश्यकता है	5 %
4/ विषयवस्तु का संक्षेप बहुत अच्छा	9 %	4/ आवश्यक नहीं	5 %
5/ अच्छा था	+20 %	5/ अधिक सुधार की आवश्यकता है	5 %
6/ विषयवस्तु पर आलोचना की गई	+20 %	6/ रेखाओं को भी विशिष्ट स्पष्ट की गई	5 %
7/ हाँ योग्य	31 %	7/ विधान अच्छी तरह से किया गया	5 %
8/ विषयवस्तु का स्पष्टीकरण दैनिक जीवन से दृष्टांत देकर करें	+20 %	8/ प्रश्नोत्तर विधि एवं युक्ति द्वारा योग्य ढंग से किया गया	10 %
9/ विषयवस्तु का विश्लेषण न किया	+20 %	9/ योग्य किन्तु अधिक स्पष्टीकरण आवश्यक	10%
10/ विज्ञान विषय के शब्दावली का योग्य उपयोग एवं स्पष्टीकरण करें	+20 %	10/ हाँ योग्य	55 %
11/ सुधार की आवश्यकता है	+20 %	11/ कुछ स्पष्टीकरण देने में कमजोर थे	5 %
12/ क्रियाओं को (एक्टीविटी) योग्य स्थान पर नहीं दिया गया	+20 %		
	100 %		100 %

टिप्पणियों का प्रत्यक्ष रूप में वर्गीकरण एवं विश्लेषण

अधिकांश छात्र " पाठ नियोजन " तथा उससे सम्बन्धित अन्य तीन अध्यापन कौशलों का विश्लेषण कर रहे हैं । ये तीन कौशल इस प्रकार हैं (1) व्यावहारिक ढंग से लिखे गये उद्देश्य (2) विषय वस्तु (3) परिकल्पनाओं का निर्माण ।

तालिका क्रमांक 25 (अ) तथा 25 (ब) का वर्णन एवं विश्लेषण :-

तालिका क्रमांक 25 (अ) तथा (25 - ब) द्वारा अपने अध्यापन कौशल के चार पक्षों पर छात्राध्यापक को प्राप्त टिप्पणियों का विश्लेषण किया है । ये पक्ष हैं :- (1) पाठ नियोजन (2) उद्देश्य (3) विषय वस्तु का विश्लेषण तथा (4) अवधारणाओं का विकास ।

निरीक्षण पुस्तिका में उल्लिखित उपरोक्त पक्षों पर प्राप्त टिप्पणियों में से केवल पाठ नियोजन के कौशल पर 20 निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी हैं उसी प्रकार उद्देश्य के लेखन पर केवल 37 निरीक्षकों ने तथा विषयवस्तु का विश्लेषण एवं अवधारणा का विकास इन पक्षों पर क्रमशः 23, 20 निरीक्षकों ने टिप्पणियाँ दी हैं । टिप्पणियाँ निम्न प्रकार की दी गयीं ।

टिप्पणियों का प्रकार :

1) छात्राध्यापकों को प्रोत्साहन देने वाली टिप्पणियाँ
2) सुझाव के रूप में दी गयीं टिप्पणियाँ
3) त्रुटि, कमियाँ तथा दोष [illegible] प्रतीत टिप्पणियाँ
4) दोष बताने वाली टिप्पणियाँ

उक्त टिप्पणियों में [illegible]

नकारात्मक स्वरूप की टिप्पणियों का अभाव है । पाठ नियोजन के पक्ष पर कुल जिन 20 निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी है उनमें से अधिकांश जैसे - 40% एवं 25% निरीक्षकों ने क्रमशः पाठ नियोजन अच्छा योग्य ढंग से किया गया तथा समाधानकारक इस प्रकार की टिप्पणियाँ दी । तदुपरान्त गलतियों को न दोहरायें, नियोजन पर अधिक ध्यान दें, पाठ नियोजन में आकृतियाँ समय पर आदि प्रकार की टिप्पणियाँ दी गईं ।

उद्देश्य के पक्ष पर अधिकांश निरीक्षकों ने वे अच्छे तथा आचरणात्मक ढंग से लिखे गये, उद्देश्य योग्य थे तथा ठीक इस प्रकार की टिप्पणियाँ दी । शेष टिप्पणियाँ, उद्देश्य आचरणात्मक ढंग से नहीं लिखे गये, उद्देश्य सीधे भाषा में लिखे गये, उन्हें स्पष्ट लिखना चाहिये इत्यादि प्रकार की टिप्पणियाँ दी गईं ।

विषयवस्तु का विश्लेषण एवं अध्यापन कौशल पर कुल जिन 23 निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी है उनमें से लगभग 65 प्रतिशत निरीक्षकों ने निरीक्षण बहुत अच्छा रहा, विश्लेषण योग्य रूप से किया गया तथा समाधान व्यक्त करने वाली टिप्पणियाँ दी है । शेष टिप्पणियों में गलतियों की पुनरावृत्ति हुई, योग्य विश्लेषण नहीं किया, विषय वस्तु का स्पष्टीकरण जीवन के क्षेत्र से दृष्टांतों का उपयोग करते रहें, अधिक सुधार की आवश्यकता है तथा विषय-वस्तु का प्रतिपादन न किये इस प्रकार की टिप्पणियाँ दी है ।

दृष्टांतों का विकास एवं कौशल पर कुल जिन 20 निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी है उनमें से अधिकांश जैसे - 10 प्रतिशत, 10 प्रतिशत, 10 प्रतिशत, एवं 35 प्रतिशत निरीक्षकों ने क्रमशः योग्य तरह से किया गया, प्रश्न पूछने की विधि एवं दृष्टांतों द्वारा योग्य ढंग से किया गया, अधिक स्पष्टीकरण चाहिये इत्यादि प्रकार के रचनात्मक स्वरूप की टिप्पणियाँ दी गईं ।

ऐसे टिप्पणियों में और प्रयत्न करो, समाधान करो, और सुधार आवश्यक, कमजोर रूप करने में कमजोर थी, इत्यादि प्रकार की टिप्पणियां दी गईं ।

निष्कर्ष

तालिका क्रमांक 25 (अ) तथा 25 (ब) के विश्लेषण द्वारा कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्षों का पता चलता है । वे निम्न प्रकार हैं :-

(1) अधिकांश टिप्पणियां धनात्मक प्रकार की हैं ।

(2) पाठ नियोजन, उद्देश्य, विषयवस्तु विश्लेषण तथा शिक्षण बिन्दुओं का विकास इन कौशलों पर बहुत कम मात्रा में टिप्पणियां दी हैं । निष्कर्ष यह निकलता है कि निरीक्षकों ने निरीक्षण कार्य में बहुत कम मात्रा में रुचि ली है । पाठों पर टिप्पणियां न होने का तात्पर्य यह है कि निरीक्षण उचित ढंग से नहीं किया गया अर्थात यह बात अनुचित है । यदि छात्राध्यापक की अध्यापन सम्बन्धी प्रभावशीलता बढ़ानी है तो इन बातों का ध्यान रखना होगा ।

(3) कमजोर निरीक्षण के कारण निरीक्षण के उपरान्त भी छात्राध्यापकों की अध्यापन सम्बन्धी गलतियाँ कम नहीं हो पाईं ।

(4) सुन्दर, ठीक, योग्य, इस प्रकार की एकल शब्द प्रयोगी टिप्पणियां अस्पष्ट रूप में हैं अर्थात टिप्पणियां स्पष्ट भाषा में ही दी जानी चाहिये ।

(5) कमजोर लिख देने वाली टिप्पणियों की संख्या अत्यधिक कम है ।

(6) कुछ टिप्पणियों पर अधिक बल दिया गया है । जैसे -

तालिका - ९.६

टिप्पणियाँ	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
अभिप्रेरणा एवं तैयारी (30)	
1/ छात्र अभिप्रेरित थे	3 %
2/ नहीं थे	13 %
3/ छात्र अभिप्रेरित थे अतः ध्यान में संलग्न	7 %
4/ पूर्णतः अभिप्रेरित थे	8 %
5/ पूर्ण तैयारी	13 %
6/ उचित प्रश्न चयन के कारण अभिप्रेरित	3 %
7/ त्रुटिपूर्ण प्रश्न पूछने के कारण अभिप्रेरित	3 %
8/ पाठ का प्रारम्भ ही अभिप्रेरणा	3 %
9/ अभिप्रेरणा [illegible]	7 %
10/ प्रयोगों को देखने से छात्र स्वयं ही अभिप्रेरित होते हैं	7 %

टिप्पणियाँ	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
युक्ति एवं साधन (40)	
1/ प्रश्नोत्तर एवं व्याख्यान विधि	25 %
2/ केवल व्याख्यान विधि का प्रयोग	25 %
3/ अधिक मात्रा में श्यामपट्ट का प्रयोग	5 %
4/ प्रश्नोत्तर एवं [illegible] विधि का अधिक प्रयोग	12.5 %
5/ [illegible]	5 %
6/ प्रश्नोत्तर एवं प्रदर्शन विधि	25 %
7/ व्याख्यान तथा प्रश्नोत्तर विधि दोनों का प्रयोग	12.5 %
8/ केवल प्रश्नोत्तर विधि	17.5 %
9/ उदाहरण द्वारा [illegible]	25 %
10/ [illegible]	25 %

(1)	(2)	(3)	(4)
11/ त्रुटिपूर्ण दृष्टिकोण थे	3 %	11/ व्याख्यान विधि का अधिक सिद्ध नाटकीय विधि का कम प्रयोग	2.5 %
12/ त्रुटिपूर्ण दृष्टिकोण एवं उनको तैयारी	10 %	12/ व्याख्यान विधि का कम प्रयोग करें	2.5 %
13/ छात्रों को प्रेरित करें	3 %	13/ छात्रों को श्यामपट्ट पर बुलाने से कम समय लगेगा	2.5 %
14/ तैयारी बहुत कमी	10 %	14/ टैक्नोलॉजी पद्धति का प्रयोग करें	2.5 %
15/ उच्च पाठ्यक्रम के और वास्तविक थे	3 %	15/ प्रश्नोत्तर विधि प्रभावी रहे	5 %
16/ भिन्न वस्तु के ज्ञान के उनको तैयारी	3 %	16/ प्रश्नोत्तर विधि द्वारा उसकी पद्धति का प्रयोग	5 %
17/ व्यापक सुधार की आवश्यकता	6 %	17/ प्रश्नोत्तर एवं चर्चा विधि का प्रयोग	2.5 %
		18/ वादविवाद एवं उच्चारण में सुधार आवश्यक । वातावरण में शिक्षक के भाव दृष्टिगोचर होने चाहिए	2.5 %
		19/ छात्रों की अपेक्षा सुधार	2.5 %
		20/ चार्ट की मदद से चर्चा करें	2.5 %
		21/ निरीक्षण एवं अनुमान विधि का प्रयोग	2.5 %
		22/ प्रश्नोत्तर विधि का ज्यादा ज्ञान दें	2.5 %
	100 %		100 %

तालिका क्रमांक 26 का वर्णन एवं विश्लेषण -

उपरोक्त तालिका द्वारा हमने अध्यापन कौशल के दो पक्षों पर छात्राध्यापकों को मिले टिप्पणियों का विश्लेषण किया है । अध्यापन पद्धति एवं तकनीक तथा अभिप्रेरणा एवं तैयारी इन दो पक्षों पर क्रमशः 40 तथा 30 निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियां दी हैं। शेष निरीक्षकों ने उपरोक्त पक्षों के सम्बन्ध में अपना मत नहीं दिया । टिप्पणियां निम्न के रूप में दी गई - (1) छात्राध्यापक के अध्यापन सम्बन्धी स्थिति को दर्शाने वाली । (2) प्रोत्साहन देते हुए अध्यापन कौशल सम्बन्धी उचित निर्देश देने वाली ।

अभिप्रेरणा एवं तैयारी के पक्षों के सम्बन्ध में जिन 30 निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियां दी हैं उनमें से अधिकांश टिप्पणियां समाधान प्रकट करने के स्वरूप में दी हुई हैं । इन टिप्पणियों का कुल प्रतिशत लगभग 70% है । शेष 30% टिप्पणियां छात्रों के अभिप्रेरणा का कारण दर्शा कर सुझाव दे रही हैं जैसे - उत्तर प्रश्न करने के कारण तथा कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने के कारण उसी प्रकार प्रयोग को देखकर छात्र अभिप्रेरित होते हैं । तैयारी अच्छी थी, पाठ का प्रारम्भ भी अभिप्रेरणा है तथा छात्रों को क्रियाशील बनाते हुए आदि प्रकार की भी कुछ टिप्पणियां हैं ।

अध्यापन पद्धति एवं तकनीक के पक्षों के सम्बन्ध में कुल जिन 40 निरीक्षकों ने टिप्पणियां दी उनमें से 17.5% निरीक्षकों के विचार थे । प्रश्नोत्तर प्रणाली का उपयोग योग्य रूप में किया गया । 12.5 % निरीक्षकों ने व्याख्यान विधि मात्रा अधिक किन्तु प्रश्नोत्तर विधि की मात्रा कम तथा 12.5% निरीक्षकों ने दोनों विधि की मात्रा समान रूप प्रकार

को टिप्पणियाँ दी ।

निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययन से निम्न प्रकार के निष्कर्ष निकलते हैं :-

(1) प्रोत्साहित करने वाली टिप्पणियों का अभाव था ।

(2) केवल तीन ही प्रधान निरीक्षकों ने टिप्पणियाँ दीं तथा शेष निरीक्षकों ने बिल्कुल भी टिप्पणियाँ नहीं दीं जब कि देखा जाता है । यदि छात्राध्यापक ने अध्यापन उपलब्धि ठीक नहीं की है तो उस समय भी प्रोत्साहित करने वाली टिप्पणियाँ देनी चाहिये परन्तु बिल्कुल भी टिप्पणियाँ न देना निरीक्षण कार्य के निरीक्षकों की आदत पर प्रकाश डालता है ।

(3) कुछ निम्न प्रकार के सुझाव सुझाये गये -

   (1) प्रश्नोत्तर विधि का अधिक प्रयोग करें ।
   (2) आवश्यकता होने पर छात्रों को श्यामपट्ट पर बुलावें ।
   (3) वाचन आदर्श रूप में हो तथा उच्चारण में सुधार आवश्यक है ।
   (4)

(4) कुछ नई विधियों का भी प्रयोग किया गया जैसे - समस्या समाधान विधि, चर्चा तथा नाटकीय विधि इत्यादि ।

(5) एक निरीक्षक ने टेक्नीकल पद्धति का प्रयोग सुझाया किन्तु उसे निश्चित रूप से क्या रखना है यह स्पष्ट नहीं किया अतः आवश्यकता है कि निरीक्षक टिप्पणियों को स्पष्ट रूप में लिखें ।

कठिनाई	उत्तरदाताओं का प्रतिशत	कठिनाई	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
प्रश्न पूछने में [illegible] (42)		[illegible] (26)	
1/ प्रश्न अनुचित लगता है पूछें कैसे	125 %	1/ आत्मबल [illegible]	4 %
2/ [illegible] प्रश्नों की [illegible]	35 %	2/ बहुत [illegible] है फिर भी सुधार आवश्यक	4 %
3/ प्रश्न का ढंग पता नहीं था	5 %	3/ [illegible]	11 %
4/ प्रश्न [illegible]	25 %	4/ [illegible]	4 %
5/ प्रश्न [illegible]	25 %	5/ [illegible]	23 %
6/ आत्मबल [illegible]	3 %	6/ [illegible]	4 %
7/ प्रश्न [illegible]	25 %	7/ [illegible] उत्पन्न किया है	4 %
8/ प्रश्न [illegible]	25%	8/ [illegible]	11 %
9/ प्रश्न [illegible]	25%	9/ [illegible] प्रशिक्षण [illegible]	4 %
10/ [illegible]	[illegible]	10/ [illegible] पढ़ाया गया	11 %
11/ प्रश्न [illegible]	5 %	11/ [illegible] विधि के कारण [illegible] नहीं [illegible]	8 %
12/ उत्तर देने वाले छात्रों की भी पूछते	25 %	12/ [illegible]	4 %

(1)	(2)	(3)	(4)
13/ प्रशासित विधि का [illegible] नाम है [illegible] हुआ	25 %	13/ [illegible] सभी छात्रों [illegible] ध्यान न [illegible]	4 %
14/ प्रश्नों की पुनरावृत्ति न करें	25 %	14/ सीने से कहें	4 %
15/ उत्तर को स्पष्टीकरण न दें	25 %		
16/ क्लिष्ट प्रश्नों का प्रयोग हुआ	25 %		
17/ विशेष छात्रों से ही प्रश्न पूछे	25 %		
18/ पूर्व ज्ञान की जांच से सम्बन्धित वे [illegible] प्रश्न करें	25 %		
19/ सभी छात्रों का [illegible]	25 %		
20/ पूर्ण [illegible] वाले यदि प्रश्न पूछे	25 %		
21/ अलग अलग स्थान से प्रश्न पूछे	25 %		
22/ पाठ की [illegible] करने वाले प्रश्न पूछ कर प्रारम्भ करें	5 %		
23/ आपके द्वारा प्रश्न पूछे [illegible] सबने आपकी निम्नांकित [illegible] की [illegible] करें	25 %		
	100 %		100 %

सारिणी क्रमांक 27 का अर्थ एवं विश्लेषण -

उपरोक्त सारिणी के अध्ययन के द्वारा यह ज्ञात होता है कि प्रश्न पूछने का ढंग एवं पाठ का विकास इन बिंदुओं पर क्रमशः केवल 40 और 26 निरीक्षकों ने ही अपनी टिप्पणियां दी हैं । प्रश्न पूछने के ढंग के बिंदु पर दी गई टिप्पणियां अधिकतर सुझाव के रूप में हैं । केवल 35% निरीक्षकों ने प्रश्न पूछने के ढंग को ठीक एवं सामान्यतया बताया ।

पाठ का विकास इस बिंदु पर 26 यानी कि लगभग 46% निरीक्षकों ने जो टिप्पणियां दी हैं वह सामान्यतः इस प्रकार है : सामान्य रूप, ठीक ढंग से, कुछ सुधार आवश्यक है, छात्रों के सहयोग से पाठ का विकास किया गया, उचित, अच्छा इत्यादि प्रकार के शब्दों द्वारा अपनी अभिमत प्रकट करते हैं ।

निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययन से निम्न निष्कर्ष ज्ञात होते हैं :-

1/ प्रश्न पूछने के ढंग के बिंदु पर केवल 40 निरीक्षकों ने ही अपनी टिप्पणियां दीं शेष 60 निरीक्षकों ने निरीक्षकों ने निरीक्षण के समय इस ओर ध्यान नहीं दिया ऐसा दिखाई देता है अर्थात निरीक्षक अपना उत्तरदायित्व नहीं समझते यह अनुचित है ।

2/ प्रश्न पूछने के ढंग पर जो महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुए वे इस प्रकार हैं :-

1/ प्रश्न सम्पूर्ण कक्षा से पूछे जायें
2/ स्मरणात्मक प्रश्नों की उपेक्षा होनी चाहिये

3/ प्रश्न पूछते समय विशिष्ट स्थान [illegible] दी जाती है।

4/ जो छात्र ध्यान न [illegible] उन्हें प्रश्न पूछे जायें

5/ प्रश्नों की पुनरावृत्ति न हो

6/ प्रश्नों का क्रम व्यवस्थित हो

7/ पुनर्बलन हेतु उचित प्रश्न पूछे जायें

8/ उत्तर निर्धारित न हो ऐसे भी प्रश्न पूछे जायें

9/ [illegible] प्रश्न पूछे [illegible]

3/ पाठ के विकास के सम्बन्ध में जिन महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान दिया जाता है वह इस प्रकार है :-

1/ पाठ के विकास हेतु क्रियात्मक प्रश्न पूछें।

2/ पाठ का विकास [illegible] नये [illegible] एवं विवेक के [illegible] जाना चाहिये।

3/ विकास [illegible] शब्दों [illegible] न [illegible]

4/ विषयवस्तु [illegible] करें।

उपरोक्त बातों के [illegible] करने पर [illegible] तथा निरीक्षण पद्धति अत्यधिक प्रभावी हो सकती है किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि निरीक्षण कर्ता [illegible] ईमानदारी से [illegible] चाहिये तथा निरीक्षण में [illegible] की जायें।

तालिका - 20

क्रमांक	टिप्पणियां	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
	प्रश्नों का [illegible] एवं [illegible]	(80)

1/	छात्रों का प्रतिउत्तर रहता है किन्तु वह [illegible]	3 %
2/	रहता है (कै॰)	6 %
3/	छात्रों का [illegible] उपभाग रहता है	10 %
4/	पाठ विकास में [illegible] छात्रों [illegible]	7 %
5/	रहता (शुद्ध)	17 %
6/	पाठ में सम्बन्धित प्रयोग में [illegible] छात्रों [illegible]	
	[illegible] सकते नहीं	3 %
7/	[illegible]	3 %
8/	[illegible]	
	[illegible] आवश्यकता है	3 %
9/	[illegible] छात्रों का [illegible] प्रश्न पूछा किन्तु सम्बन्धित उत्तर	
	[illegible] का प्रभाव नहीं	2 %
10/	शिक्षक के पाठ में छात्रों की रुचि के उत्तर देते हैं	2 %
11/	[illegible] भाषा में छात्रों के उपभाग [illegible]	
	[illegible]	2 %
12/	छात्रों को प्रश्न पूछने हेतु प्रोत्साहन का अभाव	2 %
13/	[illegible] उपभाग थे	3 %
14/	[illegible]	
	[illegible]	
	न करें	2 %
15/	छात्रों को [illegible] तथा उनके प्रश्न पूछने की	2 %
16/	[illegible] उपभाग करते था	2 %
17/	[illegible]	2 %
18/	छात्रों के [illegible] की आवश्यकता है	2 %
19/	[illegible] देने हेतु छात्रों की ओर [illegible] करें	2 %

20/	छात्रों की मदद से समस्या का हल खोजने की बात कहते थे	3 %
21/	छात्र कक्षा में व्यवस्था बनाए रहे हैं	3 %
22/	छात्र पाठ्यवस्तु को समझ रहे थे	2 %
23/	परम्परागत पद्धति को सुधारने का तथा उसको छात्रों को उपयोगी बनाने का प्रयास किजिए	2 %
24/	सभी छात्रों को न सीखाते थे	2 %
25/	कक्षा में पीछे बैठे हुए छात्रों को पाठ में सम्मिलित कीजिए	2 %
26/	अधिक छात्रों को अध्यापन में सहभागी होने हेतु प्रोत्साहन देना चाहिये	7 %
27/	छात्र क्रियाशील एवं पाठ्याध्यापन में प्रसन्न लगते थे	2 %
28/	छात्रों की मदद से सामान्यीकरण किया गया	2 %
		100 %

तालिका क्रमांक 28 का अर्थ एवं विवेचना -

उपरोक्त तालिका से यही ज्ञात होता है कि छात्रों का सहभाग एवं आभ्यासिक इस पहलू पर कुल 60 निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी हैं। 60 निरीक्षकों में से केवल 30% निरीक्षकों ने निम्न प्रकार की टिप्पणियाँ दी :-

1/ छात्रों का प्रतिउत्तर अच्छा था किंतु वह अधिक मात्रा में होना चाहिये।

2/ अच्छा।

3/ छात्रों का क्रियात्मक सहभाग योग्य तथा उनकी प्रसन्नता

4/ अध्यापन करते है तथा छात्र शांत हो रहे है

5/ उन्होंने पढ़ने सम्बन्धी बातों को ध्यान अच्छा पढ़ना चाहिये है ।

6/ छात्रों की उपस्थिति की अवस्था का पता चलता जाता

7/ छात्रों की उपस्थिति से विषय-वस्तु का सामान्य ज्ञान किया गया इत्यादि ।

शेष 40 निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ अध्यापन सम्बन्धी सुधार हेतु की उद्देश्य से दी है तथा 10% टिप्पणियाँ अन्य प्रकार की है ।

निष्कर्ष :-

उपरोक्त जानकारी से निम्न निष्कर्ष निकलते है -

1/ उपर निर्दिष्ट अध्यापन कौशल पर 60 निरीक्षकों ने दी हुई टिप्पणियाँ निरीक्षण सम्बन्धी उनकी रुचि को दर्शाती है फिर भी वे अधिक मात्रा में रुचि लें यह अपेक्षा है ।

2/ छात्राध्यापकों को प्रोत्साहित करने वाली टिप्पणियाँ नहीं दी गई ।

3/ अध्यापन सम्बन्धी सुधार के उद्देश्य से जो टिप्पणियाँ दी गई वे निम्न सुझावों के रूप में -

1/ सामूहिक उत्तर को टालना
2/ प्रयोग कार्य में छात्रों को अधिक मात्रा में उपयोग करना
3/ शिक्षक या छात्रों को स्वयं ही उत्तर न बताना
4/ प्रश्न पूछने के लिये छात्रों को प्रोत्साहन देना

तालिका - 23

टिप्पणी	छात्राध्यापकों का प्रतिशत	टिप्पणी	छात्राध्यापकों का प्रतिशत
शिक्षण बिन्दु (5)		[illegible] (35)	
1/ कमी (कुछ)	20 %	1/ शिक्षण बिन्दु के [illegible] के अनुसार प्रभावी उपयोग	3%
2/ उचित	8 %	2/ ब्लैक बोर्ड पर प्रश्न लिखकर छात्रों के [illegible]	5 %
3/ पहली [illegible] समय में पूरी नहीं की गई	4 %	3/ [illegible]	3 %
4/ कुशलता से वर्णित	16 %	4/ चार्ट [illegible] उपयोग	3 %
5/ शिक्षण बिन्दु के महत्वपूर्ण [illegible] स्पष्टीकरण [illegible]	4 %	5/ ब्लैकबोर्ड पर [illegible] द्वारा स्पष्टीकरण किया गया	6 %
6/ [illegible] टिप्पणियों [illegible]	4 %	6/ [illegible] शिक्षण बिन्दु के अनुसार किया गया	3 %
7/ शिक्षण बिन्दु का विस्तार बहुत [illegible] था	24 %	7/ ब्लैक बोर्ड [illegible]	37 %
8/ उदाहरणों द्वारा स्पष्टीकरण किया गया	4 %	8/ [illegible] का उपयोग [illegible] था	3 %
9/ अनुचित	8 %	9/ अच्छा	3 %

(1)	(2)	(3)	(4)
10/ किमवस्तु [illegible] प्रकाश किया गया किन्तु [illegible] आवश्यकता है	4 %	10/ [illegible]	3 %
11/ [illegible] किमवस्तु [illegible] आकृति में [illegible]	4 %	11/ [illegible]	03 %
		12/ [illegible]	11 %
		13/ [illegible]	3 %
		14/ [illegible]	5 %
		15/ [illegible]	3 %
		16/ [illegible]	3 %
		17/ [illegible] पर [illegible] ?	3 %
	100 %		100 %

तालिका संख्या 29 का वर्णन एवं विश्लेषण -

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि विषयवस्तु तथा अध्यापन सामग्री एवं कौशलों पर क्रमशः कुल 12 एवं 35 निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी है अर्थात यह भाग अपेक्षाकृत कम है ।

विषयवस्तु के सम्बन्ध पर कुल जितने निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी है उनमें अस्सी प्रतिशत निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ प्रशंसा एवं उनके हेतु दी है जैसे -

1/ विषयवस्तु अच्छी तथा समुचित थी

2/ विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण व्यवस्थित एवं सुन्दर ढंग से किया गया

3/ विषयवस्तु का विश्लेषण उचित ढंग से एवं प्रश्नों द्वारा किया गया ।

4/ विषयवस्तु सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तरों द्वारा स्पष्टीकरण उचित है ।

शेष 12% प्रतिशत निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ सुझावों के रूप में दी है जैसे -

1/ विषयवस्तु इतनी व्यवस्थित रहे कि निर्धारित समय में पूर्ण हो जाये ।

2/ महत्वपूर्ण बिन्दुओं का स्पष्टीकरण किया जाय

3/ छात्रों को टिप्पणियाँ लिखा देना उचित है ।

अध्यापन सामग्री के कौशल पर कुल जितने निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी उनमें अधिकांश (85%) निरीक्षकों के विचार से ब्लैक बोर्ड, श्यामपट्ट कार्य तथा चार्ट एवं मॉडल पर लिखित सामग्री आदि सहायक सामग्री का अधिक मात्रा में प्रभावी ढंग से

[illegible]

निष्कर्ष -

उपरोक्त अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं -

1/ निरीक्षकों ने निरीक्षण में [illegible] की मात्रा में कमी की है ।

2/ जिसमें निरीक्षकों ने [illegible] निरीक्षण [illegible] उन्होंने [illegible] [illegible] दी है ।

3/ अध्ययन में अधिकांश [illegible] एवं [illegible] आदि का उपयोग किया गया

4/ अधिकांश [illegible] ने [illegible] को [illegible] अधिक [illegible] प्रभावी [illegible] ।

5/ [illegible] में [illegible] एक महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुआ है ।

6/ कुछ निरीक्षकों के विचार से [illegible] देना [illegible] है ।

7/ अधिकांश निरीक्षकों के विचार से अधिकतम मात्रा में उपयुक्त सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिये ।

तालिका - 30

टिप्पणियां	उत्तरदाताओं का प्रतिशत	टिप्पणियां	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
श्यामपट्ट जैसा (52)		प्रयोग प्रदर्शन [illegible] (20)	
1/ श्यामपट्ट जैसा होता है किन्तु बड़ा बड़ी होनी चाहिये	4 %	1/ [illegible]	5 %
2/ बहुत अच्छा एवं सुन्दर था	22 %	2/ [illegible] बिजली गयी	20 %
3/ पर्याप्त है	7 %	3/ कोई प्रदर्शन नहीं किन्तु [illegible] होना था	5 %
4/ रंग बिरंगे चॉक का उपयोग करें	2 %	4/ प्रयोग [illegible] किया गया	5 %
5/ प्रत्येक दिन के अपेक्षा सुधार है	2 %	5/ कोई प्रदर्शन नहीं	10 %
6/ अच्छी तरह [illegible] है	2 %	6/ प्रयोग [illegible] उपयोग करें	5 %
7/ आवश्यकतानुसार [illegible]	13 %	7/ [illegible] प्रयोग [illegible] प्रदर्शन पद्धति का उपयोग [illegible]	5 %
8/ अच्छा है किन्तु [illegible] का अभाव है	7 %	8/ प्रयोग प्रदर्शन [illegible] सरल था	5 %
9/ श्यामपट्ट पर [illegible]	2 %	9/ कुछ तो प्रयोग होते हैं	5 %

(1)		(2)	(3)		(4)
10/	[illegible]	2 %	10/	[illegible]	5 %
11/	[illegible]	5 %	11/	[illegible]	5 %
12/	[illegible]	3 %	12/	[illegible]	10 %
13/	[illegible]	2 %	13/	[illegible]	5 %
14/	[illegible]	3 %	14/	[illegible]	10 %
15/	[illegible]	2 %	15/	[illegible]	10 %
16/	[illegible]	2 %			
17/	[illegible]	9 %			
18/	[illegible]	5 %			
19/	[illegible]	3 %			
20/	[illegible]	5 %			
		100 %			100 %

तालिका क्रमांक 30 का वर्णन एवं विवेचना -

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि इकाईबद्ध लेखन तथा प्रयोग प्रदर्शन पद्धति का प्रयोग करने की आवश्यकता पर क्रमशः 55 एवं 20 शिक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी हैं। कुल जितने शिक्षकों ने इकाईबद्ध लेखन के औचित्य पर अपनी टिप्पणियाँ दीं उनमें से 30% शिक्षकों ने [illegible] पाठ्यवस्तु [illegible] को [illegible] पर [illegible] व्यक्त किया है। जैसे - इकाईबद्ध [illegible] पढ़ना सरल, [illegible] है तथा [illegible] है आदि। क्रमशः 42% शिक्षकों ने विभिन्न प्रकार के महत्वपूर्ण सुझावों पर बल दिया है जैसे -

1/ अक्षर बड़े, छपा तथा [illegible] होनी चाहिये

2/ एक निश्चित [illegible] उपयोग किया जाय

3/ [illegible] है, [illegible] इकाईबद्ध [illegible] आदि।

कुछ टिप्पणियाँ [illegible] की गयी हैं। टिप्पणियाँ जो देने वाले शिक्षकों के मात्र 17% हैं जैसे, [illegible] का अभाव है, इकाईबद्ध [illegible] जा सकता है, अक्षर [illegible] नहीं है इत्यादि प्रकार की टिप्पणियाँ दीं।

कुल जितने शिक्षकों ने प्रयोग प्रदर्शन पद्धति का प्रयोग किया उस सम्बन्ध में अपनी टिप्पणियाँ दीं उनमें 60% शिक्षकों ने उपरोक्त औचित्य का [illegible] पर [illegible] व्यक्त किया है। 35% प्रतिशत शिक्षकों ने प्रदर्शन पद्धति को अधिक बल दिया है तथा [illegible] किया जाये तो उसका [illegible] महत्व है।

निष्कर्ष -

उपरोक्त वर्णन से हमें निरीक्षण के निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैं -

1/ श्यामपट्ट के कार्य के कौशल पर केवल 55 निरीक्षकों ने ही अपनी टिप्पणियां दीं। यह [illegible] है।

2/ [illegible] निरीक्षण [illegible]।

3/ 420 निरीक्षकों ने श्यामपट्ट लेखन सम्बन्धी महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं - [illegible] लिखावट अच्छी तथा स्पष्ट हो, मात्राओं [illegible], श्यामपट्ट पर तथा तारीख आदि लिखें, [illegible] इत्यादि।

4/ 80% छात्राध्यापक निरीक्षकों के विचार से अर्जित पद्धति का प्रयोग सफलता पूर्वक किया गया है।

5/ कुछ टिप्पणियां स्पष्ट रूप से लिखी गई हैं जैसे- प्रदर्शन [illegible] टिप्पणी [illegible]।

6/ [illegible] टिप्पणी नहीं दी गई

[illegible]।

तालिका - 31 -

विवरण	उत्तरदाताओं का प्रतिशत	विवरण	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
[illegible] (40)		[illegible] (42)	
1/ [illegible] था	33 %	1/ [illegible]	11 %
2/ [illegible] था	2 %	2/ [illegible] है	7 %
3/ [illegible] थी	3 %	3/ [illegible] है	29 %
4/ [illegible] क्या था	12 %	4/ [illegible]	2 %
5/ [illegible] था	8 %	5/ [illegible]	20 %
6/ [illegible]	3 %	6/ [illegible] था	9 %
7/ [illegible]	8 %	7/ [illegible]	2 %
8/ [illegible]	[illegible]	8/ [illegible] है	2 %
9/ [illegible]	2 %	9/ [illegible]	2 %

(1)	(2)	(3)	(4)
10/ [illegible]	3 %	10/ [illegible]	26
11/ [illegible]	5 %	11/ [illegible] तथा [illegible] था और [illegible]	3 %
12/ [illegible]	2 %	12/ [illegible] सुधार [illegible] है	2 %
13/ [illegible]	3 %	13/ [illegible] नियम [illegible] करते [illegible]	3 %
14/ [illegible]	8 %		
15/ [illegible]	3 %		
16/ [illegible] है	3 %		
17/ [illegible] था	3 %		
	100 %		100 %

कालिका क्रमांक 31 का निरीक्षण एवं वर्णन -

उपरोक्त कालिका [illegible] [illegible] निरीक्षकों ने कक्षा के भौतिक वातावरण तथा कक्षा व्यवस्था पक्ष की वस्तुओं पर अपनी टिप्पणियाँ दी [illegible] 40 और 45 है। उपरोक्त दोनों वस्तुओं के निरीक्षण के लिए टिप्पणियाँ [illegible] प्रकार की हैं (1) [illegible] (2) [illegible] कक्षा में [illegible] तथा प्रोत्साहन [illegible] [illegible]।

कक्षा के [illegible] [illegible] करने वाले निरीक्षकों का प्रतिशत क्रमशः 87 प्रतिशत है तथा उन्होंने निम्न वस्तुओं [illegible] टिप्पणियाँ दी हैं -

1/ कक्षा कक्ष में पूर्ण [illegible] था
2/ [illegible] रखा
3/ कक्ष स्वच्छ था तथा [illegible] अच्छा था
4/ कक्ष [illegible] अच्छा था
5/ सभी छात्रों का [illegible] हुआ
6/ शिक्षक [illegible] था तथा कक्षा का वातावरण पूर्ण रूप से अनुशासन [illegible] था।

10.6 प्रतिशत निरीक्षकों ने निम्न सुझाव दिये -

1/ सम्पूर्ण कक्षा पर ध्यान [illegible] करें
2/ अध्यापन [illegible] [illegible]
3/ [illegible] [illegible] करें

कक्षा व्यवस्था के कौशल पर जिन निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी हैं उनमें 80% प्रतिशत निरीक्षकों ने प्रस्तुत कौशल के प्रयोग सम्बन्धी अपना सन्तोष व्यक्त किया है। शेष 20% प्रतिशत निरीक्षकों ने [illegible] सुधार सम्बन्धी सुझाव दिये हैं। 4% प्रतिशत निरीक्षकों ने दिये हुए सुझाव का [illegible] शक्ति के आधार है जैसे – कक्षा में बैठने की व्यवस्था उचित – कक्षा में पीछे बैठे छात्रों [illegible] शिक्षा भाग न मिलना तथा [illegible] कुर्सियों पर [illegible] है।

निष्कर्ष –

उपरोक्त अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए – (1) अधिकांश मात्रा में [illegible] शिक्षकों ने निरीक्षण में भाग नहीं लिया (2) 80% प्रतिशत निरीक्षकों के विचार से कक्षा व्यवस्था उचित था नहीं (3) 87% प्रतिशत निरीक्षकों के विचार कक्षा में उचित सामाजिक वातावरण था। (4) कक्षा में सामाजिक वातावरण एवं [illegible] में छात्र शिक्षक सहयोग [illegible] छात्रों [illegible] द्वारा शिक्षा और [illegible], सम्पूर्ण छात्रों का ध्यान एवं सहयोग, पूर्ण रूचि [illegible] एवं नियंत्रण, छात्र शिक्षक [illegible], छात्रों में आत्मनिर्भरता तथा रचनात्मक की क्रियाशीलता जैसे बातों का निरीक्षण किया गया (5) कक्षा व्यवस्था के कौशल में कक्षा निर्माण बैठने की व्यवस्था इत्यादि पक्षों पर निरीक्षण किया गया।

सामान्य रूप से निरीक्षण कार्य ठीक ढंग का हुआ है

तालिका - 32 -

क्रमांक	टिप्पणियां	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
	व्यक्तित्व पटल (15)	
(1)	प्रिय	13 %
(2)	प्रभावी	7 %
(3)	प्रधानाध्यापक व्यक्तित्व न रहीं	7 %
(4)	अच्छा	60 %
(5)	समाधान कारक	13 %
		100 %

कथन एवं विश्लेषण -

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि कुल 100 निरीक्षकों में से केवल 15 निरीक्षकों ने ही उपरोक्त कौशल के निरीक्षण पर ध्यान दिया है तथा अपनी टिप्पणियां दी हैं। अधिकांश दूसरे निरीक्षकों के विचार से प्रधानाध्यापक का व्यक्तित्व प्रिय, प्रभावी तथा समाधानकारक रहा। इन टिप्पणियों में व्यक्तित्व के सम्बन्ध में कोई विशेष प्रकार की टिप्पणियां नहीं दी गईं। सभी टिप्पणियां प्रायः एक जैसी हैं।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत अध्ययन से निम्न निष्कर्ष निकलते हैं

1/ केवल 15 निरीक्षकों ने ही इस पक्ष का निरीक्षण किया जब गम्भीर बात है। निरीक्षकों ने अपना उत्तरदायित्व ठीक ढंग नहीं निभाया है यह स्पष्ट है।

2/ अध्यापकों का व्यक्तित्व प्रभाव अच्छा एवं योग्य था।

3/ अध्यापकों को अपनी व्यक्तित्व का ज्ञान था यह प्रतीत होता है।

तालिका - 35 -

क्रमांक	टिप्पणियाँ	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
	अध्यापक की आवाज, भाषा एवं अन्य विचार (64)	
1/	वाक्य विराम के साथ पढ़ाना	17 %
2/	उच्चारण अशुद्ध था जैसे - आकाश को आकास बोलना	3 %
3/	मधुर आवाज, मुस्कान एवं निडरता से स्पष्ट आवाज में पढ़ाना	2 %
4/	प्रभावी - किंतु अन्य विचार की आवश्यकता	5 %
5/	समाधान-रहित	5 %
6/	अच्छा (शुद्ध)	8 %
7/	प्रभावी	3 %
8/	आवाज संतुलित एवं आत्मविश्वास पूर्ण	5 %
9/	अध्यापक की तैयारी एवं अन्य विचार दोनों अच्छे	11 %
10/	अन्य विचार	9 %
11/	उत्साहवर्धक बोलियाँ	3 %
12/	धीमी आवाज में बोलिये	2 %
13/	संतुलित आत्मविश्वास	5 %
14/	आत्मविश्वास पूर्ण तेज तथा सुनाई पड़ने वाली आवाज	2 %
15/	पर्याप्त मीठी एवं प्रभावी आवाज	2 %

(1)	(2)	(3)
16/	अधिक आत्म विश्वास की आवश्यकता है	2 %
17/	मोटे स्वर में जोर से बोलिये	3 %
18/	अपने वाक्यों को बोलने की आदत डालिये	2 %
19/	प्रथम दिन की अपेक्षा अधिक आत्म विश्वास दिखाई दिया	2 %
20/	धाराप्रवाही बोलिये	2 %
21/	रुकों से मत बोलिये, आवाज और प्रभावी बनाइये	2 %
22/	सन्तोषजनक आत्म विश्वास से परिपूर्ण, नियोजित, उत्साही अभिनय एवं सहानुभूति से परिपूर्ण था	2 %
23/	आदर्श व्यवहार तथा प्रस्तुतीकरण	2 %
		100 %

व्याख्या एवं विश्लेषण -

तालिका क्रमांक 33 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि सम्बन्धित कौशल पर कुल 64 निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी थीं, जिनमें से 79 % निरीक्षकों ने सम्बन्धित कौशल के सफलतापूर्वक प्रयोग किये जाने पर विभिन्न प्रकार की टिप्पणियों द्वारा अपना समाधान व्यक्त किया है। 24% निरीक्षकों ने सुधार सम्बन्धी कुछ उपाय सुझाये हैं।

निष्कर्ष -

उपरोक्त अध्ययन द्वारा निम्न निष्कर्षों पर पहुँचा जाता है -

1/ 64 निरीक्षकों ने अध्यापक की आवाज, भाषा एवं आत्म विश्वास सम्बन्धी पक्षों पर टिप्पणियाँ दीं।

2/ उपरोक्त अध्यापन ग्रेडिंग का पाठ्यापन में पाठ्यसामग्री [illegible] रखने के कारण जिन निरीक्षकों ने टिप्पणी द्वारा अपना समाधान व्यक्त किया व उन्होंने अधिकांश इस प्रकार की टिप्पणियां दीं जैसे - पाठ सफल शिक्षण के साथ प्रस्तुत, बहुत उत्तम, सुन्दर, बिना रुकावट के स्पष्ट आवाज में पढ़ाया । पाठ्यापन उत्साहवर्धक, अच्छा, प्रभावी, [illegible] भाषा में एवं आत्मविश्वासपूर्ण, सैम्पलों के साथ, सीधा तथा [illegible] आवाज में और कक्षा को उत्साहित [illegible] करते हुये उन्हें [illegible] एवं [illegible] के द्वारा पढ़ाया ।

3/ निरीक्षकों ने जो सुझाव दिये हैं वे इस प्रकार हैं - आत्मविश्वास की आवश्यकता है, उत्साहवर्धक कीजिये, धीमे आवाज में बोलिये, [illegible] एवं व्यावहारिक [illegible] इत्यादि ।

[illegible] विवरण निरीक्षण [illegible] ढंग से लिया गया ।

तालिका - 24

टिप्पणियां	प्रतिशत	टिप्पणियां	प्रतिशत
अच्छा (रिइन्फोर्समेन्ट) (7)		सीखने की क्षमता एवं अवधारणा (4)	
1. आवश्यकता है	43 %	1. योग्य	50 %
2. अच्छी (गुड)	43 %	2. अच्छी	25 %
3. कुछ कम [illegible]	14 %	3. अवधारणा में सुधार	25 %
	100 %		100 %

व्याख्या एवं विश्लेषण :-

तालिका क्रमांक 24 द्वारा यह स्पष्ट होता है कि कथावस्तु तथा शैली की क्षमता एवं वेशभूषा पक्ष की कमियों पर जिन निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी हैं उन निरीक्षकों की संख्या न के बराबर है उदाहरणार्थ - 7 और 4, अर्थात उपरोक्त दो पक्षों के निरीक्षण में निरीक्षकों ने ध्यान नहीं दिया है ।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत तालिका के अध्ययन से निम्न निष्कर्ष निकलते हैं :-

1/ निरीक्षकों द्वारा उपरोक्त पक्षों के निरीक्षण पर अत्याधिक न्यून मात्रा में ध्यान दिया गया । यह प्रवृत्ति अनुचित है अतः आवश्यक है कि निरीक्षक इन पक्षों का उचित तथा पूर्ण रूपेण निरीक्षण करें ।

2/ कथावस्तु पक्ष के सम्बन्ध में जो टिप्पणियाँ दी गई हैं वह इस प्रकार हैं - कमजोर है, अच्छी है, ठीक ठीक लिखिए ।

3/ वेशभूषा एवं शैली की अच्छाई, व ... पक्ष के सम्बन्ध में निरीक्षकों का पूर्ण समाधान दिखाई देता है फिर भी 0.5% प्रतिशत निरीक्षकों ने वेशभूषा के सुधार पर ध्यान देने का अनुरोध किया है ।

सारिणी - 55 -

:: कुछ अन्य टिप्पणियों का विश्लेषण ::

क्रमांक	टिप्पणियाँ (15)	प्रतिशत
1/	अध्यापक-छात्र के कक्षा का वातावरण देख यथानुसार प्रश्न को कक्षा तक सीमित रख जा रहा है	3 %
2/	प्रस्तावना बहुत उपयुक्त था	2 %
3/	प्रश्न पूछने के बाद सभी प्रश्न श्यामपट्ट पर न लिखें	3 %
4/	पाठ्य पुस्तक का प्रयोग क्यों नहीं किया ?	3 %
5/	प्रश्न अधिक मात्रा में पूछे जाने थे	3 %
6/	पाठ समय के भीतर पूर्ण नहीं हुआ	3 %
7/	किसी छात्र विशेष को नाम न पूछें कि उसने क्या पढ़ा	3 %
8/	जिस उपकरण को पढ़ा रहे थे जैसे - [illegible] की सब कुछ के भाग [illegible] स्पष्ट करें	3 %
9/	प्रविधि बहुत अच्छा है	3 %
10/	पाठ पढ़ाने के बाद चर्चा करनी तथा [illegible] चिन्तन की कमी	4 %
11/	छात्रों का नाम उच्चारण कर देना बहुत अच्छा है	6 %
12/	छात्रों द्वारा दिये गये उत्तर तथा प्रश्न पुनः न दोहराये	3 %
13/	पुनर्प्रस्तुतीकरण तथा गृह पाठ देने हेतु समय नहीं मिला। छात्रों के कार्यों की जाँच करें	3 %
14/	सूत्र बताने के बाद कोई उदाहरण करके बताइये	3 %
15/	[illegible] व्यक्तिगत [illegible] के ऊपर पूछो	3 %

(1)	(2)	(3)
16/	प्रश्न पूछने के बाद छात्रों से बोलने के लिये कहें	6 %
17/	रासायनिक सूत्र गलत न लिखें	3 %
18/	छात्र जब समस्या हल करते हैं तब शिक्षक उनका निरीक्षण करता है	3 %
19/	जो छात्र उत्तर नहीं उठाते, शिक्षक उन्हें भी पूछता है	6 %
20/	छात्रों द्वारा दिये गये उत्तरों से लाभ लिया गया	3 %
21/	श्यामपट्ट-लिखावट की पुनरावृत्ति न हो	6 %
22/	छात्र पाठ को समझ रहे हैं या नहीं यह जानने का प्रयास करें	3 %
23/	पाठ नियोजित समय में पूर्ण हुआ	6 %
24/	प्रदर्शन के उपरान्त छात्रों को स्वयं अनुमान लगाने दें	3 %
25/	छात्रों को उत्तर देने दें, स्वयं न दें	3 %
26/	जो छात्र उत्तर नहीं दे पाते उन्हें उत्तर की ओर थोड़ा और बतायें	3 %
27/	शिक्षक छात्र-केन्द्रित बना रहता है	3 %
28/	पाठ समय के भीतर पूर्ण हुआ	3 %
		100 %

वर्णन एवं विश्लेषण –

तालिका क्रमांक 35 के द्वारा यह ज्ञात होता है कि 35 निरीक्षकों ने

अन्य प्रकार की भी टिप्पणियाँ भी दी जिनका विश्लेषण शोधिका द्वारा किया है । इन टिप्पणियों में विभिन्न प्रकार की 28 टिप्पणियाँ समाविष्ट हैं । यह विभिन्न प्रकार की टिप्पणियाँ ऐसी हैं जो निरीक्षण पुस्तिका में लिखित अध्यापन कौशलों में समाविष्ट नहीं की जा सकीं । अतः उन्हें अन्य प्रकार की टिप्पणियों के वर्ग में रखा गया तथा विश्लेषण किया गया है । इन सभी टिप्पणियों में सभी समान महत्व रखती हैं ।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत तालिका से निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैं -

1/ निरीक्षणकर्ताओं ने कुछ टिप्पणियाँ ऐसी दीं जो निरीक्षण पुस्तिका में लिखित अध्यापन कौशलों में समाविष्ट नहीं की जा सकीं । इनमें कुछ महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ इस प्रकार हैं -

1/ छात्राध्यापक उत्साही, निडर एवं प्रतिभाशील है ।
2/ पाठ समय से पहले पूर्ण नहीं हो जाना ।
3/ पठन पद्धति का उपयोग करते अधिक प्रश्न पूछा करें ।
4/ पाठ अध्यापन के उपरान्त चर्चा की जाय ।
5/ छात्राध्यापन में पुनर्बलन देने हेतु समय रखना चाहिये।
6/ रासायनिक सूत्र गलत न लिखें तथा जो छात्र उत्तर नहीं उठाते ऐसे छात्रों से भी प्रश्न पूछें ।
7/ केवल निष्कर्ष को प्रोत्साहन न दें ।
8/ अनुमान छात्रों द्वारा निकलें ।
9/ शीर्षक सही लिखें ।

2/ उपरोक्त सुधार सम्बन्धी सुझावों पर ध्यान देना उचित होगा तभी छात्राध्यापक के कौशलों के उपयोग से छात्राध्यापक की प्रभावशीलता बढ़ेगी ।

तालिका - 36 -

ब। सुधार हेतु दी गई टिप्पणियों का विश्लेषण :-

क्रमांक	सुधार हेतु दी गई टिप्पणियां (30)	प्रतिशत
1/	प्रथम दिन की अपेक्षा अध्यापन अच्छा फिर भी सुधार आवश्यक	13 %
2/	पाठ नियोजन समय में पूर्ण करने की आदत डालिये	3 %
3/	कक्षा में पीछे की ओर बैठे छात्रों पर ध्यान दें	7 %
4/	श्री उपकरणों का स्पष्टीकरण छात्रों द्वारा भी प्राप्त करें	7 %
5/	चिंतन को प्रोत्साहन देने वाले प्रश्न पूछें तथा निर्देशन देने की अपेक्षा विषयवस्तु को अधिक स्पष्ट करें	13 %
6/	प्रश्न पूछने की तकनीक अच्छी होनी चाहिये	7 %
7/	गलत उत्तरों को स्वीकार न करते हुये उनमें का गलतियां समझाइये	3 %
8/	सामूहिक उत्तरों को टालिये	7 %
9/	प्रदर्शन पद्धति का अधिक मात्रा में प्रयोग करें	3 %
10/	निरीक्षण पुस्तिका में लिखित अध्यापन सम्बन्धी सभी पक्षों का उचित ढंग से पालन करें	3 %
11/	सही उत्तरों को छात्रों द्वारा दोहराइये	3 %
12/	निरीक्षकों द्वारा दी जाने वाली टिप्पणियों पर ध्यान दें	3 %

3/ कक्षा में आगे की पंक्ति में बैठे छात्रों पर ध्यान दें तथा प्रश्न पूछें

4/ छात्रों के चिंतन को बढ़ावा देने वाले प्रश्न पूछें

5/ प्रश्न पूछने के [illegible] तरीके सुधारें

6/ श्यामपट्ट लेखन शुद्ध, स्वच्छ, भावपूर्ण एवं आकर्षक हो ।

7/ सामूहिक उत्तरों को टालिये

निष्कर्ष :-

उपरोक्त अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैं -

1/ सभी टिप्पणियां केवल सुझाव सम्बन्धी दी गई

2/ कुछ महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुये हैं -

1/ निर्देशन देने की अपेक्षा विषय वस्तु को अधिक स्पष्ट करें
2/ छात्र चिंतन को बढ़ावा देने वाले प्रश्न पूछें
3/ श्यामपट्ट लेखन शुद्ध तथा स्वच्छ एवं भावपूर्ण हो
4/ सामूहिक उत्तरों को टालें
5/ प्रदर्शन पद्धति का उपयोग करें
6/ छात्रों को दण्ड न दें
7/ प्रश्नोत्तर पद्धति को अधिक करें तथा आकर्षक बनायें
8/ छात्रों को अधिक मात्रा में सहभागी करें तथा छात्रों द्वारा प्राप्त गलत उत्तरों को सुधारें इत्यादि ।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि निरीक्षकों ने निरीक्षण पुस्तिका में किस प्रकार टिप्पणियां दी हैं तथा पाठों का निरीक्षण किया है ।

अध्याय - 6 -

निष्कर्ष एवं सुझाव :-

अपने अनुसंधान हेतु चुने हुए, " इन्टर्नशिप में छात्राध्यापन के निरीक्षण का अध्ययन और उसकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन " इस समस्या का पूर्ण रूपेण अध्ययन इससे पूर्व लिखे गये पाँच अध्यायों में पूर्ण किया है । क्रमशः प्रथम अध्याय में समस्या कथन, पार्श्व भूमि तथा अध्ययन का महत्व, छात्राध्यापन सम्बन्धी निरीक्षण कार्य, निरीक्षण के सिद्धान्त, समस्या अध्ययन उद्देश्य, न्यादर्श, उपकरण, अध्ययन की पद्धति तथा औचित्य आदि पहलुओं पर प्रकाश डाला है । द्वितीय अध्याय में प्रस्तुत समस्या सम्बन्धी अध्ययन किये गये साहित्य का परिशीलन तथा तृतीय अध्याय में प्रस्तुत अध्ययन की प्रणाली, न्यादर्श, तथ्यों का एकत्रीकरण तथा एकत्रीकरण में प्राप्त कठिनाइयाँ एवं तथ्यों के व्यवस्थापन का विवेचन प्रस्तुत किया गया है । चतुर्थ अध्याय में निरीक्षकों एवं छात्राध्यापकों को दी गई प्रश्नावली का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है तथा पंचम अध्याय में निरीक्षण पुस्तिकाओं में निरीक्षकों द्वारा दी गई टिप्पणियों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है । प्रस्तुत अध्याय - छह में उपरोक्त समस्या के अध्ययन में प्राप्त सुझावों को प्रस्तुत किया गया है । इस प्रकार कुल 140 छात्राध्यापक, 11 निरीक्षक तथा 10 निरीक्षण पुस्तिकाओं से चुने हुए 100 पाठों पर लिखी टिप्पणियों के अध्ययन एवं विश्लेषण द्वारा यह अध्ययन पूर्ण किया जाता है ।

उपरोक्त अध्ययन द्वारा निम्न उपलब्धियाँ प्राप्त हुई है ।

उपलब्धियाँ :-

(1) निरीक्षण कार्य अधिकांशतः प्रशिक्षित एवं अत्याधिक अनुभवी निरीक्षकों द्वारा किया गया है । अतः उसमें विश्वसनीयता है ।

(2) 55% प्रतिशत निरीक्षकों के तथा अधिकांश छात्रों के विचार से छात्राध्यापक निरीक्षकों को निरीक्षण हेतु कक्षा में आते देखकर प्रसन्न तथा सामान्य रहे ।

(3) अध्यापन सम्बन्धी दोषों के सम्बन्ध में 55% प्रतिशत निरीक्षकों ने निरीक्षणोपरान्त छात्राध्यापकों से पूर्ण सहयोग चर्चा की ।

(4) 90% प्रतिशत निरीक्षकों के तथा 68% प्रतिशत छात्राध्यापकों के विचार से निरीक्षण द्वारा प्राप्त टिप्पणियों के द्वारा उनकी अध्यापन शैली में सुधार हुआ है ।

(5) 73% प्रतिशत निरीक्षकों के विचार से तथा 78% प्रतिशत छात्राध्यापकों के विचार से पाठ निरीक्षण में प्राप्त हुई टिप्पणियाँ पाकर छात्राध्यापक प्रसन्न हुए ।

(6) सभी निरीक्षकों ने अध्यापन सम्बन्धी गुण तथा दोष इन दोनों पक्षों पर टिप्पणियाँ दीं ।

(7) अधिकांश निरीक्षकों एवं छात्राध्यापकों के मतानुसार छात्राध्यापक को अध्यापन के समय छात्रों के समक्ष डाँटना अनुचित है ।

(8) 84% निरीक्षकों ने पूर्ण कालीन निरीक्षण किया ।

(9) अधिकांश निरीक्षक तथा छात्राध्यापकों के विचार से निरीक्षण विधि बहुत उपयोगी तथा महत्वपूर्ण है । 82% प्रतिशत

छात्राध्यापक इस बात से सहमत हैं ।

(10) अधिकांश निरीक्षक एवं छात्राध्यापकों के विचार से वेश-भूषा आदि के सम्बन्ध में टिप्पणियाँ नहीं दी गई ।

(11) अधिकांश निरीक्षकों ने अध्यापन कौशल सम्बन्धी अध्यापन विधि, एवं विषयवस्तु के प्रस्तुतीकरण पर टिप्पणियाँ दी ।

(14) तदुपरान्त उन्होंने प्रश्न पूछने का कौशल, तथा उसके बाद श्यामपट्ट कार्य, कक्षानुशासन, छात्रों के सहयोग तथा सहभाग एवं प्रदर्शन पद्धति आदि शैलियों पर टिप्पणियाँ दी ।

(12) मराठी, गुजराती तथा उर्दू इन भाषाओं के जानने वाले निरीक्षकों की संख्या बहुत कम है फिर भी उन विषयों में पाठों का निरीक्षण किया गया ।

(13) 100% प्रतिशत निरीक्षकों ने - विषयवस्तु (कन्टेन्ट) का संगठन, प्रस्तुतीकरण शैली, विषयवस्तु पर प्रभुत्व, परिकल्पनाओं का उचित ढंग से स्पष्टीकरण, अध्यापन सम्बन्धी दोषों का निवारण, दृश्य श्रव्य सामग्री का उपयोग, विषय-वस्तु का उचित चयन, छात्रों के मानसिक योग्यता एवं स्थिति का ध्यान तथा जीवन में घटित दृष्टान्तों का अध्यापन में प्रयोग, प्रश्न वितरण की तकनीक, प्रश्नों का सह सम्बन्ध, छात्रों की प्रशंसा एवं प्रोत्साहन, समयानुसार अध्यापन प्रणाली का चयन आदि पक्षों पर टिप्पणियाँ दी ।

उपरोक्त पक्षों के अतिरिक्त श्यामपट्ट कार्य कक्षानुशासन, उचित भाषा का प्रयोग, अभिप्रेरणा आदि पक्षों पर भी टिप्पणियाँ दी गई ।

(14) निरीक्षण विधि को अधिक प्रभावशाली बनाने हेतु निरीक्षकों ने निम्न बातों पर बल दिया है - पूर्वकालीन निरीक्षण, छात्रों की आत्मनिर्भरता, वेशभूषा, पाठ निरीक्षण के पश्चात चर्चा, शिक्षक-छात्र अन्तःक्रिया, अध्यापन प्रक्रिया के सम्बन्ध में निरीक्षकों का स्पष्ट मत इत्यादि ।

(15) निरीक्षण पुस्तिका के सम्बन्ध में निरीक्षकों ने कुछ सुझाव दिये ।

- निरीक्षण पुस्तिका में समाविष्ट अध्यापन कौशलों के साथ सृजनात्मकता का पक्ष भी लिया जाय ।
- भिन्न विषयक पाठ तथा कला पाठ के निरीक्षण के लिये अलग अलग निरीक्षण पुस्तिकाओं का प्रयोग ।
- निरीक्षण पुस्तिका आकार में बड़ी हो ताकि टिप्पणियां लिखने के लिये पर्याप्त स्थान रहे ।

(16) निरीक्षण कार्य को अधिक वस्तुनिष्ठ बनाने हेतु 80% प्रतिशत निरीक्षक निरीक्षण से पूर्व निम्न बातों पर चर्चा करना चाहते हैं - विद्यालयीन समस्यायें, छात्रों का मानसिक तनाव, योग्य वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली ।

(17) 86% प्रतिशत छात्राध्यापकों के विचार से निरीक्षण से प्राप्त टिप्पणियों का उद्देश्य अध्यापन सम्बन्धी सुधार हेतु सुझाव देना था न कि अन्य ।

(18) 93% प्रतिशत छात्राध्यापकों के विचारानुसार निरीक्षकों ने उन्हें कक्षा में छात्रों के समक्ष नहीं टोका ।

(19) 65% प्रतिशत छात्राध्यापकों के विचार से पाठ निरीक्षण का उद्देश्य अध्यापन में सुधार करने का था ।

(20) अधिकांश छात्राध्यापकों के विचार से टिप्पणियों के कारण अध्यापन शैली विकसित हुई तथा प्रश्न करने का कौशल, पाठ नियोजन, अनुशासन, श्यामपट्ट कार्य, समय नियोजन, आत्म विश्वास इत्यादि कौशलों में सुधार हुआ।

(21) 50% प्रतिशत छात्रों का निरीक्षण केवल महाविद्यालयीन निरीक्षकों द्वारा किया गया।

(22) 52% प्रतिशत छात्राध्यापकों के विचार से निरीक्षण में मिली टिप्पणियाँ अस्पष्ट तथा निरर्थक नहीं थीं किन्तु शेष छात्राध्यापकों के विचार भाग प्रतिकूल है।

(23) 73% प्रतिशत छात्राध्यापकों के विचार से टिप्पणियों द्वारा अध्यापन सम्बन्धी कठिनाइयों का काफी सीमा तक समाधान हुआ है।

(24) अधिकांश छात्राध्यापक टिप्पणियों को प्रतिदिन ध्यान से पढ़कर उनमें दर्शाये दोष दूर करने का प्रयास करते थे।

(25) प्रथम दिन जिन बिन्दुओं पर निरीक्षण में टिप्पणियाँ मिलीं, दूसरे दिन उन बिन्दुओं पर नहीं मिलीं।

(26) 80% प्रतिशत छात्राध्यापकों के विचार से निरीक्षण में मिली टिप्पणियाँ उन्हें एक कुशल अध्यापक बनाने में सहायक सिद्ध हुईं।

(27) 63% प्रतिशत छात्राध्यापकों के विचार से अध्यापन में उनके द्वारा होने वाली गलतियाँ क्रमशः कम होती गयीं तथा तत्सम्बन्धी टिप्पणियाँ भी क्रमशः कम मिलीं।

(28) निरीक्षणकर्ता प्रधान अध्यापक भी निरीक्षण हेतु अधिकृत किये नहीं जा सकते ।

(29) 77% प्रतिशत छात्राध्यापकों ने निरीक्षण पद्धति में सुधार के सम्बन्ध में निम्न बातों पर बल दिया है - पूर्वकालीन निरीक्षण, छात्राध्यापकों को प्रोत्साहन, अन्य भाषाओं में पाठ निरीक्षण, आलोचना के लिये आलोचना न हो, जिन भाषाओं में अध्यापन करें उनका ही उन भाषाओं का ज्ञान, डांटने की प्रथा का अन्त, अध्यापन के बीच में सुझाव देने की प्रथा का अन्त, धारणायें बदलने की प्रवृत्ति, प्रतिदिन निरीक्षण, निरीक्षकों द्वारा सद् व्यवहार, निरीक्षकों के मूल्यांकन आधार तथा निरीक्षण कार्य में रुचि ।

(30) बीच में न बोलें, कक्षा में दखल देकर न पढ़ायें, अनुचित व्यवहार भी न हो, पाठ योजना उठाकर जमीन पर न रखें, मेज को स्पर्श न करें, ... के आधार न हो आदि टिप्पणियाँ कुछ बातों की दृष्टि से अनुचित है ।

(31) 68% प्रतिशत छात्राध्यापकों ने निरीक्षकों के सम्बन्ध में कुछ अभिमत व्यक्त किये हैं -

- अधिकांश निरीक्षक मृदुभाषी तथा सही मार्गदर्शक थे । उन्होंने समस्या समाधान में सही मार्गदर्शन दिया ।
- कुछ निरीक्षकों का व्यवहार असभ्य, अनुचित तथा उनकी भाषा ... से परिपूर्ण था ।
- कुछ विषयक पाठों का निरीक्षण भूमिका विषय सम्बन्धी निरीक्षकों ने ही किया ।

- कुछ निरीक्षक केवल खानापूर्ति करके चले जाते थे ।
-

(32) 45% प्रतिशत छात्राध्यापकों ने निरीक्षकों के सम्बन्ध में कुछ विशेष बातें बतायी हैं वे निम्न हैं -

- उद्देश्यहीन निरीक्षण
- कुछ निरीक्षकों का कक्षा में बीच में आना, दरवाजे पर खड़े रहना (या) सूचना दिये बिना कक्षा में आकर बाधा उत्पन्न करना ।
- अधिकतर अंग्रेजी में लिखना तथा अंग्रेजी भाषा में ही टिप्पणियाँ देना

निरीक्षण पुस्तिका से प्राप्त उपलब्धियाँ -

(1) निरीक्षण पुस्तिका के द्वारा विदित होता है कि अध्यापन सम्बन्धी प्रायः सभी पहलुओं में निरीक्षण निम्न मात्रा में हुए हैं तथा जितने भी किये गये हैं, वह अपूर्ण हैं ।

(2) केवल 20% प्रतिशत निरीक्षकों ने पाठ नियोजन के पहलू पर टिप्पणियाँ दी तथा वे समाधानकारक एवं प्रोत्साहन देने वाली थीं ।

(3) केवल 37% प्रतिशत निरीक्षकों ने अध्यापन सम्बन्धी उद्देश्य पर टिप्पणियाँ दी तथा वे अधिकांश रूप में योग्य एवं समाधानकारक थीं ।

(4) 23% प्रतिशत निरीक्षकों ने विषयवस्तु विश्लेषण पर टिप्पणियाँ दी तथा वे योग्य थीं ।

(5) 20 निरीक्षकों ने प्रस्तावना विकास पर टिप्पणियां दीं तथा अधिकांश निरीक्षकों के विचार से वह समाधानकारक था ।

(6) 30 निरीक्षकों ने अभिप्रेरणा एवं तैयारी पर तथा 57 निरीक्षकों के विचार से छात्र अभिप्रेरित के कारण था सरल एवं रुचि पूर्ण प्रश्न पूछने की पद्धति तथा प्रयोग प्रदर्शन ।

(7) अध्यापन की पद्धति एवं कल्पना पर कुल 40 निरीक्षकों ने टिप्पणियां दीं तथा सब निरीक्षकों द्वारा व्याख्यान विधि, प्रदर्शन विधि, समस्या समाधान विधि नाटक विधि तथा चार्ट को महत्व से चर्चा करने की विधि आदि पद्धतियों का पता चला है कुछ निरीक्षकों ने भावपूर्ण वाचन, शुद्ध शब्दोच्चारण पर बल दिया है ।

(8) 40 निरीक्षकों ने प्रश्न पूछने के कौशल पर टिप्पणियां दीं तथा अधिकांश मात्रा में सुधार सुझाये जैसे - सम्पूर्ण कक्षा से प्रश्न पूछना, नकारात्मक प्रश्न को टालना, प्रश्नों की पुनरावृत्ति, अन्तिम पंक्ति में बैठे छात्रों से प्रश्न पूछना इत्यादि ।

(9) 26 निरीक्षकों ने पाठ के विकास पर टिप्पणियां दीं तथा पाठ विकास के लिये बोधात्मक प्रश्न पूछे जायें, पाठ प्रश्न विधि द्वारा पढ़ाया जाय यह सुझाव दिये ।

(10) छात्रों का सहभाग व अभिव्यक्ति इस पहलू पर 60 निरीक्षकों ने टिप्पणियां दीं तथा वे समाधान व्यक्त करने वाली थीं ।

(11) विषयवस्तु के कौशल पर 25 निरीक्षकों ने टिप्पणियां दीं तथा उनका स्वरूप अधिकांश रूप में प्रोत्साहन देना था कुछ

कुछ निरीक्षकों ने सारांश टिप्पणियां लिख देने के सम्बन्ध में असहमति प्रगट की है।

(12) 35 निरीक्षकों ने सहायक सामग्री के पक्ष पर टिप्पणियां दी तथा उनके द्वारा पता चला है कि स्लेट श्यामपट्ट, कम्पास पेटी, श्यामपट्ट चार्ट, चित्र तथा आकृतियां, चार्ट आदि का कम प्रभावी ढंग से प्रयोग हुआ। कुछ निरीक्षकों ने आकृतियाँ बड़ी होनी चाहिये तथा स्लेट श्यामपट्ट पाठ समाप्ति तक कक्षा में टंगा रहे इस बात पर बल दिया।

(13) श्यामपट्ट लेखन के पक्ष पर 55 निरीक्षकों ने अपनी टिप्पणियां दी तथा कुछ सुझाव दिये जैसे - रंगीन चाक का उपयोग, स्वच्छ एवं सरल तथा बड़े आकार, तिथि पाठ तथा विषय को श्यामपट्ट पर लिखें आदि।

(14) कुल 20 निरीक्षकों ने प्रयोग प्रदर्शन पद्धति पर अपनी टिप्पणियां दी तथा उनके विचार से उपरोक्त कौशल का प्रयोग उचित रूप में हुआ।

(15) कक्षा में सामाजिक वातावरण के पक्ष पर 40 निरीक्षकों ने टिप्पणियां दी तथा उचित वातावरण के सम्बन्ध में समाधान व्यक्त किया। उन्होंने छात्राध्यापक की क्रियाशीलता, सक्रियता, छात्रों में आत्मनिर्भरता तथा छात्र शिक्षक सम्बन्ध इन बातों का निरीक्षण किया।

(16) 45 निरीक्षकों ने कक्षा व्यवस्था के पक्ष पर टिप्पणियां देकर अपना समाधान व्यक्त किया तथा [illegible] नियंत्रण पर बल दिया।

(17) कार्यविधि के पहला सत्र पक्ष पर 10 निरीक्षकों ने केवल टिप्पणियां की तथा वे प्रभावकारी करने वाली थीं।

(18) प्रश्नोत्तर के अवसर, भाषा व वाचन विकास के पक्ष पर कुल 68 निरीक्षकों ने टिप्पणियां की तथा इस पक्ष पर रुचि पूर्ण ढंग से निरीक्षण किया है। उनके विचार से छात्राध्यापकों ने पाठ पठन विकास, उच्चारण, बुलंदी तथा बिना घबराहट के स्पष्ट वाचन तथा पठन विकास के द्वारा पढ़ाया है।

(19) सफलता तथा नीति के अनुसार एवं वैसा भूमिका का पक्ष पर केवल 7 तथा 4 निरीक्षकों ने ही केवल निरीक्षण किया वह निरीक्षण के मामा उनकी प्रगति एवं शिक्षिका सम्बन्धी उत्तरदायित्व के स्थान को प्रकट करती है। यह चिन्तित है।

(20) 15 निरीक्षकों ने अन्य प्रकार की टिप्पणियां की हैं -

- पाठ्यवस्तु विभाग की प्रस्तावना किया जाना
- छात्राध्यापकों को [illegible] के साथ व्यवस्था होना
- पाठ दिए [illegible] की प्रस्तावना न होना

सुझाव -

समस्या के अध्ययन से प्राप्त होने वाले उपरोक्त उपलब्धियों को जानने के उपरान्त उनकी समस्या अध्ययन के उद्देश्यों से सम्बन्धित करते हुए हम निम्न प्रकार के सुझाव दिया जायेंगे -

(1) निरीक्षण पद्धति को प्रभावशाली बनाने हेतु निरीक्षण में प्रचलित कमजोरियों को हटाने के प्रयत्न का वर्णन दो ।

(2) निरीक्षण पूर्व आयोजित हो

(3) विद्यार्थियों हिन्दी भाषा में तथा सामान्य बातचीत में सिखाकर उन्हें स्पष्ट करें ।

(4) मराठी, गुजराती, आदि भाषायें निरीक्षकों को सीखनी चाहिये । क्योंकि भाषा समस्या की यह सबसे बड़ी कठिनाई उपस्थित रहती है तथा निरीक्षकों को उपरोक्त भाषा के पाठ निरीक्षण करने होते हैं तब इन भाषाओं के । सीखने पर निरीक्षकों को ध्यान देना चाहिये । क्योंकि यह भाषायें सरल हैं तथा कुछ वर्षों के भीतर उन्हें सीखा जा सकता है ।

(5) कक्षा में घेटर घूमना, टहलते रहना, इत्यादि बातें अनुचित हैं अध्यापन में किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न हो जैसे - छात्रों को कक्षा से बाहर कार्य निर्देश करना इत्यादि इन बातों को टालना चाहिये ।

(6) अध्यापन की जाँच या अध्यापक की परीक्षा न ली जाय तथा सवाल न पूछे जायें ।

(7) छात्राध्यापकों के साथ निरीक्षकों ने नम्रता एवं मृदुता से पेश आकर उन्हें मार्गदर्शन करना चाहिये ।

(8) निरीक्षणोपरान्त अध्यापन सम्बन्धी गुण दोषों के विषय में छात्र अध्यापकों से चर्चा करनी चाहिये ।

(9) निरीक्षण पुस्तिका आकार में बड़ी हो तथा सुव्यवस्थितता से बनायें व उन्हें उपलब्ध करें ।

(10) निरीक्षण हेतु निरीक्षक कक्षा में पूर्व ही प्रवेश करें ।

(11) अध्यापन सम्बन्धी आवश्यक बातों के निर्देश दें ।

(12) कुछ दोषों पर टिप्पणियाँ दी जाएँ तथा उनकी उपेक्षा न करें ।

(13) निरीक्षक रुचि से निरीक्षण करें तथा निरीक्षण सम्बन्धी अपने उत्तरदायित्व को पूर्ण रूप से निभायें ।

(14) अध्यापन सम्बन्धी हर वस्तु पर टिप्पणियाँ दी जाएँ तथा प्रतिदिन निरीक्षण हो ।

(15) वार्षिक पाठ के निरीक्षण के समय विषयवस्तु तथा अध्यापन विधियाँ निरीक्षक दोनों उपलब्ध रखें ।

(16) छोटी छोटी बातों पर टिप्पणियाँ न दें जैसे - वेश भूषा आदि ।

(17) छात्रों के समक्ष छात्राध्यापक की गलती न बतायें ।

(18) अप्रशिक्षित निरीक्षकों से निरीक्षण न करायें तथा यदि उनसे निरीक्षण हेतु कराना हो तो उचित प्रशिक्षण दें ।

(19) व्यक्तिगत अपनी राय टिप्पणियों में न दें ।

(20) केवल खानापूर्ति करने की प्रथा वर्जित है ।

(21) निरीक्षण उद्देश्यहीन न हो ।

उपरोक्त सुझावों का पालन करने से छात्राध्यापक को उचित टिप्पणियाँ मिलकर उचित निर्देशन होगा । तथा उनका वास्तविक छात्राध्यापक के अध्यापन सम्बन्धी प्रभावशीलता बढ़ाने हेतु योग्य ।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत उपकल्पना एवं सुझावों से स्पष्ट है कि प्रस्तुत शोध कार्य में

निरीक्षकों ने निरीक्षण में रुचि ली है । किन्तु जिन निरीक्षकों ने निरीक्षण किया है तथा टिप्पणियां दी है उन्होंने मात्र रुचि लेकर निरीक्षण कार्य किया है । छात्राध्यापकों द्वारा प्रधानाध्यापकों ने भी अपने विचार स्पष्ट किए है तथा उनके विचार से निरीक्षण में किये टिप्पणियां उनके अध्यापन सम्बन्धी कमियों को निश्चित ही बढ़ाता है तथा एक अच्छा शिक्षक बनाने में सहायक होती है । अधिकांश छात्राध्यापक निरीक्षण पद्धति की प्रभावशीलता एवं उपयोगिता मानते है । उन्होंने निरीक्षण में किये टिप्पणियां प्रतिदिन पर ध्यान नहीं दे सके क्योंकि वे कहते हैं तथा अध्यापन उनकी पद्धति ठीक करने का प्रयास किया है । यह सब अपने दृष्टिकोण में छात्राध्यापन के निरीक्षण एवं टिप्पणियों द्वारा छात्राध्यापकों की पूर्णतया निश्चित रूप से बढ़ने की ओर इंगित करते है ।

अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि निरीक्षकों द्वारा दिये टिप्पणियों से अधिक छात्राध्यापकों के छात्राध्यापन सम्बन्धी प्रभावशीलता बढ़ी है ।

क्रमशः/ * * * () * * *

— आगे अध्ययन के लिये विषय —

1. A Critical study of student teaching supervision during practice teaching and its effectiveness.

2. A comparative study of student teaching supervisions during internship and practice teaching and its effectiveness.

D.K./

— परिशिष्ट — ग —

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 बुच, एम० बी० ; ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन बड़ौदा सेन्टर एडवान्स्ड स्टडी इन एजुकेशन, एम०एस० यूनिवर्सिटी, 1974

2 चौरसिया, जी० ; न्यू एरा इन टीचर एजुकेशन, प्रथम संस्करण 1967 पृष्ठ 69 से 79

3 [illegible], [illegible] एच० ; [illegible] इन दी [illegible], [illegible] पृष्ठ 52 से 74

4 मिश्रा, के० के० ; ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ इन्टर्नशिप इन टीचिंग [illegible] कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पी एच डी 1976

5 शुक्ला, [illegible] ; न्यू [illegible] ऑफ स्टूडेन्ट टीचिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, टीचर एजुकेशन न्यू देहली 6 जुलाई 1968

6 मुखर्जी, एस० एन० ; एजुकेशन ऑफ टीचर्स इन इण्डिया, [illegible] न्यू देहली 1968

7 एन०सी०ई०आर०टी० इन्टर्नशिप इन टीचिंग आर०सी०ई० भोपाल 1969

8 एन०सी०ई०आर०टी० — ए हैण्ड बुक आफ इन्टर्नशिप इन टीचिंग
आर०सी०ई० मैसूर

9 त्रिवेदी, आर० एस० : टीचिंग इन टीचर एजूकेशन, सरदार
पटेल यूनिवर्सिटी वल्लभ विद्या नगर
1967

10 त्रिवेदी, आर० एन० : जर्नल आफ एजूकेशन एण्ड साइकोलाजी
नं० 4 जनवरी 76

11 पॉल, एच० बी० : टीचर एजूकेशन
जनवरी 1979, नं० 2
इण्डियन एसोसिएशन आफ टीचर एजूकेशन

12

13

14

—— 0 ——